RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 29-30 जुलाई 2023
डाक प्रेषण तिथि : 29 जुलाई-01 अगस्त 2023
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 61 अंक : 08
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 76
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार

पाक्षिक

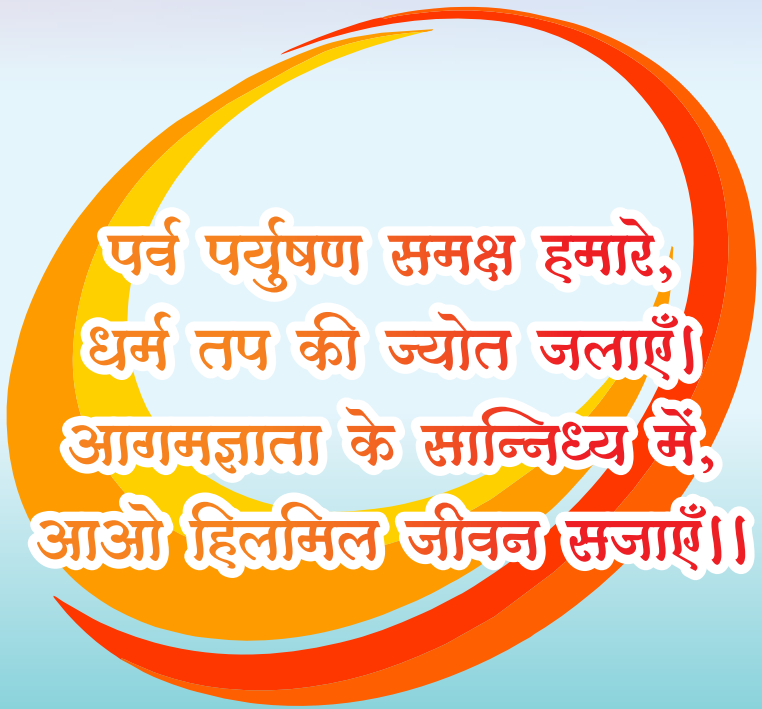

संघ शिखर सदस्य

श्री शान्तिलाल जी सांड
बेंगलुरु
MID No. : 189067

श्री विमल जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 127238

श्री रिद्धकरण जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 111161

श्री जयचन्दलाल जी डागा
बीकानेर
MID No. : 105289

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत
MID No. : 126222

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां
MID No. : 128972

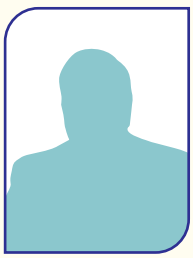

स्व. श्री मूलचन्द जी डागा
बीकानेर
MID No. : 187427

समता मनीषी
स्व. श्री उमरावमल जी बम्ब , टोंक
MID No. : 121469

स्व. श्री विजयचन्द जी डागा
बीकानेर
MID No. : 120472

श्री माणकचन्द जी नाहर
उदयपुर
MID No. : 107109

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127237

श्री दिनेश जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 111134

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां
MID No. : 128966

संघ महाप्रभावक सदस्य

श्रीमती कुसुमजी कोटड़िया
कोण्डागाँव
MID No. 135417

श्री रतनलालजी साँखला
अजमेर
MID No. 153597

श्रीमती प्रेमलताजी नंदावत
बेंगलुरु
MID No. 188833

श्रीमती सुन्दरदेवी सुराणा
बेंगलुरु/गंगाशहर
MID No. 116163

श्री पारसजी छाजेड़
धमधा
MID No. 140335

श्री पारसजी खेतपालिया
ब्यावर
MID No. 153432

स्व.श्री रिखबचंदजी सोनावत
भीनासर
MID No. 195591

श्री मनीष उत्तमजी कोठारी
बेंगलुरु
MID No. 129180

श्री मेघराजजी पुगलिया
कोलकाता
MID No. 103429

श्री सुरेशकुमारजी नांदेचा
खाचरोद
MID No. 105316

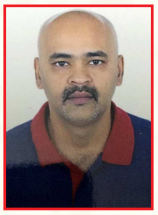

श्री राजेशजी कटारिया
बेंगलुरु
MID No. 129139

श्री पारसजी छल्लाणी
सोनाली
MID No. 194511

स्व. श्री ओमप्रकाशजी भूरा
देशनोक
MID No. 148228

श्री प्रसन्नजी सुराणा
रायपुर
MID No. 109641

श्री कान्तिलालजी कटारिया
रतलाम
MID No. 185412

श्रीमती आशादेवी कटारिया
रतलाम
MID No. 185424

श्रीमती रतनीदेवी लूणावत
दिल्ली
MID No. 194611

श्री मोतीलालजी मुणोत
जलगाँव
MID No. 106053

स्व.श्रीमती तारादेवी सुराणा
गंगाशहर
MID No. 116416

श्री राजमलजी चौरड़िया
जयपुर
MID No. 127158

श्री ललितकुमारजी लोढ़ा
मदुरान्तकम्
MID No. 172830

श्री निर्मलकुमारजी भूरा
करीमगंज
MID No. 147618

श्री राजकुमारजी बच्छावत
नेपाल
MID No. 195443

स्व. श्री केशरीमलजी देशलहरा
दुर्ग
MID No. 142535

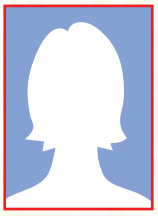

स्व. श्रीमती सुभद्रादेवी पगारिया
सूरत

श्री राजीवजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160544

श्री पुखराजजी मुकिम
जयपुर
MID No. 182624

श्री खूबचन्दजी पारख
राजनांदगाँव
MID No. 141590

श्री विनयजी अब्भाणी
चित्तौड़गढ़
MID No. 107376

श्री शांतिलालजी डागा
कोलकाता
MID No. 188697

श्री प्रकाशचंदजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160559

श्री उत्तमचंदजी रांका
जयपुर
MID No. 111353

श्री रावतमलजी संचेती
गंगाशहर
MID No. 123813

श्री सोहनलालजी पोखरना
चित्तौड़गढ़
MID No. 135732

चतुर्थ चरण

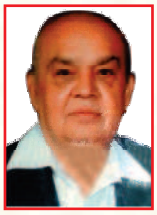

श्री प्रकाशजी कांकरिया
इन्दौर
MID No. 194512

स्व. श्रीमती सरोजदेवी
सुराणा–बेरला
MID No. 195647

श्री जयचंदलालजी मरोटी
देशनोक/कोलकाता
MID No. 114715

श्रीमती कमला उत्तमजी कोठारी
बेंगलुरु
MID No. 112429

श्री राजमलजी पंवार
कानवन
MID No. 113094

श्री बसंतलालजी कटारिया
रायपुर
MID No. 137280

श्री शांतिलालजी बच्छावत
सूरत
MID No. 194606

श्री विजयकुमारजी टंच
बदनावर
MID No. 113207

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण * श्री अनिल कुमार जी गोलछा- सिलचर * श्री प्रकाशचंद जी कोठारी- अमरावती * श्रीमती कमलादेवी संचेती-देशनोक/दिल्ली * श्री सुंदरलाल जी बोथरा-मुम्बई * श्री गोपालचंद जी खिंवसरा-बेंगलुरु * स्व. श्री बापूलाल जी कोठारी-उदयपुर * श्री दिलीप जी पगारिया-जावरा * श्री प्रेमचंद जी व्होरा- बदनावर

द्वितीय चरण * श्री तेजकुमार जी तातेड़-इंदौर * श्री पूनमचंद जी भूरा-भीलवाड़ा * श्री बसंतीलाल जी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ * श्री कमल जी बैद-मुम्बई * श्रीमती इन्द्राबाई धाड़ीवाल-रायपुर * श्रीमती सुनीता जी मेहता-बेलगाँव * श्री राजकुमार जी बाफना-हरदा * श्रीमती ज्ञानकँवर जी ओस्तवाल-ब्यावर * श्री विजय कुमार जी मुणोत-हैदराबाद * श्री चेतन कुमार जी हिंगड़-ब्यावर * श्री अभय कुमार जी भण्डारी-जावरा * श्री दिलीप जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री अखराज जी ओस्तवाल-भिलाई * श्री भीखमचंद जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री कँवरलाल जी देशलहरा-गुण्डरदेही * श्रीमती मनोरमादेवी बैद-रायपुर * श्रीमती सुन्दरबाई कोटड़िया-कोण्डागाँव

प्रथम चरण * स्व. श्रीमती सूरजादेवी बरड़िया-सिलचर * श्री मनोजकुमार जी संचेती-बेलगाँव * श्री उदयराज जी पारख-रायपुर * श्री झंवरलाल जी कुम्मट-सिलचर * श्री सोहनलाल जी रांका-ब्यावर * श्री मुन्नालाल जी पँवार-कानवन * श्री प्रकाशचंद जी श्रीश्रीमाल-हैदराबाद * श्री निर्मल जी खिंवसरा-ब्यावर * श्री निहालचंद जी कोठारी-ब्यावर * श्री भागचन्द जी सिंघी-जोधपुर * श्री विमलचंद जी सुराणा-गीदम

॥ जय महावीर ॥

राम चमकते भानु समाना

जैन संस्कार पाठ्यक्रम

Exam Date
01 Oct. 2023

परीक्षा

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा भाग 1 से 12 तक आयोजित होगी, जिसमें सकल जैन समाज के सभी वर्ग व आयु के परीक्षार्थी यह परीक्षा दे सकते हैं।

(भाग 1 से 4 भाग तक)
12 वर्ष से कम उम्र के बच्चों एवं 55 वर्ष से ऊपर जो लिखने में असमर्थ हो उनके लिए ओरल परीक्षा होगी।

कृपया अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक प्रभावना करावें।

अधिक जानकारी के लिए इस मोबाइल नंबर पर सम्पर्क कर सकते है :-
7231933008

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

जीव दया रखने से मन में, मिट जाए भव पीर...
सबको समझे निज समान, कह गए प्रभु वीर...

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

द्वारा सामाजिक कार्य की शृंखला में प्रस्तुत है

जीवदयाणं

(जुलाई-अगस्त-सितम्बर)

सव्वे जीवा वि इच्छंति जीविउं न मरिजिउं

- मांसाहारी व्यक्ति को प्रेरणा देकर मांस भक्षण छुड़वाना ।
- कम से कम एक दिन के लिए कत्लखाने बंद करवाना।
- गौशाला में गाय आदि को रोटी, चारा, गुड़ आदि खिलाना ।
- मच्छरदानी का वितरण करना । मच्छर मारने में उपयोग होने वाले उपकरणों को रोकना।

क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा परत्वं

- पक्षियों को पानी दाना देना ।
- वृद्धाश्रम/अनाथालय/अंध महाविद्यालय/मूक बधिर संस्था आदि में सेवा देना।
- शारीरिक श्रम करते हुए रिक्शाचालक/कुली/कड़ी धूप में मेहनत करते हुए मजदूर आदि को साता पहुँचाना।

आप सभी से निवेदन है कि अपने अपने क्षेत्रों की रिपोर्ट बनाकर अवश्य भेजें।

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)

समता छात्रवृत्ति योजना

(कक्षा 1 से 12 तक)

– साधुमार्गी परिवार के विद्यार्थियों के लिए –

कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थी छात्रवृत्ति के लिए आवेदन कर सकते हैं।
छात्रवृत्ति आवेदन के लिए गत कक्षा में विद्यार्थी ने कम से कम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हो।
छात्रवृत्ति की राशि विद्यार्थी के स्कूल के खाते में प्रदान की जाएगी।

पूर्ण विवरण, पात्रता, आवेदन प्रपत्र इत्यादि महिला समिति एवं श्री संघ की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

वेबसाइट–

www.sadhumargi.com/application-form/
www.sabsjmsorg/downloads/

2023-24 में छात्रवृत्ति का नया फॉर्म बनाया गया है केवल वही फॉर्म मान्य रहेगा। फॉर्म महिला समिति की वेबसाइट पर अपलोडेड है।

सम्पर्क सूत्र : 7231033008

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

(महत्तम महोत्सव – मेरा महोत्सव)

भावों का शुद्धिकरण
आओ करें नित्य प्रतिक्रमण

1 प्रथम चरण
इच्छामि खमासमणो तक
पूर्ण

2 द्वितीय चरण
भाव वंदना तक
पूर्ण

3 तृतीय चरण
संपूर्ण प्रतिक्रमण
1 जुलाई से 15 अगस्त

प्रतिक्रमण

प्रतिक्रमण का तीसरा चरण शुरू हो गया है, आप सभी से अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में प्रभावना करें।

हेल्पलाइन नंबर - 9752289969, 8149465041

॥ जय महावीर ॥

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

वुमन्स मोटिवेशनल फोरम

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति)

प्रस्तुत करता है

(भ्रूणहत्या त्याग)

संकल्प-पत्र

मैं .....शासनपति भगवान महावीर स्वामी के उपदेश **'जीओ और जीने दो'** को आत्मसात करते हुए आत्मसाक्षी से संकल्प लेती/लेता हूँ कि मैं आजीवन भ्रूणहत्या नहीं करूँगी/करूँगा, न करवाऊँगी/ करवाऊँगा और करते हुए की अनुमोदना भी नहीं करूँगी/करूँगा।

मोबाईल नंबर : ..... जन्म दिनांक : ...../...../.....

शहर : ..... अंचल का नाम : .....

Google Form

तो देर किस बात कि आज ही संकल्प भरें एवं 7231033008 पर व्हाट्सएप द्वारा भेजें।

सकल जैन समाज के श्रावक-श्राविका इस संकल्प-पत्र को भर सकते हैं।

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

राम चमकते भानु समाना

पंजीयन संख्या : आर. एन. 7387/63

श्रमणोपासक

समाचार पाक्षिक

Visit us : www.sadhumargi.com

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

अध्यक्ष एवं प्रधान सम्पादक

गौतम चन्द जैन, मुम्बई

सह-सम्पादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

प्रधान कार्यालय/ईमेल आईडी

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर–334401
(राज.) फोन : 0151–2270261
helpdesk@sadhumargi.com

श्रमणोपासक सदस्यता

(केवल भारत में)
₹1,000/-
(15 वर्ष के लिए)

(विदेश हेतु)
₹15,000/-
(10 वर्ष के लिए)

वाचनालय वार्षिक

(केवल भारत में)	₹50/-
प्रस्तुत अंक मूल्य	₹10/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष (केवल भारत में)	₹3,000/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	₹500/-
आजीवन सदस्यता	₹5,000/-

बैंक खाता विवरण

Scan & Pay

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

Bank	: State Bank of India
A/c No	: 31264126681
IFSC Code	: SBIN0003401
Branch	: G.S. Road, Bikaner
email	: accounts@sadhumargi.com
Mob. No.	: 7073311108

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	8955682153	news@sadhumargi.com
साहित्य	8209090748	sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	7231033008	ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	7073238777	yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	7976519363	examboard@sadhumargi.com
परिवारांजलि	7231033008	anjali@sadhumargi.com
विहार	8505053113	vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	9982990507	Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	7231833008	udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	6265311663	globalcard@sadhumargi.com

सूचना– किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय– प्रातः 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच– दोपहर 1:00 से 1:45 बजे तक

:: अनुक्रमणिका ::

रुक्मिणी विवाह	:	09
श्रमणोपासक हैडलाइन्स	:	12
साधना महोत्सव-2023	:	13
गोचरी : एक दुर्लभ अवसर	:	28
विविध समाचार	:	32
ज्ञान गंग निर्मल मन बहती	:	37
संघ हमारा अविचल मंगल	:	43
महत्तम महोत्सव	:	51
विविध भेंट मार्फत	:	54
विनम्र श्रद्धांजलि	:	61
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति	:	63
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ	:	65

स्वाध्याय

सुविचार

अध्ययन अपना हो, उतारना अपने में।
सुन्दर स्वाध्याय यही, जग में कहाया है।।
वाचना और पृच्छना, अनुप्रेक्षा धर्मकथा।
मध्य में परावर्तना, आगम में गाया है।।
दुःख से दिलाए मुक्ति, स्वाध्याय सिद्धि की युक्ति।
नन्दन निकुंज जैसा, इसको बताया है।।
वीर कहे गौतम से, स्वाध्याय परम तप।
मन के तुरंगम का, अंकुश बताया है।।

साभार- वीर कहे गौतम से

चिन्तन

न शिकायत, न सफाई

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

हमारी प्रवृत्ति न शिकायत की हो और न ही सफाई की। समुदाय को यदि परिवार मानते हैं तो उसमें सामान्य ऊँची-नीची बातें होती रहती हैं। व्यक्ति का लक्ष्य न भी हो तब भी कुछ अनुचित घट सकता है, उसके लिए बवाल नहीं मचाया जाना चाहिए। यदि किसी ने उद्देश्यपूर्ण तरीके से भी तुम्हारा अपकार किया हो तब भी तुम्हें उससे शिकायत नहीं होनी चाहिए। शिकायत ओछी वृत्ति की प्रतीक है। किसी की सामान्य-सी चूक को यदि तिल का ताड़ बनाकर उसे दबोचने की नीयत हो तो उस प्रकार के आतंक से किसी का मुँह तो बन्द किया जा सकता है, पर दिल नहीं जीता जा सकता। दूसरी दृष्टि से विचार करें तो किसी के कृत्य की आलोचना करना, उसे बढ़ावा देना उस व्यक्ति को अति महत्त्व देता है। ऐसे प्रसंगों पर मौन ज्यादा लाभदायी होता है। मौन से सामने वाले को सोचने के लिए मजबूर होना पड़ता है। यदि किसी ने अनुचित कार्य किया हो, वैसा ही यदि सामने वाला भी करे तो दोनों में अंतर ही क्या रह जाएगा? उस स्थिति में क्या सज्जन और दुर्जन का भेद रह पाएगा? कदापि नहीं। कोई उत्पात करे तो उसे क्षमा का पात्र समझना चाहिए। कहा जा सकता है ऐसे में तो उसकी उच्छृंखलता बढ़ गई, इससे तुम्हारा क्या बिगड़ जाएगा? तुम यदि सहिष्णु बने रहे तो तुम्हें लाभ अवश्य होगा।

जैसे शिकायत का लक्ष्य नहीं होना चाहिए वैसे ही सफाई देने का लक्ष्य भी नहीं होना चाहिए। सफाई देने का अर्थ लीपापोती से है। लीलापोती से अपना बचाव हो सकता है, पर जो तत्त्व भीतर में रह जाएँगे, वे हानि करेंगे, यह सुनिश्चित है। यदि हमें उस हानि से स्वयं को बचाना है तो **'कडं कडेति य नो कडे न कडेति य'** के रूप में स्पष्ट होना चाहिए। ऐसी स्पष्टता मनोबल वर्धक होती है। उससे मनोबल सशक्त होता है। सुदृढ़ व्यक्ति ही चोट सह सकता है। अल्पसत्वी चोट को कहाँ सह पाएगा? वह तो उसका प्रतिकार करने में उद्यत हो जाएगा। तुम शक्ति को संवर्द्धित करो। एक चोट नहीं, चोट पर चोट होती रहे, तब भी तुम्हें वे चोटें हिला नहीं सकें। ऐसा तभी संभव होगा जब न शिकायत की नीयत होगी और न ही सफाई की।

फाल्गुन कृष्ण 12, रविवार, दिनांक : 06.03.2016

साभार- आरोह

रुक्मिणी विवाह

शिशुपाल संग सगाई

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा.

आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा. के प्रवचन 'श्री जवाहर किरणावली' के रूप में संकलित हैं। श्री जवाहर किरणावली-5 (रुक्मिणी-विवाह) में रुक्मिणी के विवाह प्रसंग से लेकर उनके अणगार धर्म को अंगीकार कर समस्त कर्मों को क्षय करके सिद्ध अवस्था को प्राप्त करने तक का बड़ा ही सरल व सुन्दर वर्णन संकलित है। यह वर्णन आपके समक्ष धारावाहिक के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

29-30 जून 2023 अंक से आगे.....

क्रोधमूलो मनस्तापः क्रोधः संसारसाधनम्।
धर्मक्षयकरः क्रोधस्तस्मात् परिवर्जयेत्।।

क्रोध ही मन की पीड़ा का मूल है। क्रोध ही संसार-सागर में भ्रमण कराने वाला है। क्रोध से ही धर्म का नाश होता है। अतएव क्रोध का सर्वथा त्याग करना चाहिए।

क्रोधी और उद्दण्ड मनुष्य जब किसी पक्ष को पकड़ लेता है, तब न तो वह उसे छोड़ना ही चाहता है और न उसके परिणाम पर ही विचार करता है। वह हठ में पड़ जाता है। उसे तो अपनी बात पूरी करने की धुन रहती है, फिर उस बात में सत्य का अंश हो या न हो। ऐसे लोग एक पक्ष को पकड़कर सत्य, न्याय और अपने श्रद्धेय जनों की भी अवहेलना कर डालते हैं।

रुक्म भी अपनी बहिन के विवाह के विषय में एक पक्ष को पकड़ बैठा। उसका पक्ष कृष्ण के साथ रुक्मिणी का विवाह न करके शिशुपाल के साथ करने में है। इस पक्ष में पड़कर उसने अपने पिता भीम की उचित बातों पर विचार भी नहीं किया, बल्कि एक प्रकार से उसने भीम का अपमान किया। यह करके भी उसे पश्चात्ताप नहीं है, किन्तु गर्व है और अपने आपको विजयी मान रहा है।

बुद्धिमान और अनुभवी भीम अपनी बात के लिए गृहक्लेश होने देना अनुचित समझकर सत्य और न्याय के भरोसे पर रुक्मिणी के विवाह की ओर से तटस्थ हो गए। भीम के तटस्थ हो जाने से रुक्म को प्रसन्नता हुई। वह विचारने लगा कि अब तक पिताजी अपनी इच्छानुसार कार्य करते रहे हैं, लेकिन अब हमारी इच्छानुसार कार्य होगा। पिताजी पुराने विचार के आदमी हैं। इस नये युग में पुराने विचारों से काम उपयुक्त नहीं हो सकते।

रुक्म ने अपनी माता से कहा कि पिताजी रुक्मिणी के विवाह की ओर से तटस्थ हो गए हैं। वे उदासीनता धारण किए बैठे रहेंगे, यह सम्भव नहीं। मेरा अनुमान है कि वे बैठे-बैठे ऐसी कोई न कोई कार्यवाही अवश्य करेंगे जो हमारे कार्य में बाधक हो। इसलिए अपने को बहुत सावधानी से काम करने की आवश्यकता है, जिससे किसी प्रकार की बदनामी भी न हो और पिताजी को यह कहने का मौका भी न मिले कि मेरे कथन के विरुद्ध काम करने से यह दुष्परिणाम निकला। बहिन रुक्मिणी के विवाह का भार पिताजी ने मुझ पर डाल दिया है। मेरी समझ में अब रुक्मिणी का विवाह शीघ्र ही कर देना चाहिए, जिससे फिर किसी विघ्न का भय ही न रहे।

रुक्म की माता ने रुक्म की इस बात का समर्थन किया। माता की सहमति पाकर रुक्म ने ज्योतिषी को बुलाने की आज्ञा दी। ज्योतिषी के आ जाने पर रुक्म ने उससे कहा

कि बहिन रुक्मिणी का विवाह चन्देरी नरेश शिशुपाल से करने का विचार है, इसलिए लग्न तिथि शोध निकालो।

ग्रह, नक्षत्र, कुण्डली आदि देखकर ज्योतिषी रुक्म से कहने लगा कि राजकुमारी के विवाह के लिए तिथि माघ कृष्ण अष्टमी श्रेष्ठ है। कुण्डली अनुसार इस तिथि को राजकुमारी का विवाह अवश्य होगा, लेकिन शिशुपाल के साथ विवाह नहीं जुड़ता है। इसलिए राजकुमारी का विवाह शिशुपाल के साथ ही होगा, यह मैं नहीं कह सकता। शिशुपाल के साथ राजकुमारी का विवाह होने में बहुत संदेह है। मुझे तो इसमें बड़े-बड़े विघ्न दिखाई दे रहे हैं। इस पर भी आप शिशुपाल के ही साथ राजकुमारी रुक्मिणी का विवाह करना चाहते हैं तो विघ्नों से सावधान रहियेगा। ज्योतिषी की बात सुनकर रुक्म ने सोचा कि संभवत: इसे पिताजी और मेरे मतभेद की बात मालूम हो गई है। इसी से यह पिताजी की बात पुष्ट करने के लिए मुझे विघ्नों का भय बता रहा है। उसने ज्योतिषी से कहा कि विघ्न की चिंता अनावश्यक है। विघ्नों को नष्ट करने की हममें पर्याप्त शक्ति है, परंतु उस तिथि को रुक्मिणी का विवाह योग्य तो बनता है न? ज्योतिषी ने कहा- हाँ, बहुत श्रेष्ठ लग्न है और उस दिन रुक्मिणी का विवाह भी अवश्य ही होगा।

रुक्म- बस, ठीक है। अब आप जाइए। आपका काम हो गया। विघ्नों से तो हम निपट लेंगे।

ज्योतिषी को विदा करके रुक्म ने अपने मंत्री को बुलाकर उससे कहा कि बहिन रुक्मिणी के विवाह का टीका चन्देरीराज शिशुपाल के यहाँ भेजना है। तुम किसी ऐसे चतुर व्यक्ति की खोज करो जो टीका ले जाए और स्वीकार करा आए।

मंत्री- विवाह का टीका तो भाट ही ले जाया करते हैं। टीका ले जाना उन्हीं का काम है। अपने राजघराने के टीके ले जाने का कार्य सरसत भाट किया करता है। भाट चतुर भी होते हैं। उनकी बातों में ऐसी चतुराई हुआ करती है कि वे कायरों में भी वीरता भर देते हैं और उन्हें भी युद्ध के लिए उत्तेजित कर देते हैं। सरसत भाट भी बहुत चतुर हैं। मुझे विश्वास है कि वह चन्देरीराज को टीका स्वीकार करा आएगा।

रुक्म- हाँ, तुमने ठीक कहा। सरसत वास्तव में वाक्चतुर है। उसी के द्वारा भेजना ठीक है। तुम सरसत को बुलवाओ और उसे कहला दो कि वह चन्देरी जाने के लिए तैयार होकर आए।

रुक्म की आज्ञा से मंत्री ने सरसत भाट को सूचित किया। रुक्म के स्वभाव से सरसत भाट परिचित ही था और रुक्मिणी के विवाह के विषय में भीम और रुक्म के मतभेद को भी वह सुन चुका था। मंत्री की सूचना अनुसार सरसत भाट रुक्म के सम्मुख उपस्थित हुआ। उसने रुक्म को आशीर्वाद दिया। **रुक्म** ने कहा- सरसत! तुम्हें बहिन रुक्मिणी के विवाह का टीका लेकर चन्देरी जाना होगा। तुम चन्देरी जाने के लिए मेरी सूचनानुसार तैयार होकर ही आए हो ना?

सरसत- हाँ, महाराज! मुझे सूचना मिल चुकी थी और मैं तैयार होकर ही आया हूँ।

रुक्म- देखो, तुम्हारे चन्देरी जाने की खबर पिताजी को न होने पाए। पिताजी रुक्मिणी का विवाह उस ग्वाले के साथ करना चाहते थे। वे चन्देरीराज शिशुपाल के साथ रुक्मिणी का विवाह करने हेतु सहमत नहीं हैं। यह तो मेरा ही सामर्थ्य है कि रुक्मिणी उस नीच ग्वाले की पत्नी बनने से बच सकी है, अन्यथा पिताजी ने तो उसके साथ रुक्मिणी के विवाह का एक प्रकार से निश्चय सा कर लिया था। यद्यपि अब पिताजी वैसे तो रुक्मिणी के विवाह से तटस्थ हो गए, परन्तु मेरा अनुमान है कि वे गुप्त रूप से कुछ न कुछ अवश्य करेंगे। इधर ज्योतिषी ने भी कहा है कि रुक्मिणी के विवाह में विघ्न होगा और शिशुपाल के साथ रुक्मिणी का विवाह होने में भी संदेह है। यद्यपि हम क्षत्रिय हैं, विघ्न से भय नहीं खाते हैं। विघ्न की सूचना मिलना ही हमारी विजय का शुभ चिह्न है; फिर भी विघ्न की ओर से सावधान रहना उचित है। इसलिए तुम चन्देरीराज शिशुपाल को मेरी कही हुई इन बातों से सूचित कर देना और कह देना कि विवाह के

समय विघ्नों की संभावना है। बहुत संभावना है कि पिताजी के संदेश पर या स्वयं ही नीच कृष्ण यहाँ आकर उत्पात करे। उसका कुछ विश्वास नहीं है। इस प्रकार नीचता उसके लिए बहुत साधारण बात है। अत: चन्देरीराज साधारण बारात लेकर ही न चले आवें, किन्तु इस प्रकार की तैयारी से आवें कि आवश्यकता होने पर युद्ध भी किया जा सके। यदि कपटी कृष्ण यहाँ आया तो हमारे द्वारा उसका वंश ही नाश होगा। चन्देरीराज की और मेरी सम्मिलित शक्ति के सामने उसका जीवित बचा रहना सर्वथा असम्भव है। एक तरह से उसका यहाँ आना अच्छा भी है। चन्देरीराज उस दुष्ट ग्वाले पर रुष्ट है। यदि वह ग्वाला यहाँ आया और यहाँ मारा गया तो हम और चन्देरीराज मगधराज के यशपात्र माने जाएँगे। जो भी हो, महाराज शिशुपाल सावधानी से आवें और विवाह-तिथि से कुछ समय पहले आवें, जिससे प्रत्येक विषय पर विचार-विनिमय किया जा सके। टीके के संबंध में तो तुम्हें कुछ समझाने की आवश्यकता ही नहीं है। तुम स्वयं चतुर हो। अत: महाराज शिशुपाल को टीका चढ़ाकर ही आना; टीका वापस न लौटने पावे। ज्योतिषी ने लग्न के लिए तिथि माघ कृष्ण अष्टमी शुभ बताई है। इसे ध्यान में रखना और इस तिथि को विवाह हो जाए, ऐसा उपाय करना। मैं टीके के साथ जाने वाला पत्र लिखवाकर टीका सामग्री के साथ तुम्हें दिये देता हूँ और तुम्हारी सहायता के लिए कुछ योद्धा भी तुम्हारे साथ किए देता हूँ।

रुक्म ने अपनी ओर से शिशुपाल के नाम पत्र लिखवाया, जिसमें उसने रुक्मिणी के साथ विवाह करने का आग्रह किया था। रुक्म ने अपना पत्र शिशुपाल के लिए भेंट सामग्री और टीका तैयार करके सरसत भाट को सौंप दिए और एक बढ़िया रथ में सरसत को बैठाकर उसे कुछ योद्धाओं के साथ चन्देरी के लिए विदा किया।

किसी कार्य के औचित्य को प्रकृति स्पष्ट बता देती है। वह अपने किसी संकेत द्वारा कह देती है कि यह कार्य उचित है और यह अनुचित। यह बात दूसरी है कि प्रकृति के संकेत की अवहेलना करके अनुचित कार्य भी किया जावे, लेकिन इसमें कार्य करने वाले का ही दोष है, प्रकृति का दोष नहीं है। प्रकृति संकेत द्वारा कार्य के हिताहित की ओर निर्देश करके अपना कर्त्तव्य पूरा कर देती है। फिर जो उसकी सम्मति नहीं मानता, उसे कार्य का परिणाम तो भोगना ही पड़ता है। प्रकृति जिन संकेतों द्वारा कार्य के औचित्य-अनौचित्य का निर्देश करती है, उसमें से कार्य को उचित बताकर उसका समर्थन करने वाले संकेत शुभ शकुन कहे जाते हैं और कार्य को अनुचित बताकर उसका निषेध करने वाले संकेत अपशकुन कहे जाते हैं। आस्तिकों में अधिकांश लोग ऐसे निकलेंगे जो प्रकृति के इन संकेतों के फलाफल विचार को भली प्रकार जानते हैं और उन पर विश्वास भी करते हैं।

सरसत भाट चन्देरी के लिए चला। वह नगर से बाहर भी नहीं हुआ था कि उसे राह में एक कुरूप कन्या सिसक-सिसक कर रोती हुई मिली। इस अपशकुन को देखते ही सरसत सहम उठा। वह अपने मन में कहने लगा कि प्रकृति इस कार्य से सहमत नहीं है; अपितु वह विरोध कर रही है। सरसत इस प्रकार विचार ही रहा था कि एक विधवा स्त्री अपने सिर पर औंधा रीता घड़ा लिए सामने मिली। इस दूसरे अपशकुन को देखकर सरसत ने विचार किया कि इस कार्य की विपरीतता और असफलता की सूचना प्रकृति स्पष्ट दे रही है। वास्तव में जिस कार्य से वृद्ध तथा अनुभवी लोग असहमत हैं, जो कार्य उनकी सम्मति के विरुद्ध किया जा रहा है, उसमें विघ्न और असफलता स्वाभाविक है। इन अपशकुनों से तो चन्देरी के लिए आगे बढ़ना ही न चाहिए था, परन्तु वापस लौटकर भी किसके सामने जाऊँ? दुष्ट रुक्म ने जब अपने बाप की भी बात नहीं मानी, तब वह मूक अपशकुनों को कब मानेगा? लौट जाने पर रुक्म का कोप-भाजन बनना होगा; इसलिए चन्देरी जाने में ही अपनी कुशल है।

साभार- श्री जवाहर किरणावली-5 (रुक्मिणी-विवाह)

-क्रमश: श्रमणोपासक

श्रमणोपासक हैडलाइन्स

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के सान्निध्य में नीमच बना तीर्थधाम। चतुर्विध संघ के ठाठ में समवशरण का दृश्य उपस्थित।
- आचार्य भगवन् के तेला तप, उपाध्याय प्रवर के अठाई की तपस्या सहित अनेक चारित्रात्माएँ मासखमण तप की ओर अग्रसर।
- 'लोच में क्या सोच' के अन्तर्गत अब तक 70 से अधिक लोच सम्पन्न।
- श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के सत्र 2023-25 के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर परम गुरुभक्त वीर पिता श्री नरेन्द्र जी गांधी, जावद मनोनीत।
- श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती पुष्पा जी मेहता, चित्तौड़गढ़ का सत्र 2023-25 के लिए पुनः मनोनयन।
- 'राम गुरु का है सन्देश, व्यसनमुक्त हो सारा देश' कार्यक्रम के अन्तर्गत स्कूलों में व्यसनमुक्ति अभियान जारी। अनेक जनों ने लिए व्यसनमुक्ति के संकल्प।
- आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के तप की अनुमोदना में 100 से अधिक लोगों ने तेला एवं अठाई आदि तप करने का लिया संकल्प।
- तीन दिवसीय स्वाध्यायी अभ्यास एवं नियुक्ति शिविर में चारित्रात्माओं का मार्गदर्शन मिला। नीमच संघ द्वारा सभी स्वाध्यायी पुरस्कृत हुए।
- सांसद श्री सुधीर जी गुप्ता, विधायक श्री दिलीप सिंह जी परिहार, बीजेपी के वरिष्ठ नेता श्री महेन्द्र जी भटनागर, नगरपालिका के पूर्व अध्यक्ष श्री राकेश जी जैन, श्री जिनेन्द्र जी मेहता, श्री आदित्य जी मालू, सांसद प्रतिनिधि श्री राकेश जी भारद्वाज, अमेरिका श्री अजीत जी जैन, पूर्व विधायक श्री सम्पत स्वरूप जी जाजू एवं दशपुर एक्सप्रेस के संपादक श्री आर.वी. गोयल ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर दर्शन लाभ देते हुए विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया।
- नीमच सहित देशभर में चारित्रात्माओं के सान्निध्य में तप-त्याग के ठाठ। अनेक स्थानों पर कीर्तिमान स्थापित।
- केन्द्रीय पदाधिकारियों का पूर्वोत्तर अंचल प्रवास एवं गुवाहाटी में क्षेत्रीय सम्मेलन सम्पन्न। क्षेत्रीय सम्मेलन में असम के महामहिम राज्यपाल श्री गुलाबचंद जी कटारिया की गरिमामय उपस्थिति से संघ में नवीन ऊर्जा का संचार।

श्रमणोपासक

तप-संयम की जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार।

चातुर्मास-2023 आरम्भ

आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर सहित अनेक चारित्रात्माओं की तपस्याएँ गतिमान, चातुर्मास में समवशरण जैसी छटा

ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग से नीमच की धरा हुई पावन

दुनिया को नहीं, अपने आपको बदलें
-आचार्य श्री रामेश

गुरु ऊर्जा के भंडार हैं
-उपाध्याय प्रवर

जैन स्थानक एवं राठौर परिसर, नीमच।

नीमच चातुर्मास की है अनोखी छटाएँ।
तप-त्याग की छाई है आध्यात्मिक घटाएँ।।

पंचम आरे में चौथे आरे की बानगी दिखाने वाले युगनिर्माता, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक, ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम, नानेश पट्टधर, आराध्यदेव परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. **आदि ठाणा-8** एवं शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. (महाराष्ट्र वाले), साध्वी श्री कुसुमकांता श्री जी म.सा. (जावरा वाले), साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. **आदि ठाणा-45** के साधना महोत्सव चातुर्मास का ज्ञान, दर्शन, चारित्र की अपूर्व आराधना के साथ आगाज हो चुका है। उभय गुरु-भगवंतों की निर्मल संयम साधना से जन-जन प्रभावित हो रहा है। देश-विदेश से दर्शनार्थियों का जनसैलाब उमड़ रहा है। चारित्रात्माओं सहित श्रावक-श्राविकाओं में त्याग-प्रत्याख्यान की होड़ लगी हुई है।

आचार्य भगवन् के तेला तप, उपाध्याय प्रवर के अठाई तप, श्री गगन मुनि जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. मासखमण तप की ओर अग्रसर हैं। साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. के 7 उपवास चौविहार एवं साध्वी श्री जयंकरा श्री जी म.सा. के 6 उपवास के पारणे सानंद सम्पन्न हुए। साध्वी श्री जयति श्री जी म.सा. 17 एवं साध्वी श्री चंदना श्री जी म.सा. 14 की तपस्या के साथ आगे मासखमण तप की ओर अग्रसर

हैं। कई चारित्रात्माओं एवं श्रावक-श्राविकाओं के दीर्घ तपस्याएँ गतिमान हैं। तेले की लड़ी, उपवास, आयंबिल, एकासन की लड़ी निरंतर चल रही है। **लोच में क्या सोच** कार्यक्रम के तहत अब तक 70 से अधिक लोच हो चुके हैं। ज्ञानवर्द्धक शिविरों के माध्यम से सीखने-सिखाने का क्रम जारी है। '**राम गुरु का है संदेश, व्यसनमुक्त हो सारा देश**' कार्यक्रम के तहत स्कूलों में व्यसनमुक्ति संस्कार जागरण अभियान जारी है।

सभी आत्माओं को अपने समान समझें

01 जुलाई 2023। प्रात: मंगलमय प्रार्थना से धर्ममय दिवस का आगाज हुआ। राठौर परिसर के विशाल प्रांगण में आयोजित धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ***''धर्म अहिंसा, संयम, तप रूप है। अहिंसा का सूत्र है अपने समान सभी आत्माओं को समझना, इसी से धर्म परिपूर्ण बनता है और हमारे मन में किसी प्राणी के प्रति अन्यथा भाव पैदा नहीं होगा। जिसका जन्म होता है उसका मरण भी होता है। मरण शरीर का होता है, आत्मा तो अजर-अमर है। अनादिकाल से जन्म-मरण के चक्र में उलझे हुए हैं। हमें मन की परीक्षा करनी है। हमारा मन एक क्षण नीमच में तो दूसरा क्षण कहीं और होता है। मन से बहुत ज्यादा सावधान रहने की आवश्यकता है। दूसरों को अनुशासित करने के चक्कर में अपना मन विचलित हो जाता है। हिंसा, मन-वचन-काया से होती है। मन-वचन-काया का संयम अनुशासन कहलाता है और हिंसा से बचाता है। हमारा नियंत्रण हमारे हाथों में होना चाहिए। हमारा नियंत्रण अपने आप पर नहीं होने के कारण संसार परिभ्रमण है। मन हर क्षण फिसलता है। भगवान का मन अनुशासित था। जीवन में बाधाएँ बहुत आती हैं। उनसे दु:खी होने के बजाय समता धारण करें।''***

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि धर्म कार्य में हमें सदैव जागृत रहना चाहिए। खाने-पीने में भी आसक्ति नहीं होनी चाहिए। शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि साध्वी मण्डल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री सूर्यमणि श्री जी म.सा. ने *''गुरु राम आए, नाना के राम आए''* भजन प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि गुरुदेव जहाँ पधारते हैं वहाँ मंगल ही मंगल छा जाता है। प्रभु की कृपा मालवा पर हो गई है। अब हमें अपने जीवन में परिवर्तन लाना है। गुरु राम अमृत कुण्ड हैं। आप श्री जी ने उत्क्रांति का सूत्रपात कर जीवन उत्थान का मार्ग प्रशस्त किया है। हमें गुरुचरणों में रहते हुए गुरुवर के दिखाए मार्ग पर चलकर अमृत प्राप्त करना है।

समता बहू मण्डल ने गीत *''खुशियाँ लेकर दिन सुहाना आया है, भक्तों का भगवान धरा पर आया है''* प्रस्तुत किया। संघ मंत्री ने महापुरुषों के आगमन को अनन्त पुण्यवानी का उदय बताया। कई भाई-बहिनों ने उपवास, तेला, एकासन, आयम्बिल आदि के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। 12 मिनट तक शरीर स्थिर रखना (कमर से नीचे हलचल नहीं करना), 12 सेकिण्ड आँखें एक दिशा में रखने का संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया।

स्वाध्यायी शिविर में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने धार्मिक क्रियाओं की शुद्ध विधि तथा अस्वाध्याय काल, साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा. ने स्वाध्याय के 5 प्रकार एवं आदर्श स्वाध्यायी का स्वरूप, साध्वी श्री स्तुति श्री जी म.सा. ने श्रेष्ठ स्वाध्यायी जीवन के विषय में फरमाया। जिनेन्द्र जी जैन आगम सम्मत धारणा, प्रीति जी मुणोत ने आदर्श स्वाध्यायी आचार संहिता के विषय में बताया। रात्रि में निर्मल जी कोठारी द्वारा प्रतिक्रमण के पाठों का शुद्ध उच्चारण एवं भाव सहित प्रतिक्रमण करने हेतु आवश्यक जानकारी दी गई।

स्वाध्यायियों ने खुला मंच कार्यक्रम में अपने अनुभव साझा किये। संयोजक मण्डल ने विशेष मार्गदर्शन दिया।

चातुर्मासिक पर्व का आगाज

02 जुलाई 2023। प्रात:कालीन मंगलमय बेला में रविवारीय समता शाखा में समता आराधना में भाई-बहिनों की उपस्थिति भारी संख्या में रही। विशाल धर्मसभा में साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में उपस्थित श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए फरमाया कि ''**मनुष्य का पुरुषार्थ चार प्रकार का होता है- धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। अर्थ का उपार्जन नीतिपूर्वक होना चाहिए। धर्म जहाँ प्रकट हो गया वहाँ अनैतिकता नहीं रह पाएगी। धर्म नीति सिखाता है। धर्म सदाचार स्थापित करने वाला है। धर्म का पुरुषार्थ नहीं तो सब शून्य है। धर्म है तो अर्थ कम कीमती है। धर्म है तो मोक्ष मिलता है। बिना धर्म के तृप्ति मिलने वाली नहीं है। धर्म के बिना कामना दौड़ती रहती है। अर्थ और काम तृष्णा को बुझा नहीं पाते हैं। तृष्णा का कोई किनारा नहीं है। धर्म नहीं होगा तो गलत रास्ते पर जाने वाले को रोका नहीं जा सकता। मन कितना गिर जाएगा पता नहीं। एक सद्गुण सारे दुर्गुणों को भगाने में समर्थ हो जाता है। चातुर्मासिक पर्व प्रेरणा देता है। साधु हो या साध्वी, श्रावक हो या श्राविका, इन चार तीर्थ से पाप कर्म से मुक्त हो सकते हैं। ये तीर्थ संसार सागर से तिराने वाले हैं। श्रावक-श्राविका भी लोगों को धर्म से जोड़ने का कार्य करते हैं। कोई भी धर्म आराधना कर सकता है। नाना गुरु ने बलाई जाति के लोगों का उद्धार कर धर्मपाल की संज्ञा दी। हमने कितने लोगों को व्यसनमुक्त कराया, विचार करें। पूरा जीवन धर्म के लिए समर्पित करें तो भी कम है। धर्म हमारे जीवन का प्राण बने।**''

इस चातुर्मास में हमें प्रतिदिन एक प्रत्याख्यान करना है। तुरन्त कई भाई-बहिनों ने इस संबंध में संकल्प ग्रहण किया।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपने अमृतमय उद्बोधन में फरमाया कि ''**गुरुचरणों की उपासना जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण है। सुनने से अच्छे-बुरे की जानकारी होती है। गुरुचरणों में सही निर्णय करने की ताकत मिलती है। हमें श्रद्धापूर्वक सुनना चाहिए। जहाँ सन्देह है वहाँ श्रद्धा कम है। श्रद्धा का स्थान सद्गुरु हैं। सद्गुरु की वाणी में हमारा दिमाग दौड़ाने की जरूरत नहीं है। श्रद्धापूर्वक सुनने से सही निर्णय व सही परिणाम आते हैं और विकास की उच्चतम अवस्था को प्राप्त करते हैं।**''

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने *''भाग्यशाली हैं हम पुण्यशाली गुरु पाए राम से''* गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि आज माँगने का नहीं अर्पण, समर्पण करने का दिन है। गुरु के वचनों में ताकत होती है। कम से कम 10 दिन गुरुदेव के सान्निध्य में अपने बच्चों को, युवकों को रखकर साधना से जोड़ें।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज बच्चा कहाँ जा रहा है, कहाँ से आ रहा है, हमें मालूम ही नहीं है। हम बच्चों को सुसंस्कार देने का प्रयास करें। साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि जब हमारी पुण्यवानी का उदय होता है तब महापुरुषों के दर्शनों का सौभाग्य मिलता है। हम अंदर के पुरुषार्थ को जगाने का प्रयास करें। नीमच चातुर्मास में धर्म-ध्यान, त्याग-तप से जुड़े। शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि साध्वी मण्डल ने गुरुभक्ति गीत का संगान किया।

श्री साधुमार्गी जैन संघ अध्यक्ष ने कहा कि आज का दिवस नीमच के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया है। नीमच संघ को साधना महोत्सव के रूप में जो चातुर्मास मिला है उसे हम सबको मिलकर सफल बनाना है। संघ मंत्री ने महापुरुषों के सान्निध्य का अधिकाधिक लाभ लेने की अपील की। महेश नाहटा ने तप-त्याग, सामायिक,

स्वाध्याय से जुड़ने का निवेदन किया।

जैसे ही आचार्य भगवन् के तेले की तपस्या, उपाध्याय प्रवर के 6 उपवास एवं अठाई के प्रत्याख्यान की उद्घोषणा श्री हर्षित मुनि जी म.सा. द्वारा की गई, तुरन्त ही 100 से अधिक लोगों ने इस चातुर्मास में तेला तप करने एवं कई भाई-बहिनों ने अठाई तप एवं खुले-खुले 8 उपवास करने के प्रत्याख्यान खड़े होकर ग्रहण किये। एकासन के मासखमण का प्रत्याख्यान भी कई भाई-बहिनों ने लिया। कई युवा साथियों ने 5 माह सजोड़े शीलव्रत ग्रहण किया। **लोच में क्या सोच** कार्यक्रम निरंतर जारी है।

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के आह्वान पर श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मण्डल, बहू मण्डल, समता युवा संघ, नीमच सहित सकल जैन समाज व बाहर से पधारे हजारों दर्शनार्थियों ने वैश्विक सामायिक दिवस के अन्तर्गत 5-5 सामायिक की आराधना की और कइयों ने उससे भी अधिक सामायिक की आराधना की। बड़ी संख्या में उपवास, पौषध, एकासन, बियासन, आयम्बिल, दया आदि हुए। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, जिज्ञासा समाधान आदि कार्यक्रम हुए। चौमासी प्रतिक्रमण में लोगों की उपस्थिति देखते ही बनती थी। चातुर्मासिक पर्व के प्रथम दिन 200 से भी अधिक तेले सम्पन्न हुए। कई गुप्त तपस्याएँ जारी हैं।

स्वाध्यायी शिविर का समापन

स्वाध्याय बिना घर सूना है, मन सूना है सद्ज्ञान बिना।
घर-घर गुरुवाणी गान करो, स्वाध्याय करो, स्वाध्याय करो।।

समता प्रचार संघ एवं श्री साधुमार्गी जैन संघ, नीमच द्वारा 3 दिवसीय स्वाध्यायी अभ्यास एवं नियुक्ति शिविर का सफल आयोजन किया गया। चारित्रात्माओं एवं अन्य प्रबुद्ध अध्यापकों द्वारा धर्मतत्त्व का बोध स्वाध्यायियों को कराया गया। समापन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी, मालवा अंचल उपाध्यक्ष, मंत्री, संयोजक मण्डल, महिला मण्डल अध्यक्षा, युवा संघ अध्यक्ष आदि की गरिमामय उपस्थिति में हुआ। स्वाध्यायियों ने अपने विचार प्रकट किये। शिविर एडमिन ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

अतिथियों ने स्वाध्यायियों को जिनशासन का सच्चा सिपाही निरूपित किया। महेश नाहटा ने स्वाध्यायी सेवा को जिनशासन की अनमोल सेवा बताया। श्री साधुमार्गी जैन संघ, नीमच द्वारा सभी स्वाध्यायियों को पुरस्कृत किया गया।

जीवन में सकारात्मक बदलाव की जरूरत

03 जुलाई 2023। प्रात:कालीन मंगलमय बेला में प्रार्थना की मधुर स्वर लहरियों के पश्चात् आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करते हुए मंगलपाठ प्रदान किया। तत्पश्चात् विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''हमारे आस-पास के लोग बदलें या नहीं किन्तु हमारे जीवन में सकारात्मक बदलाव की यात्रा होनी चाहिए। हमारे भीतर मित्रता का प्रवाह जितना व्याप्त होगा उतनी गहरी शांति प्राप्त होने लगेगी। यह मार्ग अहिंसा का मार्ग है। यह मार्ग धर्म का मार्ग है। यह मार्ग जीवन के सभी दु:खों के नाश का मार्ग है। जब तक हम किसी व्यक्ति को बुरा समझते रहेंगे तब तक हम बुरे हैं और जब तक हम बुरे हैं तब तक हम दु:खी हैं। लोग काम गलत कर रहे हैं तो हम किस-किस की चिन्ता में दु:खी होंगे। अगर हम सोचते हैं कि उसके गलत कर्म मेरे जीवन को प्रभावित करेंगे तो हम गलत सोचते हैं।''**

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि कर्मबन्ध का कारण राग-द्वेष है। तपस्या मात्र आत्मशुद्धि और कर्मनिर्जरा के लिए होनी चाहिए, न कि यश, नाम, प्रतिष्ठा के लिए। शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

आचार्य भगवन् के तेले तप का पारणा हुआ। उपाध्याय प्रवर के अठाई के प्रत्याख्यान हो चुके हैं। प्रतिदिन की भाँति दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, महिला समिति एवं समता युवा संघ के पदाधिकारियों, कार्यकारिणी सदस्यों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर विशेष ऊर्जा प्राप्त की। '**10 दिन गुरुदेव के साथ साधना**' कार्यक्रम का आगाज हुआ।

धर्म के लिए जीना और धर्म के लिए मरना

04 जुलाई 2023। प्रात: मंगलमय प्रार्थना एवं आचार्य भगवन् के श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण करने के पश्चात् दैनिक चातुर्मासिक धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को धर्म की ओर उन्मुख करते हुए आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**धर्म के दो भेद हैं- लौकिक एवं लोकोत्तर। लौकिक धर्म ग्राम-नगर का धर्म होता है। लोकोत्तर धर्म, श्रुत धर्म और चारित्र धर्म जो परलोक को सुधारे, दुर्गति में जाते हुए को रोके, वह धर्म है। लोकोत्तर धर्म में श्रद्धा जरूरी है। पूरा विश्व विश्वास पर टिका हुआ है। विषमता धर्म नहीं है। समता धर्म है। धर्म क्रिया करना अलग बात है और धर्म पर श्रद्धा रखना अलग बात। धन जावे तो जावे पर सत्य धर्म नहीं जाना चाहिए। धर्माराधना नियमित होनी चाहिए। मैं और मेरा परमात्मा और कोई नहीं। जीना धर्म के लिए और मरना धर्म के लिए।**''

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि साधु वह है जिसने अपने आपको साध लिया है। हम साधु बनें तो सबसे श्रेष्ठ, नहीं तो सच्चे श्रावक अवश्य बनें। शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने *''गुरु के मुख से निकला वचन वरदान होता है''* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

महान तपोपूत आचार्य भगवन् के तेले की तपस्या का पारणा सानंद सम्पन्न हुआ। बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के अठाई तप एवं श्री गगन मुनि जी म.सा. के 18 उपवास की तपस्या विशेष उल्लेखनीय है।

प्रतिदिन प्रार्थना के बाद सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी की कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ज्ञानार्जन करवा रहे हैं।

सत्र 2023-2025 हेतु श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर परम गुरुभक्त **श्री नरेन्द्र जी गांधी, जावद** के मनोनीत होने एवं श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति के राष्ट्रीय अध्यक्षा पद पर **श्रीमती पुष्पा जी मेहता** के पुन: मनोनीत होने पर दोनों एवं अन्य पदाधिकारियों व सदस्यों ने उभय गुरु-भगवंतों से आशीर्वाद प्राप्त किया। दोपहर में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में श्री नीरजमुनिजी म.सा. ने जिज्ञासाओं का आगमसम्मत सटीक समाधान प्रदान किया।

मनोविजेता विश्वविजेता

05 जुलाई 2023। भोर की उजली किरण के साथ ही मंगलमय प्रार्थना के स्वर प्रस्फुटित हुए। आचार्य भगवन् ने उपस्थित गुरुभक्तों को मंगलपाठ प्रदान कर असीम कृपा का वर्षण किया। राठौर परिसर में विशाल

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में भगवान महावीर की अमृतवाणी का रसपान कराते हुए फरमाया कि ''**ज्ञान प्राप्ति के लिए विनय बहुत जरूरी है। विनय से ज्ञान बढ़ता है। जो मन को जीत लेता है वो विश्वविजेता बन जाता है। जो मन को नहीं जीत सकता है वो शांति को प्राप्त नहीं कर सकता है। विनय आराधना करने से केवलज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। शुभ भावों के साथ वंदना करने से स्वयं को लाभ मिलेगा। वंदना में औपचारिकता न हो। ज्ञान का गर्व नहीं होना चाहिए।**''

आचार्य भगवन् ने ''***सुन्दर हो संस्कार सुनन्दा चारित्र भाग***'' प्रस्तुत कर सभी को भावविभोर कर दिया। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संसार के पुद्गलों में सुख नहीं है। सच्चा सुख अध्यात्म में है। आचार्य भगवन् के सान्निध्य का अधिक से अधिक लाभ लेवें।

शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि साध्वी मण्डल ने ''***मेरे जीवन की धरोहर, तुम हो गुरुवर***'' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। आचार्य भगवन् को 36 वंदना करने एवं अत्र विराजित चारित्रात्माओं को विधि सहित वंदना करने का शुभ संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया। 5 माह शीलव्रत का प्रत्याख्यान कई भाई-बहिनों ने लिया। सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धांत बत्तीसी एवं श्रुत आरोहक की कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने मार्गदर्शन प्रदान किया।

बत्तीस शास्त्रों का सार है यतना और विवेक

06 जुलाई 2023। प्रात: शुभ बेला में मंगल प्रार्थना के पश्चात् तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ फरमाकर अनुपम लाभ प्रदान किया। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए दिव्यमूर्ति आचार्यदेव ने अपने आगमोक्त प्रवचन में फरमाया कि ''**हमने दुनिया के लिए, समाज के लिए, परिवार वालों के लिए एवं सबके लिए सब कुछ किया, किन्तु अपने लिए क्या किया? सारे कार्य शरीर के, मोह के पोषण के लिए किये। मोह को हटाने के लिए हमारा काम कितना हुआ और मोह को बढ़ाने के लिए कितना काम हुआ? इसकी समीक्षा हम करें। साधु हो या श्रावक, दोनों समीक्षा करें। इन्द्रिय पोषण के सारे कार्य हुए। ये सारे कार्य पिछले जन्मों में बहुत किये हैं, लेकिन धर्माराधना नहीं की तो यह जीवन किस काम का? धर्म को सिर्फ जानना नहीं है बल्कि उसे स्वीकार करना है। हमने शरीर के पोषण में कोई कमी नहीं रखी, पर हमें आत्मा का पोषण करना है। जैन धर्म की हजारों पुस्तकें हो गई हैं। जो ज्ञान जीवन में उतर रहा है वो ज्ञान हमारा है। पूरे 32 शास्त्रों का सार यतना और विवेक है। सरलता से शुद्धि होती है और वहीं पर धर्म टिकता है। छोटी-छोटी बात की पकड़ को छोड़ना होगा।**'' ''*सुन्दर हो संस्कार सुनन्दा चारित्र भाग*'' की सरस सुन्दर व्याख्या आचार्य भगवन् ने की।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने वदंना के दोषों की सुन्दर विवेचना की। शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने ''***अहोभाग्य मेरे, राम गुरु की शरण मिले***'' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

उपाध्याय प्रवर के 8 उपवास का पारणा सानन्द सम्पन्न हुआ। समता महिला मण्डल, मुम्बई की सदस्याओं ने विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किये।

बंद करें दूसरों की गलतियों को देखना

07 जुलाई 2023। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना हुई एवं आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करते हुए मंगलपाठ प्रदान किया। राठौर परिसर में आयोजित धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी के भावों को तृप्त करते हुए प्रशान्तमना आचार्य भगवन् ने फरमाया कि ''**कितनी ही सामायिक, प्रतिक्रमण आदि कर लो, अन्य धार्मिक क्रियाएँ कर लो, लेकिन जब तक धर्म में श्रद्धा नहीं है तब तक उसका क्या लाभ होगा? धर्म श्रद्धा के बिना की गई क्रियाएँ कोई महत्त्व नहीं रखती। जिसके मन में धर्म के प्रति श्रद्धा पैदा हो जाती है, उसके जीवन में परिवर्तन आना निश्चित है। साधु जीवन को हमने कठिन समझ लिया है। सबसे श्रेष्ठ जीवन साधु जीवन होता है। मेरे विषय में दुनिया कुछ भी बोले, मुझे कोई मतलब नहीं। कोई कितनी भी बुराइयाँ करे, मुझे फर्क नहीं पड़ना चाहिए। मुझे कोई समाधान देने की जरूरत नहीं। जिनको मुझ पर विश्वास है उन्हें समझाने की जरूरत नहीं। मुझे अपने कान बंद कर लेने या दूसरे का मुँह बंद कर देने की जरूरत नहीं है, क्योंकि मुझे सुनना ही नहीं है तो मैं क्यों सुनुँ? यह कब होगा? जब आप कान बंद रखेंगे। सुनने वाला कभी नहीं हारता, बोलने वाला ही हारता है। कब तक सुनना है? जब तक जीवन है तब तक सुनना है। हम एक कहेंगे तो चार सुननी पड़ेगी। ऊँची-नीची जो भी बात आए सुनते रहो, सहते रहो। हमें दुनिया को नहीं अपने आपको बदलना है। हम बदलेंगे तो युग बदलेगा। दूसरों की गलतियों को देखना बंद करो।**''

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संसार घटाने के चार उपाय हैं- **दान, शील, तप, भावना**। श्रावक का दिल दान के लिए खुला होना चाहिए। शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा., साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री चेतना श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने ''*गुरु राम हमारे जिनशासन के उज्ज्वल सितारे*'' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

सावन-भादो एकान्तर तप कई भाई-बहिन कर रहे हैं। सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी एवं श्रुत आरोहक की कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। दोपहर में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा एवं प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में श्री नीरज मुनि जी म.सा. जिज्ञासुओं की शंकाओं का सुंदर समाधान किया। अहोदानम् पंच दिवसीय शिविर में श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने निर्दोष भिक्षा विधि की सूक्ष्म व्याख्या प्रस्तुत की। बहिनों ने अपूर्व उत्साह के साथ शिविर में भाग लिया।

08 जुलाई 2023। प्रात: मंगल प्रार्थना में भगवान का स्मरण करने के पश्चात् विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ प्रदान कर उपस्थित गुरुभक्तों को आत्मतृप्त किया। चतुर्विध संघ की उपस्थिति में आयोजित विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए परम प्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**मुझे किसी भी जीव की विराधना नहीं करनी है। यह भावना कब जगेगी? जब सारे प्राणियों को अपने समान समझेंगे तब यह भावना जगेगी। जैसी आत्मा मेरे भीतर है वैसी ही आत्मा समस्त प्राणियों में है। प्राणी मात्र के साथ तुम्हारा मैत्री भाव होना चाहिए। मित्रता में न राग होता है न द्वेष। कर्त्तव्य भाव प्रधान होता है। ऊँच-नीच का भेद समाप्त हो जाता है। अहिंसा का व्यवहार ऐसा होगा कि मन किसी भी प्राणी को दु:ख-दर्द देने के लिए तैयार नहीं होगा। मन हर समय यही ध्यान करेगा कि किसी भी प्राणी को कोई कष्ट नहीं पहुँचे। मन में द्वेष, नफरत, ईर्ष्या होगी तो व्यवहार में अंतर आ जाएगा। मुँह से भले ही शब्द मधुर बोल रहे हों किन्तु मधुर**

शब्द के साथ जहर घुला हुआ है तो उसका असर होगा। अहिंसा का अर्थ है हमारा हृदय अमृत बन गया है। अमृत और जहर दोनों एक स्थान पर टिक नहीं पाएँगे। अहिंसा के साथ क्षमा का मेल है, क्रोध, माया, लोभ का मेल नहीं है। हमारे भीतर कुछ भी कलुषित है तो हमें यह समझना चाहिए कि भीतर अहिंसा कमजोर है। जिस दिन अहिंसा परिपूर्ण हो जाएगी तो वह हमें भी वीतरागता के समीप ले जाएगी।''

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मन ही बंधन और मोक्ष का हेतु है। शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। सभा में उपस्थित अनेक भाई-बहिनों ने सेल की घड़ी नहीं पहनने का नियम लिया। दो दिवसीय निर्दोष सेवक शिविर में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने बिना नाम के कार्य करने की विशेष प्रेरणा दी। दोपहर में आचार्य भगवन् के पावन सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम हुआ। प्रश्नों के तत्काल सुंदर समाधान प्राप्त कर लोग अभिभूत हो गये।

धर्म पर दृढ़ श्रद्धा जरूरी

09 जुलाई 2023। प्रात:कालीन बेला में रविवारीय समता शाखा में समता आराधना करने हेतु अपार जनसमूह उमड़ पड़ा। आचार्य प्रवर द्वारा प्रदत्त इस विशेष आयाम को साकार करने हेतु युवाओं के साथ ही सभी का उत्साह देखते ही बनता है। आचार्यदेव ने असीम कृपा करते हुए मंगलपाठ प्रदान किया।

विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए प्रशान्तमना आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**हम अनादिकाल से पाँच इन्द्रियों के विषय प्रवाह में बह रहे हैं। श्रोत्रेन्द्रिय को शब्द सुनने में बड़े मधुर लगते हैं। मधुर शब्द की ओर उसका आकर्षण होता है। रूप-रंग आकर्षित करते हैं, आँखों को सुहाते हैं। गंध नासिका को प्रिय लगती है। स्वाद रसना के द्वारा लिया जाता है और स्पर्श स्पर्शना के द्वारा किया जाता है। इन पाँच इन्द्रियों के विषय में जिंदगी बह रही है। पाँच इन्द्रियाँ मन को प्रभावित करती हैं और मन भी अनुकूलता की ओर दौड़ लगाता है। हम यदि बहाव में चलते रहेंगे तो संसार सागर से पार नहीं हो पाएँगे। धर्म में श्रद्धा होने पर उल्टी नौका सीधी हो जाती है। फिर भी सोचेगा कि मुझे इस रास्ते पर नहीं जाना है। धर्म श्रद्धा वाला व्यक्ति सावधान रहेगा। वह सही दिशा में आगे बढ़ने का लक्ष्य बनाता है। धर्म क्रिया करने से पहले धर्म पर श्रद्धा होना जरूरी है। धर्म की पहचान करेंगे और उस पर आस्था दृढ़ होगी तभी हमें कोई भी विचलित नहीं कर पाएगा। अनादिकाल से संसार में रहने का कारण राग-द्वेष है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र मोक्ष के द्वार हैं।**''

आचार्य भगवन् ने जैसे ही श्री गगन मुनि जी म.सा. के 23 उपवास, साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. के 24 उपवास, साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. के 22 उपवास की शुभ घोषणा की तो सम्पूर्ण सभा हर्ष-हर्ष, जय-जय की गौरव ध्वनि से गूँज उठी। सभा में उपस्थित हजारों भाई-बहिनों ने हताशा-निराशा के क्षणों में भी आत्महत्या नहीं करने का संकल्प आचार्य भगवन् से ग्रहण किया।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने सुखविपाकसूत्र के माध्यम से सुबाहु कुमार का सरस चित्रण प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि बच्चों को सुसंस्कार देने की दिशा में हमें सजग रहना चाहिए। साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुवर्णा श्री जी म.सा. ने *''राम गुरु की नौका चली, हो जाइये भक्तों इसमें सवार रे''* गीत प्रस्तुत करते हुए आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के सान्निध्य में पावन चातुर्मास का लाभ उठाने की अपील की। साध्वी मण्डल ने *''नाना का राम है प्यारा, गुरु राम है हमारा''* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने 5 सामायिक, बियासना, प्रतिक्रमण व संवर करने की अद्भुत प्रेरणा दी। तत्काल कई भाई-बहिनों ने खड़े होकर आचार्य भगवन् के श्रीमुख से इस हेतु पच्चक्खाण ग्रहण किये। केसुन्दा से 10 किमी. पैदल चलकर 21 गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। 'लोच में क्या सोच' कार्यक्रम के अन्तर्गत अन्य जनों के साथ दो महिलाओं एवं बालकों ने भी लोच करवाया।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने बच्चों के एक दिवसीय शिविर में धर्मतत्त्व का बोध कराया एवं निर्दोष सेवक शिविर में श्रेष्ठ कार्यकर्त्ता के गुणों का वर्णन करते हुए प्रेरणा प्रदान की।

सांसद श्री सुधीर जी गुप्ता, विधायक श्री दिलीप सिंह जी परिहार, बीजेपी के वरिष्ठ नेता श्री महेन्द्र जी भटनागर, नगरपालिका के पूर्व अध्यक्ष श्री राकेश जी जैन, श्री जिनेन्द्र जी मेहता, श्री आदित्य जी मालू, सांसद प्रतिनिधि श्री राकेश जी भारद्वाज आदि ने आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन दर्शन कर कहा कि नीमच में ऐसी महान विभूतियों के पधारने से मालवा की धरा निहाल हो गई। आपने विभिन्न विषयों पर चर्चा कर मार्गदर्शन प्राप्त किया। श्री साधुमार्गी जैन संघ, नीमच ने साहित्य भेंट कर सभी प्रमुखगणों का बहुमान किया।

10 जुलाई 2023। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना से हृदय धर्ममय हो गया। तत्पश्चात् आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करते हुए मांगलिक प्रदान कर सौभाग्य से सराबोर कर दिया। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने धार्मिक कक्षा में सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी आदि पर विशेष मार्गदर्शन प्रदान किया। सभी में ज्ञान-ध्यान सीखने की होड़ लगी हुई है।

विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपने ओजस्वी तेजस्वी प्रवचन में फरमाया कि ''**ऊर्जा का प्रवाह होता है, पर ऊर्जा को ग्रहण करने की अपनी-अपनी ताकत है। हर व्यक्ति में ग्रहण करने की क्षमता एक समान नहीं होती। सभी का विकास समान नहीं होता। सभी भूमियाँ बारिश में अपनी क्षमता के अनुसार जल सोंखती है। बालू में पानी कुछ समय के लिए रुकता है, फिर सूख जाता है। आहार सही हो तो शरीर स्वस्थ रहेगा। पाचन शक्ति सही होने पर ताकत मिलती है। मन की पवित्रता ही स्वस्थ जीवन की आधारशिला है। चिन्ताग्रस्त हो तो भोजन करने पर शुद्ध रसायन उत्पन्न नहीं होते। ताकत हमारी भावनाओं में होती है। गुरु ऊर्जा के भण्डार हैं। हम ग्राहक हैं। हमारे भीतर ग्रहण करने की क्षमता कितनी है? मन की शान्ति भोजन को अमृत बनाती है और अशान्त मन से किया गया भोजन जहर बन जाता है।**''

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमें हर कार्य व्यवस्थित ढंग से करना चाहिए। धर्म के कार्यों में आलस, प्रमाद नहीं करना चाहिए। श्रेष्ठ विचार और श्रेष्ठ आचरण से जीवन का विकास होता है।

शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि साध्वी मण्डल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। उभय गुरु-भगवंतों की कृपा से श्री गगन मुनि जी म.सा. के 24 उपवास, साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. के 25 उपवास साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. के 23 उपवास के साथ तपस्या आगे गतिमान है। माह में एक दिन मोबाईल का त्याग कई भाई-बहिनों ने ग्रहण किया।

धर्म से मोह को जीता जा सकता है

11 जुलाई 2023। प्रात: मंगल प्रार्थना में अध्यात्म के स्वरों से प्रभु वंदना की गई। तत्पश्चात् आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य

भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**धर्म श्रद्धा होना बहुत कठिन कार्य है। राग-द्वेष जब तक अटका रहता है तब तक मन भटकता रहता है। धर्म श्रद्धा का भी पता नहीं चलता। यह मोहनीय कर्म का भेद है। दिखने वाले पदार्थ अशाश्वत हैं। ये सदा रहने वाले नहीं है। जितने भी पदार्थ हैं उनमें निर्वेद (उदासीन) भाव लाना होगा। धर्म से ही मोह को जीता जा सकता है। साधु में साधुता जरूरी है। हमारी जिन्दगी में कल कभी नहीं आएगा। जो आएगा वह आज ही आएगा। वर्तमान को सफल बनावें। कल कभी सफल नहीं होता। मोह पर विजय प्राप्त करने के लिए निरन्तर अभ्यास करना होगा। हमें सिर्फ अपने परिवार तक सीमित नहीं रहना अपितु समाज और राष्ट्र के दायित्व के प्रति भी हमें सजग रहना पड़ेगा।**''

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज लोगों की जीवनशैली बिगड़ गई है। खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा सभी बदल गए हैं। इससे परिवार का माहौल बिगड़ रहा है। माता-पिता का जीवन भौतिकता और आधुनिकता में रचा-पचा है तो बच्चों में सुसंस्कार कहाँ से आएँगे?

शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने ''***निर्मल जल-सा मन है जिनका, सागर सम गंभीरा हैं***'' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। धामणगाँव रेलवे में विराजित नवदीक्षित श्री उत्साह मुनि जी म.सा. के संथारा साधना के उपलक्ष में प्रतिदिन रात्रिभोजन त्याग, 11 द्रव्य, मिठाई, कड़ाही की वस्तुओं के त्याग आदि प्रत्याख्यान कई भाई-बहिनों ने यथाशक्ति ग्रहण किये।

दशवैकालिक सूत्र के प्रथम अध्ययन की 5 गाथाएँ कंठस्थ करने हेतु आचार्य भगवन् के आह्वान को लगभग पूरी सभा ने हाथ जोड़कर स्वीकार किया। तपस्याओं के अनेक प्रत्याख्यान हुए।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने धार्मिक कक्षा में मार्गदर्शन प्रदान किया। अमेरिका से श्री अजीत जी जैन ने सपरिवार, पूर्व विधायक श्री सम्पत स्वरूप जी जाजू एवं दशपुर एक्सप्रेस के सम्पादक श्री आर.वी. गोयल ने आराध्यदेव के दर्शन-वंदन का लाभ लिया।

सायं को श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने नवयुवकों को विशेष प्रेरणा देते हुए चातुर्मास में ज्ञान-ध्यान सीखने एवं सामायिक संवर से अधिक से अधिक जुड़ने का आह्वान किया।

सत्य की करें संगत

12 जुलाई 2023। प्रात:कालीन मंगल प्रार्थना एवं आचार्य प्रवर के श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण कर गुरुभक्तों ने दैनिक कार्यक्रमों का शुभारंभ किया। तत्पश्चात् आयोजित प्रवचन सभा में गुरुभक्तों को सम्बोधित करते हुए सिरीवाल प्रतिबोधक आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**धर्म से मोह पर विजय प्राप्त की जा सकती है। सत्य की सदा जीत होती है। किसी भी विवाद का समाधान आपसी चर्चा एवं बातचीत से होना चाहिए। झगड़े के पीछे हमारा अहंकार है। धर्म हमारे पक्ष में है तो विजय निश्चित है। इसके लिए धैर्य रखना होगा। विवाद की स्थिति में कभी भी तुरन्त जवाब नहीं देना चाहिए।**''

आचार्य भगवन् के आह्वान पर आज अभ्यास के लिए विवाद में तीन मिनट तक जवाब नहीं देने की प्रतिज्ञा सब

ने ग्रहण की। सत्यनिष्ठा के साथ जीवन जीने की अद्भुत प्रेरणा आचार्य भगवन् ने दी। सत्य की संगत करने एवं मोह की संगत से दूर रहने का आह्वान आचार्य भगवन् ने किया।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आजकल की शिक्षा से डॉक्टर, वकील, सी.ए., इंजीनियर बन सकते हैं, लेकिन एक अच्छा इंसान बनने की जरूरत है। शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने *''अरिहंत जैसे गुरु पाकर खिल गये मेरे भाग्य''* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए। भोजन करते समय मांगकर नहीं खाने का संकल्प आचार्य भगवन् से कई भाई-बहिनों ने ग्रहण किया। सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी की कक्षा एवं श्रुत आरोहक में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. निरंतर मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। प्रात:काल माता-पिता को प्रणाम किये बिना मुँह में पानी नहीं लेने का संकल्प प्रवचन सभा में अनेक जनों ने आचार्य भगवन् के श्रीमुख से ग्रहण किया।

लोभ पतन का कारण

13 जुलाई 2023। प्रात:कालीन मंगल बेला में प्रार्थना के माध्यम से प्रभु भक्ति के पश्चात् आचार्य भगवन् के श्रीमुख से मांगलिक श्रवण का सौभाग्य उपस्थित गुरुभक्तों को मिला। सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी की सुन्दर व्याख्या श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाई।

राठौर परिसर में आयोजित विहंगम धर्मसभा को अपने पावन वचनों से पावन करते हुए जन-जन की आस्था के केन्द्र आचार्य भगवन् ने फरमाया कि ''**धर्म के प्रति हमारी श्रद्धा मजबूत होनी चाहिए। कोई देवता देने वाला नहीं है। हमारा पुण्य प्रबल होगा तो हमें सब कुछ प्राप्त होगा, नहीं तो कुछ नहीं मिलेगा। धर्म रंग में हमारा मन रंगा हुआ होना चाहिए। धर्म मन में ऐसा रंगा होना चाहिए कि मन और हृदय एक हो जाएँ। किस समय किसका भाग्य बदल जाए यह पुण्य का खेल है। कभी-कभी यह बदलाव धीरे-धीरे आता है। बुद्धि तेज हो तो एक झटके में परिवर्तन हो जाता है। प्रभव चोर अपने 500 साथियों के साथ साधु बन गया। रोहिणेय चोर भगवान महावीर के वचन सुनकर साधु बन गया। आचार्य श्री नानेश ने बलाई जाति का उद्धार कर उन्हें धर्मपाल बनाया। आज वे सामायिक, संवर, तपस्या आदि धर्माराधना कर रहे हैं। अनीति का धन कभी टिकता नहीं है। बीमारी का कारण अनीति है। लोभ पतन का कारण है।**''

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने सुबाहु कुमार के जीवन चरित्र का सुन्दर विवेचन किया। साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुवर्णा श्री जी म.सा. आदि ने *''अहो राम गुरु दरबार अमृत बरस रहा''* गुरुभक्ति भजन प्रस्तुत किया। 15 मिनट धार्मिक पुस्तकें पढ़ने का प्रत्याख्यान कई लोगों ने लिया। समता बहू मण्डल जावरा ने विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किये। स्कूलों में व्यसनमुक्ति कार्यक्रम हुए।

सुश्रावक शिविर में साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. ने श्रावक के नियम 12 व्रतों को स्वीकार करने, उत्क्रांति के नियमों का पालन करने, नैतिकता के साथ व्यापार करने, पुच्छिंसु णं एवं दशवैकालिक के 4 अध्ययन कंठस्थ करने आदि नियमों की सुन्दर व्याख्या प्रस्तुत कर विभिन्न संकल्प दिलाये। लोच में क्या सोच कार्यक्रम निरंतर जारी है। कई गुप्त तपस्याएँ चल रही हैं। वीर पिता श्री वर्द्धमान जी कटारिया-भीलवाड़ा प्रति सप्ताह एक तेला तप की आराधना में तल्लीन हैं।

मर्यादाओं का करें पालन

14 जुलाई 2023। दिन का शुभारंभ प्रात:कालीन मंगल प्रार्थना के साथ हुआ। तत्पश्चात् परम कृपालु आचार्यदेव ने मंगलपाठ प्रदान किया। धर्मपिपासु गुरुभक्तों को अमृतवाणी का पान कराते हुए दयानिधि कृपानिधान आचार्यदेव ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**व्यक्ति सुखी होना चाहता है। हम हमारी मर्यादा रेखा में रहेंगे तो सुख मिलेगा। मर्यादा का उल्लंघन दु:ख को बुलाने वाला होता है। साधु और श्रावक जीवन की अपनी-अपनी मर्यादाएँ होती हैं। मर्यादा को अनदेखा करते हैं तो हमें दु:ख का सामना करना ही होगा। मर्यादा में रहना मतलब सुख में रहना, मर्यादाओं का पालन अवश्य होना चाहिए। श्रावक के 12 व्रतों में यह बताया गया है कि गलत माप-तौल नहीं करना, झूठा लेखा नहीं लिखना, चोर की चुराई वस्तु नहीं लेना, चोर का साथ नहीं देना आदि मर्यादाएँ हैं। इन मर्यादाओं का पालन करेंगे तो दु:ख क्यों आएगा? सिद्ध भगवान के ज्ञान में ऐसा कोई भी पल, कोई भी क्षण नहीं है, जिसकी उनको जानकारी नहीं हो। केवल एक आदमी की नहीं, दुनिया की प्रत्येक आत्मा का लेखा-जोखा उनके ज्ञान में प्रतिक्षण बनता रहता है। हमारा नियम, हमारी मर्यादा हमारा रक्षा कवच बनेगा। नियंत्रित मन हमें ऊँचाइयाँ देने वाला है।**''

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने आगार धर्म व अणगार धर्म की सुन्दर व्याख्या की। साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा., साध्वी श्री विराट श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने *''जिनशासन में चमके गुरु राम''* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। अनेक तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए।

सुश्राविका चांदाबाई भंवरलाल जी बोथरा, गंगाशहर-गुरुग्राम के निधन पर पारिवारिकजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति एवं संदेश प्राप्त किया। धर्मपाल प्रवृत्ति के राष्ट्रीय संयोजक ने गुरुदर्शन का लाभ लिया।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. प्रात: एवं दोपहर में कक्षाओं के माध्यम से धर्मतत्त्व का बोध करवा रहे हैं। दोपहर में सुश्रावक-सुश्राविका शिविर में साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. ने प्रतिदिन कम से कम एक सामायिक करने, वर्ष में 12 दया या पौषध करने, ज्ञान-ध्यान को निरंतर आगे बढ़ाने तथा सदैव निर्दोष भिक्षा देने की अद्भुत प्रेरणा दी एवं श्रावक के 12 व्रतों में से कम से कम एक व्रत अवश्य धारण करने का आह्वान किया। कई शुभ संकल्प हुए। समीक्षण ध्यान योग प्राणायाम शिविर में डॉ. सत्यनारायण जी शर्मा ने समीक्षण ध्यान व योग का अभ्यास प्रतिभागियों को कराया। तत्त्वज्ञान की विभिन्न कक्षाएँ निरंतर जारी है।

दूसरों को नहीं स्वयं को देखो

15 जुलाई 2023। भोर की पहली किरण के साथ ही प्रार्थना के माध्यम से प्रभुभक्ति की गई। तत्पश्चात् आचार्यदेव ने कृपादृष्टि रखते हुए मंगल पाठ प्रदान किया।

प्रवचन स्थल पर अपार गुरुभक्तों को सम्बोधित करते हुए आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**धर्म की श्रद्धा दुर्गति का निवारण करने वाली है। जो धर्म में उत्तीर्ण हो गया वह नरक और निगोद में नहीं जायेगा। अपने मन से राग-द्वेष दूर करो और सीधे चार शरण को स्वीकार करो। धर्म हमें कहता है- न राग करना, न द्वेष करना, न तुम्हें कोई प्रिय है और न ही कोई अप्रिय है। राग-द्वेष ही संसार है और राग-द्वेष का शमन धर्म है। हमारी सारी क्रियाओं का लक्ष्य राग-द्वेष को पतला करने का**

होना चाहिए। धर्म हमें दुर्गति से सद्गति की ओर ले जाता है। दूसरों की बुराई के लिए यह मनोबल प्राप्त नहीं हुआ है। यह मनोबल जिनेश्वर देव की भक्ति के लिए मिला है। दूसरों को नहीं स्वयं को देखो तो तुम्हारा कल्याण होगा। दूसरों को देखते रहोगे तो मन में चिढ़ते रहोगे और कर्मबंधन के अलावा कुछ नहीं कर पाओगे। मन में द्वेष, ईर्ष्या और नफरत पैदा होगी तो हम पतन के मार्ग पर चले जाएँगे।''

सुन्दर हो संस्कार भविजन चरित्र भाव के माध्यम से आचार्य भगवन् श्रद्धालुओं को नित नयी प्रेरणाएँ दे रहे हैं। बाप की सम्पत्ति के लिए विवाद की स्थिति उत्पन्न नहीं होने देनी चाहिए। जो सम्पत्त को बढ़ाये वह सम्पत्ति है। भाई-भाई और समाज में प्रेम, स्नेह, सद्भाव बने रहने चाहिए।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने अपने भावोद्गार में फरमाया कि आज हम दूसरों पर नियंत्रण करना चाहते हैं, पर स्वयं पर हमारा नियंत्रण नहीं है। आज संयुक्त परिवार बहुत कम रह गये हैं। सहनशीलता के अभाव में परिवार बिखरता जा रहा है।

शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा., साध्वी श्री कुसुमकांता श्री जी म.सा. (जावरा वाले), साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा., साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सम्पदा श्री जी म.सा., साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने अपने भावों में ***''भगवान है कलयुग के''*** मार्मिक गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से जमीन-जायदाद के बँटवारे में पिता की सम्पत्ति के लिए विवाद न करने, कोर्ट केस नहीं करने का संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया।

साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. के मासखमण का पारणा सानन्द सम्पन्न हुआ। पूर्व में आप श्री जी 6-7-8-9 की तपस्याएँ, मासखमण व चार वर्ष एकान्तर तप कर चुके हैं।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी की कक्षा में ज्ञान-ध्यान करवाया। समीक्षण ध्यान योग प्राणायाम शिविर में डॉ. सत्यनारायण जी शर्मा ने अभ्यास कराया।

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में चतुर्विध संघ धर्म-ध्यान, तप-त्याग से रंगा हुआ है।

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग

मासखमण	साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा.	- 30
उपवास	श्री गगनमुनिजी म.सा.	- 29
	साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा.	- 28
	साध्वी श्री जयति श्री जी म.सा.	- 17
	साध्वी श्री चंदना श्री जी म.सा.	- 16
	साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा.	- 7 (चौविहार)
	साध्वी श्री जयंकरा श्री जी म.सा.	- 6

श्रावक-श्राविका वर्ग	
आजीवन शीलव्रत	अशोक कुमार जी कुसुमलता जी गांग-खोर, अजीत जी इन्द्रा जी नाहटा, विनोद जी सुनीता जी कटारिया-रतलाम, सुजानमल जी पुष्पा जी बरड़िया-रतलाम, सुरेश जी सोनी, शंकरलाल जी नागौरी-जामुनिया कलां, समरथमल जी अंजूदेवी कांठेड़, बसंत कुमार जी कांतादेवी कांठेड़, शांतिलाल जी तारादेवी देसरला-देवगढ़, चेन्नई, संतोष जी लुंकड़-अंजेड़, राजमल जी जैन, राजकुमार जी ललिता देवी सांड-जयपुर, समरथमल जी मधुबाला जी पामेचा-नामली, सागरमल जी सहलोत, हुकुमचंद जी कांकरिया, राधाकिशन जी सिंघी, अनिल कुमार जी गांधी-बोरीद कलां, हरिसिंह जी ठाकुर, बसेरी भाट, बाबुलाल जी सज्जनबाई सोनी, समरथमल जी छाजेड़-पिपलिया मंडी, विमल जी हेमलता जी-कोटा
गाथा का स्वाध्याय	2 लाख – रमाकांता जी जैन, 1.5 लाख – राजकुमारी जी जैन, दाखाबाई बोहरा, प्रकाशचंद जी जैन-सीतामऊ 1 लाख – आभा जी जैन
पक्की नवकारसी	आजीवन – हंसाबाई खिंदावत, शकुन्तला जी धींग 300 – सपना जी चेलावत 100 – निर्मल जी सेठिया-लुधियाना, रेणु जी दुगड़-निमड़ी
पक्की पोरसी	100 – प्रकाश जी डांगी-भीलवाड़ा
एकान्तर तप	कंचन जी आँचलिया-दिल्ली, प्रभा जी कोठारी-रतलाम, मधुदेव मुणत-रतलाम
श्रेणी तप	मांगीलाल जी चौधरी
द्रव्य	20 – मेघराज जी डागा-गंगाशहर 13 – पारसमल जी पितलिया-मोरवन
सामायिक	1365 – सागर जी धींग, सरदारमल जी सेठिया-उज्जैन 1100 – प्रभा जी बुच्चा-सूरत
वर्षीतप	दूसरा – शशिकला जी सांड-कोटा
उपवास	31 – सरोज जी कांठेड़ 23 – भावना जी अरविंद जी वया (गतिमान) 21 – सरोज जी कांठेड़ (गतिमान) 20 – सुशीलाबाई पितलिया (गतिमान), सुदीक्षा जी मुणेत (गतिमान) 19 – सोनल जी पितलिया 18 – अभिषेक जी कांठेड़ (गतिमान) 16 – बुलबुल अमित जी चौहान-झारणा 15 – अरुण जी बम्बोरिया, समता जी खिंदावत-मन्दसौर 14 – सोनल जी बरखेड़ा वाले-खाचरौद (40 के प्रत्याख्यान), सुशीला जी पोखरना-बेगूँ, मनीष जी पोखरना-मंगलवाड़

	11 – ब्यावर से– नेमीचंदजी चौरड़िया, सागरमल जी वया, मनीषा जी नलवाया, प्रीति जी नलवाया, प्रेमबाई कांठेड़ 10 – अंजना बाई पोखरना–बेगूँ 9 – निर्मला जी राणावत–बुढ़ा, प्रेमबाई लोढ़ा, पीयूष जी नपावलिया–मौड़ी, ज्योति जी नागौरी, कंचनबाई बोड़ावत–धामनिया, ब्यावर से– सुनील जी नलवाया, पराग जी नाहर, मंजुला जी नाहर, नैना जी खिंदावत, सुशीलाबाई कटारिया, वन्दना जी पीपाड़ा, पंकज जी मोगरा 8 – राकेश जी देरासरिया, श्यामाबाई चौहान–झारणा, लीलाबाई कुदार–मन्दसौर, अविन जी पगारिया–जावरा, सुशीलजी गोरेचा–रतलाम, सरोज जी सहलोत–निम्बाहेड़ा, रश्मि जी पटवा–जावद, ब्यावर से– अनुराग जी नलवाया, वात्सल्य जी खाबिया, सुरेश जी गांधी, मिताली जी चौधरी, कोमल जी सोनी रंगवाला

-महेश नाहटा
श्रमणोपासक

नीमच में तीन पुस्तकों का विमोचन सम्पन्न

मध्यप्रदेश के नीमच जिले में आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के चिंतनों की तीन पुस्तकों का विमोचन 03 जुलाई 2023 को सम्पन्न हुआ। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की कार्यकारिणी एवं आम सभा बैठक के दौरान दो सत्रों में '**समझदार को इशारा**', '**एक ही काफी है**' और '**स्वरित**' नामक पुस्तकों का विमोचन हुआ।

साधुमार्गी पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित इन पुस्तकों में से '**समझदार को इशारा**' और '**एक ही काफी है**' हिंदी में हैं, जबकि '**स्वरित**' आचार्यश्री के चिंतनों का अंग्रेजी अनुवाद है। संघ के वर्तमान और पूर्व पदाधिकारियों की उपस्थिति में सम्पन्न कार्यक्रम में साधुमार्गी पब्लिकेशन के संयोजक ने पुस्तक की विषय–वस्तु से लोगों को परिचित कराते हुए कहा कि हिंदी की दोनों पुस्तकों में छोटी–छोटी ऐसी सूक्तियाँ हैं जो हर किसी के जीवन की दिशा और दशा बदलने में समर्थ हैं।

–साहित्य संयोजक

गोचरी : एक दुर्लभ अवसर

-सुरेश बोरदिया, मुम्बई

आहार प्रत्येक सांसारिक जीव की आवश्यकता है। जब तक शरीर रहता है तब तक आहार की आवश्यकता रहती है। यहाँ तक कि केवलज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् भी।

संयमी जीवन त्यागमय जीवन होता है। पाँच महाव्रतों में एक महाव्रत '**अपरिग्रह**' है, जिसमें मात्र जीवन निर्वहन एवं संयम साधना के लिए आवश्यक वस्तुएँ या उपकरण, तीर्थंकर भगवन्तों की आज्ञानुसार मर्यादित मात्रा में ही साधु-साध्वी अपने नेश्राय में रखते हैं। आहार या पानी का भी अग्रिम संग्रह करके नहीं रखते, बल्कि यथासमय गृहस्थों के घरों से थोड़ा-थोड़ा ग्रहण करके अपने संयमी जीवन का निर्वहन करते हैं।

संयम की साधना, पंच महाव्रतों की आराधना के लिए शरीर माध्यम होता है। प्राप्त मानव तन का सदुपयोग करने के लिए तन को स्वस्थ रखना होता है, जो बिना आहार-पानी के सम्भव नहीं होता। अत: आहार-पानी आवश्यक है। साधु-साध्वी स्वाद, रस या किसी विशिष्ट वस्तु की इच्छा से रहित होकर मात्र शरीर निर्वाह के लिए आहार ग्रहण करते हैं। जो कुछ निर्दोष आहार गृहस्थों के घर से मिल जाता है, उससे अपनी क्षुधा पूर्ति करके अपनी संयम साधना में लीन रहते हैं। कबीरदास जी ने कहा है-

कबीर काया कूतरी, करे भजन में भंग।
रुखी-सूखी डार के, करो भजन निःशंक।।

साधुओं की आहार पद्धति को '**गोचरी**' कहा गया है। गोचरी यानी गाय का चरना। गाय घास के बूँटे के ऊपरी अंश को थोड़ा-थोड़ा इस तरह चरती है कि उसकी उदरपूर्ति भी हो जाती है और घास के बूँटे को भी किसी तरह से कुछ हानि या फर्क न पड़े।

साधु-साध्वी भी अपनी उदरपूर्ति के लिए गृहस्थों के घर में स्वाभाविक रूप से बनने वाले निर्दोष आहार में से थोड़ा-थोड़ा आहार इस तरह ग्रहण करते हैं कि उनकी भी क्षुधा पूर्ति हो जाए और गृहस्थों को भी कुछ फर्क नहीं पड़े यानी इन्हें स्वयं के लिए पुन: आहार बनाने की जरूरत न पड़े।

साधुओं की आहार पद्धति को गोचरी या मधुकरी भी कहा जाता है। मधुकर यानी भ्रमर। भ्रमर वृक्ष के कई पुष्पों से थोड़ा-थोड़ा रसपान इस तरह करता है कि वह स्वयं भी तृप्त हो जाता है और पुष्प को जरा भी पीड़ा नहीं पहुँचती।

दशवैकालिक सूत्र में बताया गया है -

जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियई रसं।
न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेई अप्पयं।।

गोचरी या मधुकरी वृत्ति से आहार लेना साधुओं के लिए तीर्थंकर भगवन्तों द्वारा बताई गई विधि है। इस अवसर्पिणी काल में प्रथम गोचरी ग्रहण की- ऋषभदेव भगवान ने, बहराने वाले थे- श्रेयांस कुमार और द्रव्य था- इक्षुरस।

निर्दोष गोचरी के लिए साधु 42 दोष टालते हैं, उनमें से 16 दोषों का विवेक गृहस्थों को भी रखना चाहिए। गोचरी का अवसर मिलना दुर्लभ माना जाता है। जिस तरह पैसे से पैसा बढ़ता है, उसी तरह पुण्योदय से मिले हुए गोचरी के अवसर पर निर्दोष गोचरी बहराने से नवीन पुण्य का बंध होता है।

गोचरी बहराने वाला दाता, बहराया जाने वाला

आहार यानी द्रव्य एवं ग्रहण करने वाले साधु-साध्वी यानी पात्र, ये तीनों गोचरी के लिए अहम हैं। इन तीनों का निर्दोष और शुद्ध होना सुपात्रदान कहलाता है। सुपात्र का योग मिल जाने के बावजूद भी दाता एवं द्रव्य निर्दोष नहीं होने से दुर्लभ अवसर से हम वंचित रह जाते हैं। अत: गोचरी में हमें विवेक रखना चाहिए।

गृहस्थ को चाहिए कि भोजन बनाते समय अपनी आवश्यक मात्रा में ही बनाएँ। साधु-साध्वी के निमित्त अधिक मात्रा में नहीं बनाएँ। साधु-साध्वी के उद्देश्य से नियमित समय को आगे-पीछे नहीं करना यानी उनके लिए कुछ जल्दी या देरी से नहीं बनाना। साधु-साध्वी के उद्देश्य से कुछ विशेष द्रव्य नहीं बनाना जैसे अपने क्षेत्र में साधु-साध्वी विराजमान हों एवं उनकी अस्वस्थता या तपस्या के पारणे की स्थिति में उनके अनुकूल द्रव्य बना लेना, ऐसा नहीं करके सिर्फ हमारी आवश्यकतानुसार नियमित बनने वाले आहार में से ही निर्दोष आहार बहराने की भावना रखनी चाहिए।

गणेशाचार्य जी का फरमाना था कि **''भोजन बनाते समय साधुओं को याद करना नहीं और भोजन बन जाने के बाद साधुओं को भूलना नहीं।''**

भोजन बन जाने के बाद नित्य भावना भाएँ कि आज सुपात्रदान का योग मिले तो साधु-संतों को आहार बहराकर फिर मैं आहार करूँ। गोचरी बहराने वाले के मन में भावों की शुद्धता हो, द्रव्य शुद्ध हो, निर्दोष हो। जिन साधुओं के दर्शन मात्र के लिए देवलोक के देवता भी तरसते हैं, ऐसे साधुओं का गोचरी के निमित्त हमारे घर पधारना सहज ही हो जाता है। अत: हमारे मन में उनके प्रति अहोभाव होना चाहिए।

सुपात्रदान का अवसर शालिभद्र जी को पूर्वभव में मिला था। धन्ना गूजरी के पुत्र संगम का भव था उनका पूर्वभव। बाल्य अवस्था अभावों में बीत रही थी। माता किसी तरह गुजारा चला रही थी। प्रसंगवश मोहल्ले के सभी घरों में खीर बनी। मित्रों से संगम ने खीर का नाम सुना तो वह भी मचल उठा खीर खाने के लिए। माता ने खीर हेतु सामग्री का जुगाड़ करके खीर बनाकर थाली में परोस दी। संगम ने आज पहली बार खीर देखी थी और खाने को बड़ा अधीर हो उठा कि थाली में रखी खीर कब ठंडी हो और कब खाऊँ।

इतने में संगम ने सामने से साधु जी को अपने हाथों में पात्र लिए पधारते हुए देखा। यतनापूर्वक साधुजी संगम की ओर आगे बढ़ रहे थे। उनको देखते ही संगम प्रसन्न हो उठकर कुछ कदम उनके सामने गया और हाथ जोड़े। साधु जी ने पात्र नीचे रख दिए तो संगम ने बड़े भावों से अपनी थाली की सारी खीर उनके पात्र में बहरा दी। साधु जी अपने पात्र लेकर अपने स्थान के लिए पधारने लगे तो संगम कुछ कदम उनके पीछे-पीछे चला और फिर मुड़कर अपनी थाली के पास आकर बैठ गया।

इस प्रसंग पर बहुत कुछ विचार करना होगा। संगम आज पहली बार अपनी इच्छित वस्तु खीर खाने वाला था। न कभी इससे पहले खीर खाई थी और न ही कभी साधुओं को कुछ गोचरी बहराई थी। आज ही तो पहली बार अवसर मिला था गोचरी बहराने का, लेकिन उसकी भारी पुण्यवानी का उदय हुआ।

अगर संगम के विवेक की बात करें तो उस अबोध बालक का विवेक बड़ा उन्नत था। साधु जी को सामने आते हुए देखकर विनयपूर्वक खड़ा हुआ, कुछ कदम सामने चलकर गया, आदर सहित वंदन किया एवं पूरे अहोभाव सहित गोचरी में अपनी थाली की सारी खीर बहरा दी। जो सामने निर्दोष आहार था वही बहराया, अन्य किसी संशययुक्त वस्तु के लिए प्रयास तक नहीं किया। फिर जाते हुए साधु जी के पीछे चलकर कुछ कदम गया और मुड़कर अपने स्थान पर आकर बैठ गया। उसने अपने द्वारा बहराई गई गोचरी को गुप्त रखा, किसी से बताया तक नहीं। यहाँ तक कि अपनी माता को भी नहीं बताया।

यहाँ द्रव्य बिल्कुल निर्दोष व शुद्ध था। दाता

(संगम) पूरी तरह सूझता, भावों से भरा और पात्र-मुनिराज शुद्ध संयम की निर्मल आराधना करने वाले थे। आज जिनके मासखमण तप का पारणा, ऐसे शुद्ध, निर्दोष पात्र का संयोग। परिणाम अपूर्व सुपात्रदान में परिणत हो गया। संगम के महान पुण्य का बंध हो गया। ऐसी पुण्यवानी का बंध हुआ, जिसका फल आज तक याद किया जा रहा है। गोचरी बहराने के कुछ ही समय बाद संगम का आयुष्य पूर्ण हो गया और उसने उसी राजगृही नगरी में गोभद्र सेठ के घर गोभद्रा सेठानी की कुक्षि से जन्म लिया। उसका नाम शालिभद्र रखा गया। एक भव पूर्व संगम और उसका ठीक अगला भव शालिभद्र। कितना अन्तर है दोनों भवों में। कहाँ तो धन्ना गूजरी का संगम और कहाँ गोभद्र सेठ का शालिभद्र। यह किसका परिणाम था?

यह था उस निर्दोष आहार बहराने का परिणाम। जिस पुण्य का बन्ध किया था वह अब शालिभद्र के भव में उदय हुआ। सिर्फ एक ही बार तो गोचरी बहराई थी, लेकिन उसमें दाता, द्रव्य, पात्र सब शुद्ध, निर्दोष एवं दाता के भावों में उत्कृष्टता। हालाँकि गोचरी बहराते समय संगम ने किसी तरह के फल की कामना नहीं की थी, लेकिन पुण्य का फल तो मिलना ही है। शालिभद्र ने उस पुण्य के फल से जो ऋद्धि प्राप्त की थी उसके सामने मगध सम्राट श्रेणिक की ऋद्धि भी फीकी पड़ गई थी। उस पुण्य का क्रम चलता रहा। शालिभद्र ने समय आने पर संयम लिया, साधना की और संथारा संलेखना सहित आयुष्य पूर्ण करके सर्वार्थ सिद्ध विमान में उत्पन्न हुए और वहाँ का आयुष्य पूर्ण करके महाविदेह क्षेत्र में मनुष्य भव में जन्म लेकर उसी भव में मोक्ष को प्राप्त करेंगे।

गोचरी तो नागश्री ने भी बहराई थी, लेकिन उसके भावों में मलीनता थी और द्रव्य विषमय था, जो जीवन के लिए घातक था। नागश्री के हाथों कड़वे तुम्बे का पाक बन गया। वह उसे फेंकने का मौका देख रही थी कि इतने में धर्मरुचि अणगार, जिनके उस दिन मासखमण तप का पारणा था, उनका पधारना हो गया।

मुनि को देखकर तो संगम भी प्रसन्न हुआ था और अब नागश्री भी प्रसन्न हो रही है, लेकिन दोनों के भावों में बड़ा अन्तर था। संगम के मन के भाव शुद्ध थे, लेकिन नागश्री के भावों में मलीनता थी। न तो भावों में शुद्धता और न ही द्रव्य में शुद्धता। नागश्री के मन में गोचरी बहराने के भाव नहीं थे, बल्कि उस विषमय पाक को ठिकाने लगाने, उससे छुटकारा पाने के भाव थे और बड़ी प्रसन्नता के साथ उसने सारा पाक मुनि के पात्र में उड़ेल दिया। उस विषमय पाक को ग्रहण करने से मुनि के प्राणों का अन्त हो गया। संलेखना संथारा सहित आयुष्य पूर्ण करके वे सर्वार्थ सिद्ध विमान में उत्पन्न हुए।

अब देखिये नागश्री की स्थिति! परिजनों ने उसे ऐसे कृत्य के लिए तिरस्कार कर घर से निकाल दिया। नगरजनों ने भी तिरस्कार कर दिया। धीरे-धीरे असाध्य रोग फैलता गया और भयंकर वेदना के साथ मरण करके छठी नरक में गई।

दोनों प्रसंगों पर विचार करें तो पाएंगे कि गोचरी बहराने में हमें कितना विवेक रखना होता है। सर्वप्रथम तो भोजन बनाने में हम निर्दोषता का विवेक रखें। साधु-साध्वी को गोचरी के लिए पधारते देखकर मन में प्रसन्नता का अनुभव करें और कुछ कदम यतना (सावधानी) पूर्वक सामने जाएँ, अहोभाव पूर्वक निर्दोष, शुद्ध, कल्पनीय आहार बहराएँ तथा उसके बारे में किसी से चर्चा भी न करें।

एक बात हमें और ध्यान में रखनी चाहिए कि आहार ग्रहण करना साधु-साध्वी की आवश्यकता है, कोई मजबूरी या लाचारी नहीं। जैन साधु अभिमान से रहित होते हैं, लेकिन स्वाभिमान पूर्वक गोचरी पानी लेते हैं। किसी तरह की दीनता, हीनता या सांसारिक परिवार या परिचय के माध्यम से गोचरी नहीं लेते।

शालिभद्र जी ने दीक्षा लेकर भगवान महावीर के साथ विहार किया। बारह वर्ष बाद पुनः अपनी जन्मभूमि

राजगृही में भगवान के साथ पधारना हुआ। मासखमण के पारणे के लिए गोचरी पधारने लगे तो भगवान ने फरमाया कि आज आपका पारणा आपकी माता के हाथ से मिली हुई गोचरी से होगा।

भगवान के वचन सुनकर शालिभद्र मुनि, धन्नाजी मुनि के साथ सीधे गोभद्रा सेठानी (शालिभद्र मुनि की संसारपक्षीय माताजी) के घर पहुँचे। गोचरी का समय नहीं होने से वहाँ आहार नहीं मिला। इस पर वे घर से बाहर लौटकर कुछ आगे पधारे, लेकिन दोनों ने सोचा कि आज पारणा माता के हाथों से ही होना है तो फिर अन्यत्र क्यों जाना? वे फिर से पधारे गोभद्रा के घर, तो इस बार चौकीदारों ने दरवाजे पर ही रोक दिया, अन्दर जाने तक नहीं दिया।

देखिये, उन मुनिद्वय का स्वाभिमान! उन्होंने गोचरी के लिए अपना सांसारिक परिचय तक नहीं दिया। अगर परिचय दे देते तो उन्हें कौन रोकने वाला था? लेकिन उन्होंने किसी तरह की जान-पहचान नहीं बताई और मुड़कर चले गए।

मन में विचारों का प्रवाह चल रहा है कि भगवान ने माता के हाथों से पारणा होना फरमाया, दो बार माता के घर पधार भी गए, लेकिन गोचरी का संयोग नहीं मिला। विचारों के बीच निश्चय किया कि अब तीसरी बार उस घर नही जाएँगे और वे नहीं पधारे गोभद्रा के घर। हालांकि भगवान के वचनों के प्रति उनको किसी तरह का संदेह नहीं था, लेकिन स्वाभिमान पूर्ण रूप से था। वापिस पधारते समय शालिभद्र मुनि के पूर्वभव संगम की माता धन्ना गूजरी रास्ते में मिल गई और बड़े भावपूर्वक उसने दूध बहराया। भगवान के वचन सत्य थे और पारणा माता के हाथ से ही हुआ।

अत: हम भी साधु-साध्वी के स्वाभिमान को समझें और आदरपूर्वक व विनयपूर्वक गोचरी बहराने का विवेक रखें। ऐसा आहार बहराएँ जो निर्दोष हो, शुद्ध हो। द्रव्य की गुणवत्ता के बजाय शुद्धता, निर्दोषता पर ध्यान दें।

साधुओं के लिए आहार की शुद्धता ही गुणवत्ता है, श्रेष्ठता है। हमें शुद्धता को ही प्राथमिकता देनी चाहिए। घर में उपलब्ध आहार में कोई चीज कितनी भी अच्छी हो, लेकिन उसमें कोई दोष दिखाई दे रहा हो तो हमें वह चीज बहराने की भावना नहीं रखनी चाहिए। इसके विपरीत यदि कोई चीज ठण्डी भी है, अधिक सरस भी नहीं है, लेकिन अगर निर्दोष है तो वह बहराने में कोई शंका या विचार मन में नहीं करना चाहिए। साधु जीवन के बारे में जानकारी के अभाव में हमारे मन में ऐसे विचार आ जाते हैं जो निरर्थक हैं।

याद करें चन्दनबाला का प्रसंग। चन्दनबाला ने भगवान महावीर को क्या बहराया था? प्रभु के छ: मासी तप का पारणा और चन्दनबाला के हाथ में थे उड़द के बाकुले, वे भी बासी। चन्दनबाला ने वे बाकुले भगवान को नि:संकोच बहरा दिये थे और भगवान ने वे बाकुले स्वीकार किये क्योंकि वे निर्दोष थे, शुद्ध थे। उस निर्दोष गोचरी का उल्लेख आज तक किया जा रहा है।

सार यही है कि हम ऐसा आहार बहराएँ जो कि साधुओं के संयम के अनुकूल अवश्य हो। संयमी जीवन में सहायक शुद्ध आहार बहराकर उनके संयम में सहायक बनें, निमित्त बनें और भगवान द्वारा प्रदत्त '**अम्मा-पिया**' नाम को भी सार्थक करें।

श्रमणोपासक

"सूर्य के सामने आया हुआ सघन आवरण जैसे तेज हवा से बिखर जाता है, वैसे ही आत्मा के केवलज्ञान पर आए आवरण को सदाचार की तेज हवा से हटाया जा सकता है।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.

विविध समाचार

:: मेवाड़ अंचल ::

भीण्डर। शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवर जी म.सा. आदि ठाणा-7 का समता भवन में मंगल चातुर्मासिक प्रवेश हुआ। प्रवेश पश्चात् आयोजित प्रवचन सभा में साध्वी श्री जी ने फरमाया कि भगवान महावीर के समय से साधु-साध्वियों को चातुर्मास में एक जगह स्थिर होकर ज्ञान-ध्यान बढ़ाने एवं उपदेश देने का अवसर प्राप्त होता है। चातुर्मास में वर्षाकाल का समय होने से कई छोटे-बड़े जीव-जंतुओं की उत्पत्ति होना स्वाभाविक है। उन जीवों को अभयदान देने के लिए, चातुर्मास का समय स्वयं के लिए तथा भव्य जीवों के लिए आत्मकल्याण का शुभ अवसर है। कषाय आत्मा के शत्रु हैं। दान, शील, तप, भाव से आत्मा को सजावें।

इस अवसर पर कई श्रावक-श्राविकाओं ने नवकारसी, पोरसी, एकासन, आयम्बिल, उपवास, तेला सहित अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किये। गुरु पूर्णिमा के दिन अनेक तेले सम्पन्न हुए। शासन दीपिका साध्वीवर्या के सान्निध्य में प्रतिदिन प्रवचन, ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप का ठाठ लग रहा है। **-प्रकाशचंद्र कुदाल**

:: बीकानेर-मारवाड़ अंचल ::

गंगाशहर-भीनासर। श्री राकेश मुनि जी म.सा. के सान्निध्य में 18 से 25 जून तक 12 से 25 वर्ष तक के बच्चों हेतु '**अध्यात्म साधना के भौतिक सिद्धांतों पर जीवन निर्माण**' विषय पर शिविर का आयोजन श्री जवाहर विद्यापीठ, भीनासर में किया गया, जिसमें लगभग 350 बच्चों ने उत्साह के साथ भाग लिया। शिविर को सफल बनाने में संघ, महिला समिति, समता युवा संघ, बहूमण्डल, बालिका मण्डल सहित प्रत्येक सदस्य ने पुरुषार्थ किया।

श्री जवाहर विद्यापीठ, भीनासर की आमसभा 18 जून को श्री जयचन्दलाल जी डागा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें आगामी सत्र 2023-25 के लिए अध्यक्ष पद हेतु श्री राजकरण जी पुगलिया का सर्वसम्मति से मनोनयन किया गया। 9 जुलाई को कार्यकारिणी सभा में मंत्री मण्डल की घोषणा करते हुए महामंत्री लूणकरण सुराणा, उपाध्यक्ष कौशल जी दुगड़, इन्द्रचन्द जी दुगड़, निर्मल जी छल्लाणी, कोषाध्यक्ष अशोक जी भंसाली, सह-कोषाध्यक्ष विशाल जी बाँठिया, सुशील जी बच्छावत एवं सहमंत्री चन्द्रकुमार जी मिन्नी को मनोनीत किया गया।

-चन्दन बैद, लूणकरण सुराणा

नोखागाँव। शासन दीपक श्री विनय मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 का 29 जून को समता भवन में भव्य चातुर्मासिक प्रवेश हुआ। इस अवसर पर आस-पास के अनेक क्षेत्रों के गुरुभक्तों ने उल्लास से भाग लिया। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर 19 तेले हुए। चातुर्मास शुभारंभ पर सुन्दरलाल जी-कंचनदेवी लुणावत ने आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। तपस्या के क्रम में विजयकुमार जी सांड-देशनोक के 19 की तपस्या का प्रत्याख्यान हुआ, आगे तप जारी है। सुन्दरलाल जी सुराणा के 15 एवं प्रीति जी व चेतना जी लुणावत के 9 की तपस्या का पारणा हुआ। प्रकाशचंद जी सुराणा के सावन मास एकान्तर चल रहा है। उपवास, आयम्बिल, एकासन की लड़ी गतिमान है। रात्रि प्रतिक्रमण में अच्छी उपस्थिति रहती है।

श्री विनय मुनि जी म.सा. द्वारा प्रात: प्रार्थना पश्चात् कक्षा में जैन तत्त्वबोध का अध्ययन कराया जा रहा है। प्रवचन में श्रावक के 21 गुण, उदयभान चरित्र आदि की व्याख्या हो रही है।

श्री मधुर मुनि जी म.सा. उत्तराध्ययन सूत्र का 20वाँ अध्ययन समझा रहे हैं तथा दोपहर में महिलाओं की कक्षा में गोचरी, सूझता-असूझता आदि के विषय में समझाइश दे रहे हैं। रविवार को आशातीत उपस्थिति रहती है। अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं का दर्शन-वंदन हेतु पदार्पण हो रहा है। प्रवचन में जैनेतर लोगों की उपस्थिति भी रहती है। **-गंगाराम लुणावत**

:: जयपुर-ब्यावर अंचल ::

ब्यावर। **'व्यक्तित्व निर्माण व कदम अपनी अंतिम मंजिल की ओर'** शिविर का आयोजन स्मृतिशेष स्नेहलता जी बडौला की पुण्यस्मृति में 15 से 22 जून तक किया गया, जिसमें लगभग 300 बच्चों ने भाग लिया। शिविर में श्री हिमांशु मुनि जी म.सा., श्री धीरज मुनि जी म.सा., श्री लाघव मुनि जी म.सा., श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. एवं साध्वी श्री प्रज्ञा श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रेक्षा श्री जी म.सा., साध्वी श्री ह्रींकार श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुखदा श्री जी म.सा. ने विविध विषयों पर ज्ञानार्जन कराया। सुशील जी मेहता, निर्मल जी कोठारी, डिम्पल जी बोथरा-बीकानेर, अनिता जी मुणोत, रचना जी कोठारी, रुचि जी कोठारी, सोनल जी लोढा आदि ने अध्यापन सेवाएँ दीं। संघ पदाधिकारियों द्वारा शिक्षकों एवं शिविर लाभार्थी परिवार का शॉल, माला, मोमेंटो से सम्मानित किया गया।

शिविर में बच्चों को सामायिक सूत्र, पच्चीस बोल, चौबीस तीर्थंकर, सोलह सतियाँ, बीस विहरमान, प्रतिक्रमण, प्रभावी भाषण कला, अढ़ाई द्वीप, कालचक्र, दशवैकालिक सूत्र आदि का अध्ययन करवाया गया। अनेक प्रमुखगणों ने बच्चों का उत्साहवर्द्धन किया। शिविर में श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मण्डल, समता युवा संघ के पदाधिकारियों ने सेवाएँ दी।

-नोरतमल बाबेल

श्यामपुरा। शासन दीपिका साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री कविता श्री जी म.सा., साध्वी श्री विभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 का कुण्डेरा से 6 किमी. विहार कर जैन स्थानक में 25 जून को मंगल प्रवेश हुआ। प्रवेश पश्चात् साध्वीवर्याओं ने मंगलपाठ फरमाते हुए गुरु-भगवंतों के प्रति अहोभाव व्यक्त किये। मंगल प्रवेश के अवसर पर आस-पास के अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही। **-ओमप्रकाश जैन**

सवाईमाधोपुर। शासन दीपक श्री चिन्मय मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-3 के पावन सान्निध्य में बालक-बालिकाओं का धार्मिक एवं नैतिक संस्कार शिविर 10 से 16 जून तक आयोजित किया गया, जिसमें 40 बच्चों ने भाग लिया। मुनि श्री ने मांगलिक फरमाते हुए बच्चों को नैतिक शिक्षा की विशेष जानकारी प्रदान की। बच्चों को अलग-अलग कक्षाओं में सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी आदि का अध्ययन कराया गया एवं शुद्ध उच्चारण सिखाया गया। इस दौरान नौ आचार्यों पर आधारित लिखित परीक्षा भी ली गई। शिविर में नीतू जी जैन, खुशबू जी जैन, रविप्रकाश जी, अजय जी, सुरेशचन्द जी ने अध्यापन सेवाएँ दीं।

शिविर समापन समारोह में वरीयता सूची में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों का बहुमान करते हुए सभी शिविरार्थियों को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर स्थानीय सदस्यों की आशातीत उपस्थिति रही। **-सुरेशचन्द जैन**

:: छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल ::

रायपुर। 'महत्तम महोत्सव' के अंतर्गत 'अब कर कमाल 2.0' ग्रैंड फिनाले की 'ट्रेजर हंट' प्रतियोगिता 18 जून को समता धाड़ीवाल ज्ञान भवन में पाठशाला के बच्चों के मध्य करवाई गई, जिसमें बच्चों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस आयोजन में बच्चों को धार्मिक

प्रश्न-पत्रों के साथ-साथ हिंट देकर 'मुझे पहचानो मैं कौन', कैटर पिलर दौड़ लगाकर अपने स्थान पर पहुँचकर पूछे गए प्रश्नों का जवाब देना, आबरा का डाबरा, मुझे मिल गया मेरा क्लू जैसे रोचक व मनोरंजक गेम भी खेलाए गए। आयोजन को सफल बनाने में संस्कार पाठशाला जोनल प्रभारी, बहूमंडल अध्यक्षा, कोषाध्यक्षा, पाठशाला शिक्षक सहित अनेक जनों की अहम भूमिका रही।

गीदम। श्री छत्तीसगढ़ महाकौशल शिविर ट्रस्ट एवं ओसवाल जैन श्रीसंघ, गीदम के संयुक्त तत्वावधान में ग्रीष्मकालीन जैन धार्मिक संस्कार शिविर का आयोजन 14 से 21 जून तक ओसवाल भवन में आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 140 बच्चों तथा 60 महिलाओं ने भाग लिया। शिविर में जैन शिक्षा के साथ ही राष्ट्रधर्म, अनुशासन आदि विविध विषयों पर मार्गदर्शन किया गया।

समापन कार्यक्रम मुख्य अतिथि अशोकचंद जी बुरड़, संघ उपाध्यक्ष तथा वरिष्ठजनों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। शिविरार्थियों एवं शिक्षिकाओं को महाकौशल शिविर ट्रस्ट की ओर से सम्मानित किया गया। 21 जून को योग दिवस पर '**आचार्य श्री नानेश की चिंतन मणियाँ**' पुस्तक के माध्यम से बच्चों को ध्यान करवाकर योग की शिक्षा दी गई। शिविर के सफल आयोजन के लिए सभी का आभार व्यक्त किया गया।

प्रवास यात्रा

छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल साधुमार्गी जैन संघ की तीनों इकाइयों के अध्यक्ष-मंत्री, वरिष्ठ सदस्यगण, विहार संयोजक, शिविर ट्रस्ट कोषाध्यक्ष, कार्यसमिति सदस्यगण एवं महत्तम महोत्सव आंचलिक प्रमुख का दो दिवसीय प्रवास 15 व 16 जुलाई 2023 को हुआ। प्रवास के प्रथम दिवस दुर्ग में महासतीवर्याओं के दर्शन, वंदन एवं मांगलिक श्रवण पश्चात् प्रवास प्रारंभ हुआ, जिसमें सर्वप्रथम राजनांदगाँव में प्रवचन, मीटिंग पश्चात् डौंडीलोहारा, डौंडी, कोण्डागाँव में स्थानीय सदस्यों के साथ बैठक हुई। रात्रि विश्राम कोण्डागाँव में हुआ।

द्वितीय दिवस गीदम में शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. के प्रवचन का लाभ लेने के पश्चात् मीटिंग आयोजित हुई। सभी संघों में महत्तम महोत्सव प्रकल्प के 9 बिंदुओं के बारे में जानकारी दी गई। इस दौरान तप-त्याग विवेक प्रकल्प के तहत एकासन, आयंबिल, उपवास व तेला तप की प्रभावना की गई।

संस्कार एवं ज्ञानार्जन प्रकल्प पर महिला समिति बहिनों ने प्रभावना करते हुए विस्तृत जानकारी दी। पाठशाला, शिविर, जन-जन में राम, गुदड़ी के लाल और प्रतिक्रमण सीखने वालों सहित पाठशाला में अध्ययन की जानकारी ली गई। समता युवा संघ द्वारा समता शाखा में उपस्थिति बढ़ाने और युवा सदस्यों की सूची अपडेट करने हेतु निवेदन किया गया। **-प्रिंस जैन**

:: तमिलनाडु अंचल ::

चेन्नई। श्री साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आषाढ़ सुदी चतुर्दशी चौमासी पर्व (02 जुलाई) से द्वितीय श्रावण सुदी पंचमी (21 अगस्त) संवत्सरी महापर्व तक चातुर्मासिक धर्माराधना हेतु समता भवन कोंडीतोप में प्रतिदिन सुबह वरिष्ठ स्वाध्यायियों द्वारा धार्मिक उद्बोधन कार्यक्रम आयोजित किया गया है।

चौमासी पर्व पर अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। इस दिन 10 तेले, 2 बेला, 100 से ज्यादा उपवास एवं काफी संख्या में एकासन-बियासना आदि की तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए। 9 जून को सामूहिक एकासन के आयोजन में 111 से अधिक तप हुए। सामायिक सूत्र की ओपन बुक परीक्षा में 49 परीक्षार्थियों ने भाग लिया। श्रीमती प्रियश्री जी सेठिया एवं सुश्री करिश्मा जी पुगलिया ने 9 की तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। संघ द्वारा इनका बहुमान किया गया। **-कन्हैयालाल झाम्बर**

:: मुम्बई-गुजरात अंचल ::

वापी। शासन दीपिका साध्वी श्री सुमनप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-11 का 25 जून को स्थानक भवन में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। प्रवेश यात्रा में सम्पूर्ण मार्ग जय-जयकारों से गुंजायमान रहा। प्रवेश के पश्चात् साध्वी श्री मर्यादा श्री जी म.सा. के तेला एवं अन्य सभी चारित्रात्माओं ने कुछ न कुछ तपस्याएँ कीं। गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में 14 तेले हुए। तप क्रम में 11, 9, अठाई 2 एवं 5 आदि तपस्याएँ हुईं। उपवास एवं एकासन की लड़ी चल रही है।

'मेरे कर्म मेरी आत्मा' विषय पर तीन दिवसीय शिविर के आयोजन में लगभग 60 बहिनों की उपस्थिति रही। साध्वी श्री मर्यादा श्री जी म.सा. ने प्रेरणा देते हुए 'कर्मों की निर्जरा कैसे करें' विषय पर मार्गदर्शन दिया। महासतीवर्याओं की प्रेरणा से 16 जुलाई को लगभग 65 सामूहिक एकासन हुए। साथ में सामायिक का धर्मचक्र भी चला। **-संगीता तलेसरा**

श्रमणोपासक

प्रवास समाचार

श्रीसंघ एवं महिला समिति का पूर्वोत्तर अंचल प्रवास व क्षेत्रीय सम्मेलन सम्पन्न

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ व श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति के केन्द्रीय पदाधिकारियों का 16 से 21 जून 2023 तक 6 दिवसीय पूर्वोत्तर अंचल का संयुक्त प्रवास हुआ। इस दौरान महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा द्वारा सर्वधर्मी सहयोग, समता छात्रवृत्ति योजना, संघ, संगठन एवं सुदृढ़ता आदि पर तथा राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा महिला समिति की ओर से संचालित प्रवृत्तियों, संगठन, गोल्डन स्टेप आदि पर एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा द्वारा महत्तम महोत्सव पर विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए इनसे जुड़ने हेतु प्रभावना की गई।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने संघ, संगठन व सुदृढ़ता, आचार्य भगवन् के आयामों तथा संघ की हमारे जीवन में महत्ता पर विशेष प्रभाव डालते हुए प्रेरणादायी वक्तव्य में कहा कि **आचार्य भगवन् के सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव 'महत्तम महोत्सव'** जैसा सुअवसर जीवन में पुन: प्राप्त नहीं हो सकता। इससे प्रत्येक सदस्य जुड़ें तथा अन्यों को भी जोड़ें।

संघ के राष्ट्रीय महामंत्री ने प्रत्येक क्षेत्र के डाटा के साथ क्षेत्र की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने स्थानीय संघों की संघ में महत्ता, समता संस्कार पाठशालाओं से बच्चों को अधिक से अधिक जोड़ने, संघ आबद्धता से सभी स्थानीय संघों को जुड़ने, ग्लोबल कार्ड का कार्य पूर्ण करवाने हेतु सदस्यों ने निवेदन किया।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ने आचार्य श्री श्रीलाल स्मृति उच्च शिक्षा योजना, समता भवन प्रवृत्ति, दानपेटी योजना तथा इदं न मम की प्रभावना करते हुए सभी परिवारों को इससे जुड़ने और संघ विकास में अपना योगदान देने की अपील की।

अंचल राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने बैठक में पधारने वाले महानुभावों का अभिनंदन एवं आभार ज्ञापन किया। बैठक संचालन राष्ट्रीय मंत्री ने किया। प्रवासी दल के साथ महिला समिति की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा, राष्ट्रीय मंत्री एवं कार्यसमिति सदस्य भी उपस्थित रहे।

प्रवास के अन्तर्गत सिलचर, लालाबाजार, पथारकांदी, करीमगंज, बदरपुर, गुवाहाटी, बिलासीपाड़ा, कोकराझार, बंगाईगाँव, ग्वालपाड़ा, सिलापथार, हवली, डिब्रुगढ़ आदि क्षेत्रों में प्रभावी संघ जागरणा की गई।

विशेष उपलब्धियाँ :

1. उदारबंद में श्री शांतिलाल जी विनोदकुमार जी भूरा के यहाँ स्नेह मिलन।
2. सिलचर में वीरभ्राता श्री अखेचंद जी सोनावत व आचार्य भगवन् की संसारपक्षीय बहिन श्रीमती इंद्रादेवी बरड़िया व वरिष्ठ श्राविका श्रीमती बकादेवी सेठिया से स्नेह मिलन।
3. कच्छार कैंसर हॉस्पिटल व रिसर्च सेन्टर में श्री साधुमार्गी जैन संघ, सिलचर द्वारा पूर्व में प्रदत्त हेल्प डेस्क का अवलोकन किया तथा वहाँ पर सेवा प्रदान कर रहे पद्मश्री पुरस्कार प्राप्त डॉ. रवि जी कन्नान (डायरेक्टर) से हॉस्पिटल के विषय में चर्चा।
4. करीमगंज में वर्षीतप साधिका श्रीमती ज्ञानीदेवी भूरा (23 वर्षीतप पूर्ण) से स्नेह मिलन।
5. प्रवास टीम ने समता संस्कार पाठशाला के बच्चों द्वारा लगाई गई महत्तम महोत्सव, सामायिक, कर्मसिद्धांत, व्यसनमुक्ति, जैन धर्म तथा संघ द्वारा संचालित विविध प्रवृत्तियों की प्रदर्शनी का

ज्ञान गंग निर्मल मन बहती

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

शांति जिन एक मुझ विनति, सुणो त्रिभुवन राय रे।
शांति स्वरूप केम जाणिये, कहो मन केम परखाय रे।।
धम्म सद्धा हृदे धरूं, धर्म बने मुझ प्राण।
धर्म आराधन नित करूं, धर्म सदा सुख त्राण।।
'ज्ञान गंग निर्मल मन बहती, बहती मन को चंगा रखती'

मन निर्मल होगा, पवित्र होगा, पावन होगा तो उसमें ज्ञान की गंगा का प्रवाह होगा। सामान्यतः गंगा को पवित्र माना गया है, किंतु ज्ञान गंगा की पवित्रता का तो कहना ही क्या। मन के दूषणों से या मन के दूषित हो जाने से ज्ञान गंगा दूषित न हो जाए, इसलिए सदा मन को पवित्र बनाए रखना बहुत जरूरी है। पुण्यानुबंधी पुण्य का योग होता है तो मन पवित्र बना रहता है। उसमें काम वासना, विषय वासना न तो जन्मती है, न ही रह पाती है। उसमें निष्काम भाव प्रधान होता है और निष्काम भाव से मन पवित्र रहता है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना निष्काम भाव से होती है। जहाँ कामना प्रवेश कर जाती है, वहाँ घालमेल हो जाता है, मिलावट हो जाती है। मूल स्वभाव गायब हो जाता है। पवित्रता का हनन होने लगता है।

'ज्ञान गंग निर्मल मन बहती'

जिसका मन निर्मल होता है, जिसका मन पावन होता है, जिसका मन पवित्र होता है उसमें ज्ञान गंगा का प्रवाह बना रहता है। हम सोचते हैं कि हमको ज्ञान चढ़ता नहीं है, याद रहता नहीं है। हम अपने मन को पवित्र बना लें तो याद भी होने लगेगा और ज्ञान भी बढ़ने लगेगा। ज्ञान को गंगा की उपमा दी गई है। एक जगह जमा हुआ ज्ञान भी सम्यक् नहीं रह पाएगा।

आर्य सुधर्मा स्वामी ने भगवान महावीर से ज्ञान प्राप्त किया। सुधर्मा स्वामी ने जम्बू स्वामी के निवेदन करने पर जम्बू स्वामी को ज्ञान दिया। जम्बू स्वामी ने प्रभव स्वामी को ज्ञान दिया। प्रभव स्वामी ने शय्यंभव स्वामी को ज्ञान दिया। इस प्रकार से ज्ञान की गंगा प्रवहमान बनी रही।

इस नीति का भाव स्पष्ट है कि ज्ञान को आगे से आगे बढ़ाते रहना। जो ज्ञान हमने पाया है, वह आगे-से-आगे दूसरों को देते रहना। आगे-से-आगे वितरित करने रहना। ज्ञान को हम जितना प्रवाही बनाएंगे, उतना ही जन-जन के कलुषित मन को पवित्र बनाने का काम करेंगे। ज्ञान किसी को देना नहीं चाहेंगे व सोचेंगे कि मेरे पास ही रहे तो वह तालाब या कुएं के रूप में बनकर रह जाएगा। वह ज्ञान गंगा का रूप नहीं ले पाएगा।

'बहता पानी निर्मला'

जैसे पानी बहता हुआ निर्मल होता है, निर्मल रहता है, वैसे ही ज्ञान की गंगा भी बहती हुई निर्मल रहती है। ज्ञान से मन को पवित्र बनाया जाना चाहिए और पवित्र मन में ज्ञान का झरना निरंतर बहते रहना चाहिए। जिस व्यक्ति के पास जो वस्तु होती है, उसी पर उसका ध्यान होता है। हमारे मन में यदि ज्ञान होगा तो निरंतर ज्ञान के अध्यवसाय चलते रहेंगे। कोई भी

प्रवास के मैटर का शेष भाग इन 4 पिन पेज के बाद पढ़ें।

छोटी-मोटी बात होगी, वह हमारी ज्ञान चेतना को जगाने वाली होगी।

समुदाय में रहने पर जीवन में उतार-चढ़ाव नहीं आए, यह कम संभव है, असंभव है किंतु उतार-चढ़ाव में अपने मन को शमित रखना, उपशांत रखना ज्ञान का प्रभाव है। ज्ञान के प्रताप से ही हम अपने मन को शांत रख सकते हैं, समाधि में रख सकते हैं। शांत मन समाधि देने वाला होता है। अशांत मन से बहुत सारी समस्याएं खड़ी होती रहती हैं। समस्याओं का समाधान शांत मन से स्वतः ही हो जाता है। अशांत मन स्वयं में एक समस्या है और जहाँ एक समस्या खड़ी होती है, वहाँ ढेरों समस्याएं खड़ी हो जाती हैं। निर्मल मन में ज्ञान गंगा बहती रहती है। ज्ञान गंगा मन को सदा चंगा बनाए रखती है, निर्मल बनाए रखती है। ज्ञान की धारा प्रवाहित होती रहेगी तो मन विषमता में नहीं जाएगा। मन में समता बनी रहेगी, शांति बनी रहेगी, मन समाहित रहेगा।

आज मासखमण का घर है। मासखमण के घर का मतलब है कि आज से चालू की गई तपस्या संवत्सरी तक मासखमण कराने वाली हो जाएगी। मैं कितनी तपस्या कर पाऊंगा, कितनी नहीं, यह बात दिमाग से हटाकर उपवास से चालू करें। अच्छा लगे तो बेला कर लें। अच्छा लगे तो तेला कर लें। और ज्यादा अच्छा लगे तो आगे बढ़ते रहें। जिस दिन लगे कि शरीर साथ नहीं दे रहा है, मन साथ नहीं दे रहा है, तो पारणा करने में भी कोई ऐतराज नहीं है, क्योंकि मन, वचन और काया की समाधि रहने तक ही तपस्या करना ठीक रहता है।

कहा गया है- **'सव्व समावत्तिया गारेणं'** अर्थात् सर्व प्रकार से समाधि भाव का आगार तपस्या में भी रहता है। मन को समाधि में लाने के लिए तपस्या की जाती है। तपस्या से यदि मन अशांत हो जाता है तो मन में असमाधि आ जाती है। ऐसी तपस्या लाभदायी नहीं होती।

ध्यान में लेना सबसे प्राथमिक सूत्र है कि मन समाधि में बना रहे, मन असमाधि में नहीं जाए। मन को समाधि में लाने के लिए तपस्या की जाती है, न कि मन की समाधि खोने के लिए। जहाँ से भी मन की समाधि टूटती हो, वहाँ से डायवर्ट हो जाना चाहिए। यदि मन और तन की समाधि बनी हुई है, तो मासखमण में भी कोई ऐतराज नहीं है। आज मासखमण का घर है। यदि आज से तपस्या चालू हो तो संवत्सरी तक मासखमण हो जाएगा।

संवत्सरी महापर्व की आराधना कब होगी?

(श्रोतागण बोले- 21 अगस्त को हो जाएगी)

इस वर्ष दो श्रावण होने से भिन्नताएं सामने आ रही हैं। किन्हीं ने कहा कि वॉट्सएप पर कई चर्चाएं चल रही हैं। दो-तीन दिन पहले किसी ने उपाध्याय प्रवर को पत्र दिया, उन्होंने वह पत्र मुझे दिया।

वॉट्सएप में कुछ भी चले, उससे हमारा सम्बन्ध नहीं है। यदि कोई हमें वॉट्सएप पर संदेश दे रहे हैं तो उनको ज्ञान होना चाहिए कि वॉट्सएप हम चलाते नहीं। हमें नहीं पता कि क्या संदेश दिया जा रहा है, क्या कहा जा रहा है! एक पत्रावली हमको मिली। उसमें लिखा था कि साधुमार्गी संघ ने भी भादवा महीने में संवत्सरी पर्व मनाने का समर्थन किया है।

हमने किसी को कोई समर्थन नहीं किया। हमारी बात पहले भी स्पष्ट थी और आज भी स्पष्ट है। हमें सोचने की कोई आवश्यकता नहीं है।

आचार्य पूज्य श्री नानालाल जी म.सा. ने राजमार्ग बना रखा है। आज से लगभग 50 वर्ष पहले उन्होंने घोषणा की थी कि **'सारा जैन समाज एक होता है तो मैं तैयार हूँ। सारा जैन समाज यदि तैयार नहीं होता हो एवं केवल सारा श्वेताम्बर जैन समाज एक संवत्सरी मनाता है तो भी मैं उसमें तैयार हूँ। यदि श्वेताम्बर जैन**

समाज भी तैयार नहीं होता हो और केवल सारा स्थानकवासी समाज तैयार होता है, तो मैं उसमें भी तैयार हूँ। मेरा आग्रह न श्रावण के लिए है, न भाद्रपद के लिए, न आसोज के लिए, न ही चतुर्थी व पंचमी के लिए। कोई भी महीना हो व कोई भी तिथि हो, उक्त स्थिति में मैं उसके लिए तैयार हूँ।'

आज भी हम उसी रास्ते पर हैं। कल भी तैयार थे, आज भी तैयार हैं और आगे भी तैयार रहेंगे।

पूज्य श्री सरदार मुनि जी (गुजरात बरवाला सम्प्रदाय) और दरियापुरी संप्रदाय के पूज्य श्री वीरेंद्र मुनि जी के पत्र आए थे। उनको निवेदन करवाया था कि यदि स्थानकवासी संप्रदाय की संवत्सरी एक दिन होती है तो हम उसमें तैयार हैं, किंतु यदि एक भी संप्रदाय वंचित रहता है, तो सारे स्थानकवासी की एकरूपता नहीं बनती है, वैसी स्थिति में जो हमारी धारणा है, जो हमारी मान्यता है उस पर हम अडिग हैं।

हमारी जानकारी के अनुसार पूरा स्थानकवासी जैन समाज एक दिन संवत्सरी की आराधना नहीं कर रहा है। बहुमत की, अल्पमत की बात अलग होती है। यहाँ कोई चुनाव नहीं है कि बहुमत-अल्पमत पर विचार करें।

पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. जलगाँव चातुर्मास संपन्न कर रहे थे। उस समय 'भारत जैन महामंडल' का एक शिष्टमण्डल गुरुदेव के पास आया। उसने संवत्सरी के विषय पर चर्चा की और कहा कि 55 प्रतिशत लोग हमारे साथ हो गए हैं। हम घोषणा कर रहे हैं कि भाद्रपद सुदी पंचमी को संवत्सरी मनाई जाएगी। वह महामंडल अभी तो प्रायः सोया हुआ है। उस समय भी सोया हुआ ही था। कभी-कभी फंक्शन के समय जाग जाता।

गुरुदेव ने उस शिष्टमण्डल से कहा, आपने इतना प्रयत्न किया, इतना बहुमत हो गया तो थोड़ा और साधो। जल्दी मत करो। बहुमत-अल्पमत राजनैतिक क्षेत्र में भी समस्या बना हुआ है। इसलिए अल्पमत और बहुमत को महत्त्व नहीं देते हुए थोड़ा और प्रयत्न करना चाहिए। वे जल्दबाजी में थे। 1986 या 1987 में वे कोई कार्यक्रम करवाने जा रहे थे। राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह उस कार्यक्रम में आने वाले थे। राष्ट्रपति के मुँह से घोषणा करवानी थी। उन्होंने उनके मुँह से घोषणा करवाई।

कितने वर्षों तक वह घोषणा चली? ऐसी घोषणा कितने सालों तक काम आएगी?

लोग कहने लगे कि हम तो वही करेंगे, जो भारत जैन महामंडल ने तय किया है, मैंने मन में सोचा- जैन समाज किसी संस्था के आधार पर नहीं चलता। जैन समाज धर्मगुरुओं के उपदेशों से चलता है। धर्मगुरु जब तक उस बात को स्वीकार नहीं करेंगे, तब तक वह बात संभव नहीं हो पाएगी। तब तक एकता संभव नहीं है। और वही हुआ। भारत जैन महामण्डल ने घोषणा की। किंतु वह घोषणा धरी की धरी रह गई।

साधुमार्गी संघ प्रायः श्रमणसंघ के साथ संवत्सरी पर्व मनाता रहा था। श्रमणसंघ भी दो श्रावण होने पर दूसरे श्रावण को संवत्सरी पर्व मनाता रहा था। दो भाद्रपद हो तो प्रथम भाद्रपद में संवत्सरी पर्व मनाता था। अर्थात् चातुर्मास चालू होने के बाद एक महीना, 20 रात्रि पर संवत्सरी पर्व की आराधना का लक्ष्य रहता था।

1987 में श्रमणसंघ का पूना में अधिवेशन हुआ। तब उन्होंने अपनी एक नई परंपरा स्थापित कर ली। उन्होंने न किसी को साथ लेने का सोचा और न किसी से पूछा। दो श्रावण होंगे तो भाद्रपद में और दो भाद्रपद होंगे तो पहले भाद्रपद में संवत्सरी पर्व मनाने की नई परंपरा स्थापित की। उनके सामने अपनी समस्याएं रही होंगी, क्योंकि श्रमणसंघ में 50वें दिन

संवत्सरी पर्व की मान्यता वाले संत-साधु भी है और दो भाद्रपद होने पर दूसरे भाद्रपद में संवत्सरी पर्व मनाने वाले भी है। इसलिए समीकरण बनाकर एक फैसला कर लिया होगा। उसके बाद कहीं हम साथ में रहे, कहीं नहीं रहे। वही स्थिति वर्तमान में बनी हुई है।

वर्तमान में जब पूरा स्थानकवासी समाज भी एक साथ संवत्सरी पर्व मनाने को तैयार नहीं, तो पूरे जैन समाज की तो बात ही क्या की जाए! ऐसी स्थिति में हम अपनी मान्यता, अपनी मर्यादा पर कायम हैं, दृढ़ हैं। न केवल हम, बल्कि और भी कई सम्प्रदाय इसी रूप में संवत्सरी पर्व की आराधना करने का सोच रही हैं। अपना अभिमत हमने श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष श्री गौतम जी रांका को बता दिया था।

यदि पूरा जैन समाज अथवा श्वेताम्बर जैन समाज या स्थानकवासी जैन समाज एक होता तो आचार्य पूज्य श्री नानालाल जी म.सा. का सपना साकार होता और हम उसके लिए तैयार थे व हैं। हम कल भी तैयार थे, आज भी तैयार हैं और कल भी तैयार रहेंगे। किंतु जब तक एकता नहीं हो, तब तक हम अपने स्थान पर मौजूद हैं। कभी कुछ बदले, कभी कुछ बदले, इससे बढ़िया है कि हम अपने स्थान पर मौजूद रहें।

उसी भावना से हम अपनी मान्यतानुसार चातुर्मास के 1 माह 20 रात्रि पर महापर्व संवत्सरी मना रहे हैं। हमने किसी को समर्थन दिया ही नहीं तो लेने की बात का प्रश्न ही कहाँ रह जाता है। हमारी अपनी विचारधारा अतः हमारे पूर्वजों की देन और हमारी धारणा को बिना किसी ठोस आलंबन के छोड़ना हमारे मन को नहीं भाया। हाँ! यदि पूरे स्थानकवासी समुदाय की संवत्सरी एक होती तो हम भी उसमें सहमत हो जाते, किंतु वैसा नहीं होने से अपनी मान्यता को कायम रखना उचित लगा। तदनुसार आज मासमखण का घर है।

यदि हिम्मत करते हैं, मन कमजोर नहीं बनाते हैं तो आज से चालू की गई तपस्या संवत्सरी के दिन मासखमण के रूप में पूर्ण हो जाएगी। अपना मन कमजोर करने की बात नहीं है।

नीमच संघ ने कल बताया कि आज का दिन हम उपवास दिवस के रूप में मनाना चाहते हैं। किंतु इतना अवश्य है कि आज के दिन मासखमण की भावना से उपवास करते हैं और मासखमण नहीं भी कर पाए तो भावना का लाभ मिलेगा।

भावना का लाभ मिलेगा या नहीं मिलेगा?

(श्रोतागण बोले- भावना का लाभ मिलेगा)

जोर से बोलो किस-किसकी भावना बन रही है?

मैंने इस बात को बहुत स्पष्ट कर दिया है। आगे तपस्या नहीं हो पाए तो पारणा कर सकते हैं, किंतु आज क्या करना है?

(श्रोतागण बोले- आज उपवास करना है)

किस रूप में करना है?

(श्रोतागण बोले- मासखमण की भावना के रूप में करना है)

और यह पवित्र मन रहेगा तो- '**जाए सद्धानिम्खंतो तमेवअणुपालिया**' अर्थात् जिस उत्साह से, जिस उमंग से तपस्या चालू करें, उसी उत्साह से तपस्या संपन्न करने का लक्ष्य रखें। यह भगवान महावीर का सूत्र है। किसी भी कार्य के प्रारंभ में जैसा उत्साह रहता है, वैसा ही उत्साह आगे भी बना रहना चाहिए। वैसा ही उत्साह बना रहेगा तो कार्य संपन्न होने में कहीं से रुकावट नहीं आएगी।

-23 जुलाई 2023 को नीमच में फरमाए गए प्रवचन का अंश

अवलोकन कर बच्चों के पुरुषार्थ को सराहा।

6. गुवाहाटी में क्षेत्रीय सम्मेलन के दौरान अंचल राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुन्दरलाल जी पींचा ने महाप्रभावक सदस्यता हेतु अपनी स्वीकृति सहर्ष प्रदान की।
7. श्री घेवरचंद केशरीचंद गोलछा ट्रस्ट द्वारा 5 लाख रुपये संघ सहयोग के अंतर्गत प्रदान किये गये।
8. श्रीमती उर्मिलादेवी धर्मपत्नी श्री सुन्दरलाल जी सिपानी द्वारा 1 लाख रुपये महिला समिति के अंतर्गत प्रदान करने की घोषणा की गई।
9. श्री साधुमार्गी जैन संघ, गुवाहाटी द्वारा दानपेटी योजना में 1 लाख रुपये प्रदान करने की घोषणा की गई।
10. श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ व महिला समिति का एक दल असम के महामहिम राज्यपाल श्री गुलाबचंद जी कटारिया से राज्य भवन में उनके कार्यालय में उपस्थित होकर स्नेह मिलन किया व अभिनंदन पत्र एवं संघ साहित्य भेंट किया।
11. गुवाहाटी में वीर परिवारों से स्नेह मिलन एवं गुवाहाटी स्थानीय श्रीसंघ एवं युवा संघ की कार्यकारिणी के साथ बैठक का आयोजन।
12. हवली में स्थानीय संघ की बैठक के दौरान श्री साधुमार्गी जैन संघ, हवली संघ का पुनर्गठन।
13. ग्वालपाड़ा में तपस्विनी श्रीमती सायरदेवी भूरा का बहुमान किया गया, जिनका 32वाँ वर्षीतप गतिमान है।
14. श्री साधुमार्गी जैन संघ, बंगाईगाँव ने संघ आबद्धता हेतु स्वीकृति प्रदान की।
15. सिलापथार में तपस्विनी श्रीमती अनिता जी संचेती का बहुमान किया गया, जिनका छठा वर्षीतप गतिमान है। सिलापथार समता भवन का अवलोकन किया गया तथा निर्माण में सहयोग हेतु स्वीकृति प्रदान की गई।
16. डिब्रुगढ़ में स्थानीय संघ सदस्यों के साथ बैठक उपरांत प्रवास सम्पन्न हुआ।

क्र.सं.	प्रवृत्ति का नाम	सहयोगी
1.	महाप्रभावक सदस्यता	2 सदस्य
2.	प्रभावक सदस्यता	1 सदस्य
3.	इदं न मम (69 नवीन व 21 पुरानी घोषणाएँ)	90 सदस्य
4.	महत्तम महोत्सव	1 सदस्य
5.	साहित्य सदस्यता	2 सदस्य
6.	समता संस्कार पाठशाला सहयोग	1 सदस्य
7.	श्रमणोपासक सहयोग	1 सदस्य
8.	दानपेटी योजना	1 संघ
9.	जीवदया	1 सदस्य
10.	संघ सहयोग	3 सदस्य
11.	महिला समिति सहयोग	2 सदस्य
12.	छात्रवृत्ति सहयोग	3 सदस्य
13.	सर्वधर्मी सहयोग	1 सदस्य

क्षेत्रीय सम्मेलन

गुवाहाटी। पूर्वोत्तर अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जी की अध्यक्षता में श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ तथा श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति का संयुक्त क्षेत्रीय सम्मेलन 18 जून को समता भवन, गुवाहाटी में सानंद सम्पन्न हुआ, जिसका शुभारम्भ समता बहूमंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। बालिका मंडल द्वारा मंचासीन पदाधिकारियों का तिलक लगाकर स्वागत किया गया। सामूहिक नवकार महामंत्र पाठ के साथ सम्मेलन की कार्यवाही प्रारम्भ हुई।

श्री साधुमार्गी जैन संघ, गुवाहाटी के अध्यक्ष के स्वागत उद्बोधन के पश्चात् राष्ट्रीय मंत्री द्वारा आंचलिक प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। महिला समिति की राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा ने महत्तम महोत्सव के 9 आयामों की जानकारी इन्द्रधनुष भाग 2 पुस्तक के माध्यम से सदन को देते हुए

इस स्वर्णिम अवसर से जुड़ने हेतु प्रेरणा दी। महिला समिति राष्ट्रीय महामंत्री ने सदन को सम्बोधित करते हुए महिला समिति द्वारा संचालित प्रवृत्तियों की विस्तृत जानकारी प्रदान कर सभी महिलाओं और युवतियों को इससे जुड़ने हेतु प्रेरणा की गई।

महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा जी ने संघ सुदृढ़ता हेतु अपने विचार रखे। महिला समिति राष्ट्रीय उपाध्यक्षा ने आभार ज्ञापित किया।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में असम बोर्ड की वाणिज्य संकाय की कक्षा 12 की परीक्षा में वरीयता सूची में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर सुश्री वर्षा बोथरा सुपुत्री श्री रतनलाल जी बोथरा का अभिनंदन किया गया।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ने समता भवन निर्माण निधि, उच्च शिक्षा, समता संस्कार पाठशाला तथा इदं न मम की विस्तृत जानकारी देते हुए इदं न मम से समस्त परिवारों को जुड़ने की अपील की।

राष्ट्रीय महामंत्री ने पी.पी.टी. के माध्यम से संघ उत्थान की विवेचना की एवं वीडियो द्वारा संघ इतिहास और वर्तमान में संचालित प्रवृत्तियों का विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने संघ की सभी प्रवृत्तियों और महत्तम महोत्सव से जुड़ने की अपील की। तदुपरांत आप द्वारा ओपन सेशन प्रारम्भ किया गया, जिसमें सदस्यों ने अपने विचार व सुझाव रखे और पदाधिकारियों द्वारा उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने आचार्य भगवन् द्वारा दिए गए आयामों को समाज के अंतिम व्यक्ति तक कैसे पहुँचाया जाए, इसकी रूपरेखा प्रस्तुत कर समाज में आचार्य भगवन् का सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव '**महत्तम महोत्सव**' को भव्य रूप से मनाने, इसकी प्रभावना करने आदि विषयों पर सारगर्भित विवेचना प्रस्तुत की।

तदुपरांत असम के महामहिम राज्यपाल श्री गुलाबचंद जी कटारिया का कार्यक्रम में पधारना हुआ। संघ परम्परा द्वारा आपश्री के आसन ग्रहण करने के पश्चात् बालिका मंडल ने तिलक लगाकर तथा राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने शॉल ओढ़ाकर स्वागत, अभिनंदन किया। श्री साधुमार्गी जैन संघ, गुवाहाटी के पदाधिकारियों द्वारा उन्हें प्रतीक चिह्न भेंट किया गया। इस अवसर पर समता संस्कार पाठशाला के बच्चों ने मनमोहक प्रस्तुतियाँ दीं।

अपने उद्बोधन में राज्यपाल महोदय ने कहा कि संतों की वाणी व आचरण हमारे जीवन को सार्थक करने में महत्त्वपूर्ण कड़ी है। हमारा खान-पान शुद्ध नहीं रहा, लेकिन साधु-संतों के प्रवचन श्रवण से मन की शुद्धि अवश्य होती है। हमें उनके जीवन, संयम और आचरण को अपने जीवन में उतारना है। हम अपने बच्चों को धार्मिकता से नहीं जोड़ पा रहे हैं। हम व्याख्यान सुनने तो जाते हैं, लेकिन बच्चों को ले जाने का कभी प्रयत्न नहीं करते। स्थानीय छात्रावास में हर साल शिविर लगाए जाते हैं, ऐसे शिविर देशभर में लगने चाहिए। यदि आने वाली पीढ़ी बिगड़ गई तो हमारा बुढ़ापा बिगड़ जाएगा। मनुष्य जितना सादगीपूर्ण जीवन जीयेगा, उतना ही सुखी रहेगा। उन्होंने पूर्वोत्तर अंचल के उपाध्यक्ष श्री सुन्दरलाल जी पींचा तथा तपस्विनी श्रीमती कौशल्यादेवी भूरा का अभिनंदन किया।

सम्मेलन के उपरांत उपस्थित विशिष्टजनों ने समता संस्कार पाठशाला के बच्चों द्वारा लगाई गई महत्तम महोत्सव, सामायिक, कर्म सिद्धांत, व्यसनमुक्ति, जैन धर्म तथा संघ द्वारा संचालित विविध प्रवृत्तियों की प्रदर्शनी का अवलोकन कर बच्चों के प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम को सफल बनाने में गुवाहाटी संघ की तीनों इकाइयों का पूर्ण सहयोग रहा।

कार्यक्रम में श्री अ.भा.सा. जैन संघ एवं महिला समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, पूर्वोत्तर अंचल राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, मंत्री, समता युवा संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित क्षेत्रीय पदाधिकारी व गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

-राष्ट्रीय महामंत्री श्रमणोपासक

संघ हमारा अविचल मंगल

03 जुलाई 2023, सोमवार को नीमच (म.प्र.) में आयोजित आमसभा में नियामक परिषद् द्वारा संघ समर्पणा रूप रखे गए भाव

श्री साधुमार्गी जैन संघ अर्थात् ''**संघ समर्पणा गीत**'' के 21 श्लोक यानी 42 पंक्तियाँ; बस इतना सा अर्थ हमारे संघ का है, परन्तु इसकी परिधि विश्व का कोई मापक यन्त्र माप नहीं सकता। इसकी थाह, गहराई नापी नहीं जा सकती। तभी तो कहा है- ''**संघ हमारा अविचल मंगल नंदनवन सा महक रहा**''।

कोई संघ अविचल, मंगल कब बनता है? जब उस संघ का संचालन, सिंचन पुण्यशाली महापुरुषों के हाथों से, कृपा से, आशीर्वाद से होता है।

स्मृतिशेष आचार्य श्री नानेश के समय जब हमारे संघ की स्थापना श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के रूप में हुई तब से अब तक हमारे पूज्य महापुरुषों के पावन सान्निध्य, कृपावर्षण से तथा संघ के ज्येष्ठ, श्रेष्ठ श्रावकों के प्रबल पुरुषार्थ से हमारा यह गौरवशाली संघ सामाजिक, धार्मिक, रचनात्मक आयामों के साथ सकल जैन जगत् में उत्तरोत्तर सम्मानित पहचान बनाते हुए सोपान चढ़ता जा रहा है।

हमारे इस गौरवशाली संघ के प्रथम आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. ने 200 णमोत्थु णं प्रतिदिन, 13 द्रव्य प्रतिदिन की मर्यादा, कठिन संयम समाचारी के माध्यम से अनेक परीषहों को सहन करते हुए संघ को अविचल बनाने हेतु अथक पुरुषार्थ किया। उन्हीं की पाट परम्परा का आगे बढ़ाते हुए आचार्य प्रवर श्री शिवलाल जी म.सा., आचार्य प्रवर श्री उदयलाल जी म.सा., आचार्य प्रवर श्री चौथमल जी म.सा., आचार्य प्रवर श्री श्रीलाल जी म.सा., आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा., आचार्य प्रवर श्री गणेशलाल जी म.सा. ने प्रबल पुरुषार्थ करके चतुर्विध संघ को तीर्थंकर भगवंतों द्वारा प्रशस्त मार्ग पर आगे बढ़ाया, सिंचन किया।

संघ के संचालन का दायित्व जब समता विभूति आचार्य श्री नानेश के हाथों में आया तो कहते हैं कि उन्होंने इस संघ की उत्कृष्टता के लिए अपने रक्त का पानी कर दिया अर्थात् घोर परीषह सहन करते हुए, उत्कृष्ट संयम पालन करते हुए सुदूर भारतभूमि को अपने विचरण से कृतार्थ किया। सैंकड़ों संयमशील आत्माओं पर उपकार करके उन्हें दीक्षा प्रदान की और पारखी जौहरी की भांति परख कर, तराश कर ''राम'' नाम का कोहिनूर संघ को प्रदान किया एवं उस कोहिनूर की आध्यात्मिक चमक से आज केवल साधुमार्गी संघ ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जैन जगत् शीतलता युक्त तेज से दमक रहा है। जी हाँ, हमारे वर्तमान शासनेश गवरा नंदन, आचार्य भगवन् श्री रामेश जिनकी उत्कृष्ट आगम सम्मत संयम साधना, कठोर अनुशासन, करुणा की पावन गंगा के रूप में हम सब पुण्यशाली, भाग्यशाली उनकी कृपा पाकर धन्य-धन्य हो रहे हैं। असहनीय वेदना के उपरांत भी स्वास्थ्य की पृच्छा करने पर समताभाव से, सहजता से कृपादृष्टि डालकर फरमाते हैं कि ''सब आनंद मंगल है'' तब सहज ही हम भक्तों की आँखों से अश्रुधारा बहने लगती है। इस पंचमकाल में ऐसे कृपावंत गुरु का मिलना क्या हम शब्दों में संजो सकते हैं? धन्य भाग्य है हमारे!

ब्यावर नगर की पुण्यधरा जहाँ हमारे आराध्यदेव ने बेले-बेले के तपस्वीरत्न, बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, आगम की गूढ़ता को सरलता के साथ संघ के चारों पाये- साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका के सामने आत्मचिंतन, मंथन, पठन के लिए प्रेरणादायी मार्ग प्रशस्त करने वाले बहुश्रुत, वाचनाचार्य पूज्य श्री राजेशमुनि जी म.सा. को चौथे उपाध्याय पद पर आरूढ़ किया और किस प्रकार पूज्य उपाध्याय प्रवर अपने जीवन का क्षण-क्षण संघ को धार्मिक, आध्यात्मिक सोपान पर आगे बढ़ाने के लिए प्रदान कर रहे हैं, उनके इन उपकारों से हम कभी उऋण नहीं हो सकते हैं।

ऐसा ही प्रबल पुरुषार्थ हमारे संघ की इस ''राम वाटिका'' की प्रत्येक चारित्र आत्मा कर रही है और उनके संयम तप की महक से सम्पूर्ण आध्यात्मिक, धार्मिक वातावरण सुरभित हो रहा है।

''यही तो है हमारा संघ रूपी नंदनवन''

ऐसे सभी कृपावंतों की कृपा पाकर, उनका आशीर्वाद प्राप्त कर हमारे संघ को बीज रूप से अंकुरित कर संघ के सभी पूर्व सम्माननीय अध्यक्ष महानुभावों, पदाधिकारियों, प्रवृत्ति संयोजकों, क्षेत्रीय एवं स्थानीय संघों के पदाधिकारियों, पूर्ववर्ती महिला पदाधिकारियों,

संघ के युवा, तरुण, बालक, बालिकाओं ने अपना अमूल्य समय देकर अथक पुरुषार्थ, प्रवास करते हुए हमारे पूज्य महापुरुषों द्वारा फरमाये गये आयामों को पूर्णता प्रदान करने में कोई कसर नहीं छोड़ी तथा यह आदर्श परम्परा आज भी हमारे लिए प्रेरणा पुँज बनकर हमारा मार्ग प्रशस्त कर रही है।

आज उन सभी पूर्ववर्ती दायित्ववान सुश्रावकों का हम आभार प्रकट करते हैं, अभिनंदन करते हैं और संघ को भविष्य में भी उनका मार्गदर्शन, आशीर्वाद मिलता रहे ऐसी आशा व निवेदन करना चाहते हैं।

हमारा चतुर्विध संघ चार पायों से मिलकर बना है– साधु–साध्वी, श्रावक–श्राविका। इन चार पायों में से साधु–साध्वी रूपी दो पाये तो आचार्य भगवन् की कृपा से इतने मजबूत हैं कि इन पर हमें गौरव की अनुभूति होती है और होना स्वाभाविक भी है। इसे हम हमारी प्रबल पुण्यवानी, सौभाग्य भी मान सकते हैं। परन्तु इसके साथ ही एक शब्द धीरे से हमें सचेत भी करता है, वह शब्द है 'कर्त्तव्य'। क्योंकि जिस बगीचे में मीठे फलों की अधिकता होती है, उनकी मीठास और फलों की प्रचुरता बनी रहे इसकी चिन्ता भी उस बगीचे के माली को करनी पड़ती है। ऐसा ही हमारा यह साधुमार्गी संघ है। हमारे आचार्य भगवन् के द्वारा फरमाये गये आयामों, संकेतों, दिशा–निर्देशों को समझकर समता भाव से अपने जीवन में आत्मसात् कर **'नाम के लिए नहीं काम के लिए''** अपना सर्वस्व लगाकर 'कर्त्तव्य' निभाने की आवश्यकता है।

एक यन्त्र (मशीन) में अनगिनत पूर्जे मिलकर उस मशीन को चलाते हैं। कोई पूर्जा दिखता है किन्तु अधिकांश पूर्जे दिखाई नहीं देते हैं, फिर भी उस मशीन का प्रत्येक पूर्जा अपना कार्य करते हुए मशीन संचालन में सहयोगी बनता है। कभी कोई पूर्जा एक–दूसरे की शिकायत नहीं करता और उत्पाद को परिणाम तक पहुँचाने में सहयोगी बनता है। बस ऐसा ही 'कर्त्तव्य पथ' हमारा भी है। इस संघ रूपी मशीन के सफल संचालन के लिए हमारी एक छोटी–सी अस्वाभाविक त्रुटि, आज के बाहरी गिरते हुए वातावरण में हमारे संघ की उत्तरोत्तर बढ़ रही गति को अवरुद्ध कर सकती है। इसलिए हमारा दायित्व और भी बढ़ जाता है। हमें हमारे साधुमार्गी श्रावक होने का बोध प्रतिक्षण होना ही चाहिये। इसमें ही हमारा गौरव समाहित है। इसलिए प्रतिपल हमारा भाव रहे:–

महत्तम महोत्सव - मेरा महोत्सव
भाव से परिणित हो जावें
दूर हटा छल, छद्म, अहं को
सरल, सहज, सद्भाव धरूं
संघ सेवा में झोंके जीवन
और न कुछ सूझे हमको

वर्तमान में भारत ही नहीं अपितु विदेशों में भी आचार्य भगवन् की कृपा से सैंकड़ों दायित्ववान पदाधिकारी श्रावक–श्राविकाएँ अपना समय देकर संघ सेवा में पुरुषार्थरत होकर लगे हैं। आज इस अवसर पर उन सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उनका अभिनंदन करते हैं।

कुछ नीतिगत परिवर्तन प्रकृति का नियम है, तदनुरूप सन् 2013 में संघ ने संघ की गतिशीलता को और सुचारू करने हेतु ''नियामक परिषद' का गठन किया।

नियामक परिषद इस गौरवशाली संघ के संचालन के लिए प्रति दो वर्ष बाद संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद की मनोनयन प्रक्रिया संपादित करती है।

हमारे इस गौरवशाली संघ में आचार्य भगवन् की कृपा से एक नहीं अनेक ऐसे सुश्रावक हैं जो ज्ञान, ध्यान, तप, मेधाविता, नेतृत्व क्षमता, श्रद्धा, समर्पणा आदि गुणों से सम्पन्न हैं। ऐसे श्रावक रत्न देश–विदेश के प्रत्येक जोन (क्षेत्र) में विद्यमान होकर संघ सेवा में अपना पुरुषार्थ कर रहे हैं।

आगामी दो वर्ष आसोज सुदी द्वितीया संवत् 2080 से आसोज सुदी द्वितीया संवत् 2082 तक अध्यक्षीय कार्यकाल हेतु इस विराट, गौरवशाली संघ के संचालन के लिए एकाधिक श्रावक रत्नों में से एक श्रावक का अध्यक्ष पद हेतु चयन नियामक परिषद को करना है, जो आसान नहीं है।

''महत्तम महोत्सव को मेरा महोत्सव बनाने हेतु'' श्रद्धानिष्ठ, शासननिष्ठ, समर्पण भाव से ओत–प्रोत, समयदायी, प्रवासी, प्रसन्न स्वभाव वाले, नेतृत्व क्षमता से परिपूर्ण, समताशील, गुणशील सम्पन्नता आदि सद्गुणों को धारण करने वाले श्रावकों में से नियामक परिषद आगामी कार्यकाल के अध्यक्ष पद हेतु सरलमना, सुश्रावक **श्रीमान नरेन्द्र जी गांधी, जावद** का नाम प्रस्तावित करती है।

दिनांक: 03 जुलाई 2023, सोमवार **नीमच (म.प्र.)**
प्रथम श्रावण बदी प्रतिपदा, संवत् 2080

श्रमणोपासक

कार्यसमिति व आमसभा बैठक सम्पन्न

संघ कार्यसमिति बैठक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की सत्र 2021-23 की सप्तम् कार्यसमिति बैठक 03 जुलाई 2023 को दोपहर 12:15 बजे से होटल देव रेजीडेन्सी, नीमच में संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सामूहिक मंगलाचरण, साधुमार्गी संकल्प वांचन से प्रारम्भ बैठक में विगत बैठक के कार्यवृत्त की अनुमोदना उपरान्त राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा विभिन्न सदस्यताओं पर स्वीकृति ली गई तथा विगत तीन माह में हुई संघ प्रवृत्तियों और आयामों की प्रगति का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। विगत समय में केन्द्रीय पदाधिकारियों के प्रवास की उपलब्धियों को भी सदन में प्रस्तुत किया गया। तदुपरांत मालवा, छत्तीसगढ़-उड़ीसा, बंगाल, बिहार, नेपाल अंचल के उपाध्यक्ष/मंत्री द्वारा आंचलिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। महत्तम महोत्सव पर अब तक की जानकारी महत्तम महोत्सव संयोजक द्वारा प्रदान की गई।

श्री गणेश जैन ज्ञान भंडार, रतलाम द्वारा ज्ञान भंडार की पुस्तकों को सूचीबद्ध कर इंडेक्सिंग रजिस्टर के रूप में संकलित विवरण सदन में प्रस्तुत किया गया। इसके सहसंयोजक ने सदन को साहित्य की उपलब्धता और लाइब्रेरी के विषय में जानकारी दी। तत्पश्चात् साधुमार्गी पब्लिकेशन के संयोजक द्वारा साहित्य प्रवृत्ति के अंतर्गत हुई प्रगति को पी.पी.टी. के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। इसी क्रम में दो नवीन साहित्य '**समझदार को इशारा**' व '**एक ही काफी है**' का विमोचन उपस्थित पदाधिकारियों तथा वीर परिजनों द्वारा किया गया।

सभा के अंत में राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय ने अपने उद्बोधन में संघ सशक्तिकरण एवं संगठन की सुदृढ़ता पर विशेष बल दिया। उन्होंने आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र, उदयपुर की भूमि के मिक्स लैंड यूज को यू.आई.टी. उदयपुर में प्रस्तुत प्रस्ताव के उपरांत डवलपमेंट मॉडल (आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र के संयोजक से प्राप्त) को सदन में रखा। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष द्वारा आभार अभिव्यक्ति व संघ समर्पणा गीत की पंक्तियों के साथ सभा का समापन हुआ।

विशेष आमसभा : श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष जी की अध्यक्षता में होटल देव रेजीडेन्सी, नीमच में दोपहर 4 बजे से विशेष आमसभा प्रारम्भ हुई, जिसमें केन्द्रीय पदाधिकारियों के साथ शिखर सदस्य श्री जयचंदलाल जी डागा, श्री शांतिलाल जी सांड, श्री माणकचंद जी नाहर व श्री दिनेश जी सिपानी मंचासीन रहे।

सामूहिक मंगलाचरण व संकल्प सूत्र वांचन के साथ बैठक प्रारम्भ हुई। राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा स्वागत उद्बोधन व विगत आमसभा (दिनांक 28 सितम्बर 2022, उदयपुर) से लेकर अब तक हुई प्रगति को पी.पी.टी. के माध्यम से सदन में रखा गया। सदन ने विगत आमसभा के कार्यवृत्त पर अनुमोदना प्रदान की। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ने उदयपुर में आयोजित विगत कार्यसमिति बैठक में प्रस्तुत वित्तीय वर्ष 2023-24 के बजट तथा आज की कार्यसमिति बैठक में स्वीकृत अतिरिक्त बजट को अनुमोदनार्थ सदन में रखा, जिस पर सदन ने सर्वसम्मति से स्वीकृति प्रदान की।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में नवसाहित्य '**स्वरित**' का विमोचन तथा श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति की पुन: मनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती पुष्पा जी मेहता का अभिनंदन किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष जी के प्रभावशाली उद्‌बोधन पश्चात् राष्ट्रीय महामंत्री ने नियामक परिषद प्रमुख को सत्र 2023-25 के लिए नवीन अध्यक्ष मनोनयन की प्रक्रिया सम्पन्न करने हेतु आमंत्रित किया। नियामक परिषद् प्रमुख श्री राजकुमार जी नाहर ने नियामक परिषद् द्वारा चयनित राष्ट्रीय अध्यक्ष के नाम का घोषणा-पत्र राष्ट्रीय अध्यक्ष जी को वांचन हेतु सुपुर्द किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने जिनशासन, हुक्मसंघ, आचार्य श्री नानेश, आचार्य श्री रामेश, उपाध्याय प्रवर तथा संघ सेवा के प्रति भावपूर्ण शब्दावली से परिपूर्ण नियामक परिषद् के पत्र का वांचन करते हुए सत्र 2023-25 के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में परम गुरुभक्त वीर पिता **श्री नरेन्द्र जी गांधी, जावद** के नाम की घोषणा की। इस पर सम्पूर्ण सदन ने हर्ष-हर्ष जय-जय और केसरिया-केसरिया की प्रतिध्वनि से नव मनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नरेन्द्र जी गांधी के नाम पर स्वीकृति प्रदान की।

नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नरेन्द्र जी गांधी ने सदन का आभार प्रकट करते हुए अपने भावों को सदन में रखा। कार्यक्रम के अंत में विगत समय में देवलोकगमन हुई चारित्रात्माओं को श्रद्धांजलि स्वरूप 4-4 लोगस्स का ध्यान किया गया। आभार अभिव्यक्ति व संघ समर्पणा गीत की पंक्तियों के साथ आमसभा का समापन हुआ।

-राष्ट्रीय महामंत्री

रचनाएँ आमंत्रित

500-1000 शब्द सीमा

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी 15-16 **सितम्बर** 2023 का धार्मिक अंक '**सेवा-विवेक, संघ-विवेक**' पर आधारित रहेगा।

सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि **मो.: 9314055390, email : news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।

- श्रमणोपासक टीम

सप्तम् कार्यसमिति बैठक सम्पन्न

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा जी की अध्यक्षता में महिला समिति की सप्तम् कार्यकारिणी बैठक दिनांक 03 जुलाई 2023 को नीमच में आयोजित की गई। बैठक की शुरुआत तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, उत्क्रांति प्रणेता आचार्य श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. एवं सभी चारित्रात्माओं के चरणों में वंदन करते हुए मंगलाचरण से हुई। राष्ट्रीय अध्यक्षा जी द्वारा साधुमार्गी संकल्प सूत्र का वांचन करवाया गया।

राष्ट्रीय महामंत्री ने सदन से गत कार्यकारिणी मीटिंग के कार्यविवरण पर अनुमोदन प्राप्त करने के पश्चात् संगठन में वर्तमान में जो मंडल लग रहे हैं उनकी जानकारी प्रस्तुत की एवं स्थानीय स्तर पर अधिक से अधिक मंडल लगाने का आग्रह किया। वुमन्स मोटिवेशनल फोरम की त्रैमासिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए जून माह तक हुए कुल रजिस्ट्रेशन की जानकारी दी गई। **मधुरम् गीतम् महावीरम्** गतिविधि के बारे में बताया। विगत 3 माह में सम्पन्न हुए कर्नाटक-आंध्रप्रदेश क्षेत्रीय सम्मेलन, मुंबई-गुजरात अंचल प्रवास, छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल एवं पूर्वोत्तर अंचल प्रवास का विवरण प्रस्तुत किया।

युवती शक्ति की राष्ट्रीय संयोजिका द्वारा त्रैमासिक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए वीर की गूँज, गठबंधन आदि कार्यक्रमों से सक्रिय रूप से जुड़ने का आग्रह किया गया एवं विविध जानकारी दी।

राष्ट्रीय संयोजिका द्वारा समय-समय पर अंचल संयोजिकाओं के साथ मीटिंग लेने की जानकारी दी गई। भ्रूणहत्या त्याग संकल्प-पत्र के बारे में जानकारी देते हुए इसे भरने एवं भरवाने के लिए आग्रह किया। केसरिया कार्यशाला की सहसंयोजिका द्वारा स्त्रियों की 64 कलाओं के बारे में बताते हुए अभी तक 56 कलाओं की जानकारी प्राप्त होने की जानकारी दी।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा द्वारा परिवारांजलि की त्रैमासिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। साथ ही उन्होंने बताया कि लगभग 211 परिवारों को सर्वधर्मी सहयोग राशि प्रदान की गई है। अन्य विविध जानकारियों के बाद आप द्वारा महिला समिति बजट में विगत 3 माह में हुए आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत किया गया।

समता छात्रवृत्ति की राष्ट्रीय संयोजिका द्वारा बताया गया कि प्रत्येक वर्ष अप्रैल से अक्टूबर माह तक छात्रवृत्ति के लिए आवेदन किया जा सकता है। इस वर्ष प्राप्त आवेदनों पर बच्चों को शीघ्र ही छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी।

राष्ट्रीय उपाध्यक्षा-मंत्री रिपोर्ट : सभी अंचलों के उपाध्यक्ष-मंत्री द्वारा उनके अंचल में हुई विभिन्न गतिविधियों का विस्तृत विवरण सदन में प्रस्तुत किया गया। इसके तहत अंचल में लग रहे मंडल, नवीन मंडल का गठन, प्रवृत्तियों का प्रगति विवरण, वर्षीतप पारणा, महत्तम महोत्सव, प्रतिक्रमण प्रतियोगिता हेतु रजिस्ट्रेशन एवं पाठशाला आदि की जानकारी प्राप्त हुई।

पूर्व अध्यक्षा ने सभा को संबोधित करते हुए प्रत्येक छोटे-छोटे क्षेत्र में कार्य करने की आवश्यकता बताई। साधुमार्गी संघ का कोई भी बच्चा शिक्षा के क्षेत्र में पीछे नहीं रहे इसके लिए छात्रवृत्ति एवं उच्च शिक्षा योजना की अधिक से अधिक प्रभावना करने का आग्रह किया।

विशेष आमसभा :

विशेष आमसभा बैठक का शुभारम्भ आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में वंदन पश्चात् मंगलाचरण से हुई। राष्ट्रीय अध्यक्षा जी द्वारा साधुमार्गी संकल्प सूत्र का वांचन करवाया गया। राष्ट्रीय महामंत्री ने सदन से विगत आमसभा मीटिंग के कार्यविवरण पर अनुमोदना ली।

राष्ट्रीय अध्यक्षा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि महिला समिति की नींव एक बीज के रूप में रखी गई थी, जो आज एक वटवृक्ष का रूप ले चुकी है। इसमें पूर्व अध्यक्षाओं के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। पद आज है कल नहीं है, परंतु एक श्राविका का पद हमेशा रहेगा और श्राविका के रूप में संघ विकास में अपना पूर्ण योगदान देवें। महिला समिति की केसरिया गणवेश को प्राथमिकता देवें। महत्तम महोत्सव में चल रही गतिविधि गुदड़ी के लाल के माध्यम से छुपी हुई प्रतिभाओं को अवसर प्रदान करें एवं महत्तम महोत्सव से स्वयं भी जुड़ें व अन्यों को भी जोड़ें। आपने अन्य विविध विषयों पर भावोद्गार दिया।

महत्तम महोत्सव की सह-संयोजिका द्वारा महत्तम महोत्सव में चल रहे आयामों की जानकारी दी गई एवं सभी को महत्तम महोत्सव से जोड़ने का आग्रह किया गया। राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा नीमच संघ से पधारे हुए सदस्यों का अभिनंदन किया गया।

श्रीसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने सभा को सम्बोधित करते हुए महिला शक्ति के गौरव का उल्लेख किया। आपने कहा कि नेतृत्वकर्ता वही है जो पीछे रहकर अपनी टीम को आगे बढ़ाता है और विकास में सहयोगी बनता है।

आगामी सत्र 2023-25 के लिए श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा पद के लिए वर्तमान अध्यक्षा **श्रीमती पुष्पा जी मेहता, चित्तौड़गढ़** का पुन: मनोनयन किया गया।

संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, वर्तमान राष्ट्रीय महामंत्री, कोषाध्यक्ष एवं सभा ने पुन: मनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती पुष्पा जी मेहता को हार्दिक बधाई दी। **-राष्ट्रीय महामंत्री**

संस्कारित जीवन

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

व्यावहारिक धरातल पर जो सामाजिक रीति-नीति आदि की पालना करे उसे संस्कारित कहा जाता है। जैसे- कैसे बैठना, कैसे उठना, कैसे बोलना, कैसे खाना आदि। एक व्यक्ति का उठना-बैठना आदि सही ढंग से नहीं हो तो उसका आचरण असंस्कारित कह दिया जाता है। अत: सभ्यतापूर्वक जिसका आचरण हो वह संस्कारित कहलाता है। किन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से संस्कारित-असंस्कारित का संबंध आन्तरिकता से है। अन्तर कितना सरल व शुद्ध है? आंतरिक सरलता से जो आचरण होगा वह संयत रूप से, यतनापूर्वक होगा। आध्यात्मिक दृष्टि से वह संस्कारित जीवन है, उससे विपरीत ऊपरी सभ्यता जितनी भी हो पर अन्तर में सरलता न हो, वक्रता एवं कषाय हो तो वह असंस्कारित है।

साभार- नीरव का रव

तृतीय कार्यसमिति सभा सम्पन्न

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष जी की अध्यक्षता में सत्र 2022-24 की तृतीय कार्यसमिति सभा का आयोजन नीमच में 03 जुलाई 2023 दोपहर 12:15 बजे किया गया। समता युवा संघ, नीमच के मंगलाचरण पश्चात् विगत समय में देवलोक हुई चारित्रात्माओं को श्रद्धांजलि स्वरूप 4-4 लोगस्स का ध्यान सम्पूर्ण सदन द्वारा किया गया। समता युवा संघ, नीमच के अध्यक्ष ने पधारे हुए सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों का आत्मीय स्वागत-अभिनन्दन किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने अपने प्रेरक उद्बोधन के माध्यम से सभी में उत्साह का संचार करते हुए सभी सदस्यों के सहयोग के लिए आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया। **आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव - महत्तम महोत्सव** हेतु युवा साथियों को प्रेरणा देते हुए आपने कहा कि समता युवा संघ का यह कार्यकाल स्वर्णिम कार्यकाल है। हम सबको पूर्ण मनोयोग के साथ समता युवा संघ एवं महत्तम महोत्सव में आ रहे सभी आयामों को जन-जन तक पहुँचाकर श्रेष्ठ प्रभावना करनी है। हमारा उद्देश्य महापुरुषों के इंगित इशारों को समझकर '**नो नेम नो ब्लेम**' के एक सकारात्मक समुदाय, जिसका निर्माण हो चुका है, उसे पूर्ण मनोयोग से आगे बढ़ाने हेतु सभी को प्रेरित करना है।

राष्ट्रीय महामंत्री ने गत कार्यसमिति सभा का कार्यविवरण सदन में प्रस्तुत किया, जिसे सदन ने सर्वानुमति से पारित किया।

सभी अंचल राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने अपने-अपने अंचल का त्रैमासिक प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया एवं सदन में उपस्थित संयोजक एवं प्रभारीगण ने आगामी कार्ययोजना सदन के समक्ष प्रस्तुत की।

राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा 01.03.2023 से 30.06.2023 तक का प्रगति प्रतिवेदन सदन में प्रस्तुत किया गया।

विशेष उपलब्धियाँ :

दिनांक 08.03.2023 को बेंगलुरु में संघ विकास एवं आगामी कार्ययोजना की प्रेरणा हेतु अंचल के सभी युवा साथियों के साथ सभा का आयोजन किया गया।

दिनांक 28-29-30 अप्रैल 2023 को मालवा अंचल का त्रि-दिवसीय प्रवास सानन्द सम्पन्न हुआ, जिसमें महीदपुर रोड गाँव को उत्क्रांति ग्राम घोषित किया गया। 19 साधुमार्गी परिवारों ने उत्क्रांति परिवार के फॉर्म भरे। ज्ञानार्जन में **'ALL IS WELL'** में युवाओं को प्रतिक्रमण कंठस्थ की विशेष प्रभावना की गई। महत्तम महोत्सव के प्रकल्प प्रतिक्रमण याद करने हेतु 44 फॉर्म भरे गए।

दिनांक 10-11 जून 2023 को मुंबई-गुजरात के दो-दिवसीय प्रवास के माध्यम से संगठन की मजबूती की प्रभावना करते हुए चिखली व नवसारी में नयी समता युवा शाखा का गठन कर पदाधिकारियों का मनोनयन किया गया। प्रवासी दल के वाहन चालक ने तंबाकू त्याग का संकल्प लेकर आचार्य भगवन् के व्यसनमुक्ति आयाम को अपनाया। ज्ञानार्जन में **'ALL IS WELL'** में युवाओं को प्रतिक्रमण कंठस्थ की विशेष प्रभावना की गई। महत्तम महोत्सव के प्रकल्प प्रतिक्रमण याद करने हेतु 25 फॉर्म भरे गए। सभा में संघ की आगामी कार्य योजनाओं पर विचार-विमर्श

हुआ। समता युवा संघ, नीमच के मंत्री द्वारा आभार व धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ने सभा में पधारे हुए सभी पदाधिकारियों व सदस्यगणों तथा सभा की उत्तम व्यवस्था के लिए समता युवा संघ, नीमच का आभार व्यक्त किया। अंत में **''तेरे पावन चरणों में''** की अद्भुत समर्पणा के सामूहिक संगान और राम गुरु के जयकारों के साथ सभा विसर्जित हुई। **–राष्ट्रीय महामंत्री**

दिनांक 01.03.2023 से 30.06.2023 का प्रगति प्रतिवेदन			
धार्मिक	दिनांक – 16 अप्रैल 2023	''खिलते ज्ञान पुष्प–8'' ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता	905 प्रतिभागी
	–	प्रतिक्रमण संकल्प	330 रजिस्ट्रेशन
सामाजिक	दिनांक – 02 अप्रैल से 16 अप्रैल 2023 तक	आरोग्यम्–नेत्र जाँच शिविर	6348 नेत्र परिक्षण
			25 संघ
	दिनांक – 9 अप्रैल 2023	अमृतम्	6 संघ
व्यसनमुक्ति	दिनांक – 28 मई से 04 जून 2023 तक	व्यसनमुक्ति सप्ताह	व्यसनमुक्ति कार्यक्रम – 91
			प्रतिभागी संघ – 69 संघ
उत्क्रांति	–	कुल ग्राम	792
		परिवार	13900
		नवीन उत्क्रांति ग्राम	2
		सामूहिक उत्क्रांति आयोजन	29
समता शाखा	–	नवीन क्षेत्र	7
		पुन: प्रारम्भ क्षेत्र	2
		कुल राष्ट्रीय क्षेत्र	580–610
		कुल अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र	9
		औसत उपस्थिति	8112
		अधिकतम उपस्थिति	9692
तरुण शक्ति	–	SOPAN : CAREER COUNSELLING SESSION	228 रजिस्ट्रेशन
		Bring Another You	100 रजिस्ट्रेशन
संगठन	–	समता युवा संघ	2
		समता युवा शाखा	1
शोक संवेदना संदेश	–	इस अवधि में	8

महत्तम महोत्सव : मेरा महोत्सव

NO NAME BLAME

अंतर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव

[redacted] महापुरुषों की वाणी शक्ति-सम्पन्न होती है। उनके वचनों में जीवन परिवर्तन के गहरे संकेत छुपे होते हैं। संघ ने इसी ध्येय वाक्य को ध्यान में रखते हुए '**महत्तम महोत्सव**' के प्रकल्पों को 9 विभागों में तैयार किया है। इन विभागों को माध्यम बनाते हुए हम आचार्य श्री रामेश के चिंतनों को जन-जन तक पहुँचाकर उन्हें इनसे जोड़ते हुए सभी के जीवन परिवर्तन में सहायक बनें। आइये, हम सभी मिलकर '**महत्तम महोत्सव**' से एक ऐसी धार्मिक भव्यता का सूत्रपात करें जिसमें ना केवल साधुमार्गी परिवार का प्रत्येक सदस्य जुड़े बल्कि सकल जैन समाज-सकल अन्य समाज भी जुड़े एवं स्वयं के जीवन का उत्थान कर सके। वही पूज्य आचार्य भगवन् के चरणों में हम सभी की ओर से एक उत्कृष्ट भाव रूपी अर्पण होगा।

आइये, जानते हैं कि आने वाले महीने में महत्तम महोत्सव कौन-से प्रकल्प लेकर आ रहा है...

ज्ञानार्जन :

गुरुवर ने सिखलाया है हमें,
ज्ञान की नहीं कोई सीमा...
छोटे-बड़े सभी इसमें जुड़,
जान रहे इसकी महिमा।
भगवन् की स्वर्ण दीक्षा जयंती को मनाएँ,
बढ़ाए इसकी गरिमा।।

ज्ञानार्जन में :

कर्म तत्वज्ञ – गतिमान है, आगामी परीक्षा - भाग D : 24 सितंबर 2023 को आयोजित होगी।

श्रुत आरोहक – गत 9 जुलाई को श्रुत आरोहक-2 की प्रथम ओपन बुक परीक्षा रखी गई।

सितंबर माह में निम्नोक्त पाठ्यक्रम पर द्वितीय ओपन बुक परीक्षा रखी जाएगी –

(1) श्रुत भ्रमण – जिणधम्मो से पाठ्यक्रम आगार धर्म, अणगार धर्म पर घर बैठे ओपन बुक परीक्षा जल्द ही प्रेषित की जाएगी।

(2) श्रुत रमण – पंजीकृत श्रावक-श्राविकाओं को मात्र 100 रुपये में पहुँच रही हैं आगम की प्रथम 5 प्रतियाँ।

(3) ऑल इज वेल – निरंतर प्रभावना द्वारा युवकों को (18-45 वर्ष) प्रतिक्रमण विधिवत् कंठस्थ कराने का बीड़ा उठाया है महत्तम महोत्सव ने।

(4) थोकड़े का कार्निवल – जीवधड़ा के बोर्ड गेम के बाद इस माह ला रहे हैं 98 बोल व 102 बोल की अल्पबहुत्व। 23 जुलाई को आगामी एक्टिविटी करवाई गई। थोकड़ों के सभी जानकार अवश्य जुड़ें।

द कर्मा क्विज (लाइसेंस से सिद्धत्व) - 6 अगस्त 2023 को आ रहा है अंचल स्तरीय क्विज। No time to die... **समयं गोयम मा पमायए**। गत माह स्थानीय स्तर पर ऑनलाइन क्विज रखी गई थी। इसमें उत्तीर्ण प्रतिभागी अंचल स्तर पर ऑफलाईन क्विज में भाग लेंगे। पाठ्यक्रम 1-15 अध्याय।

संस्कार :

महत्तम महोत्सव के गतिशील प्रकल्प संस्कार के

अंतर्गत '**अब कर कमाल**' ग्रांड फिनाले लेकर आया (ट्रेजर हंट) जो संपूर्ण देशभर में 18 जून को पूरा हुआ। सभी अंचलों में ट्रेजर हंट में भाग लेने वाले बच्चों और सभी सहयोगियों ने बहुत उत्साह से इसे मनाया।

'संस्कार' प्रकल्प के अंतर्गत प्रतिक्रमण का द्वितीय बैच शुरू होने की संभावना है, जिसमें 3 सितंबर को इस सेशन की परीक्षा के अंतर्गत छठे अणुव्रत तक की परीक्षा होगी।

'संस्कार' प्रकल्प में सामायिक कंठस्थ का सेकंड बैच शुरू हो गया है, जिसमें णमोत्थु णं तक के पाठ्यक्रम की परीक्षा 13 अगस्त को होने की संभावना है।

'संस्कार' प्रकल्प में शिविर एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा बच्चों में ज्ञान की अभिवृद्धि होती है। इसके अंतर्गत कुछ अंचलों में शिविरों के आयोजन किये गये, जिनका विवरण इस प्रकार है–

1. हैदराबाद (कर्नाटक–आंध्रप्रदेश अंचल)– 23 से 25 दिसंबर 2022
2. बेंगलुरु (कर्नाटक–आंध्रप्रदेश अंचल)– 25 से 29 दिसंबर 2022
3. डोंगरगाँव (छत्तीसगढ़–उड़ीसा अंचल)– 17 से 21 अप्रैल 2023
4. तोंडापुर (महाराष्ट्र विदर्भ खानदेश अंचल)– 24 से 26 अप्रैल 2023
5. हावड़ा (बंगाल, बिहार, नेपाल, भूटान अंचल)– 29–30 अप्रैल व 01 मई 2023
6. रतलाम (मालवा अंचल)– 5 से 9 मई 2023
7. मुक्ताईनगर (महाराष्ट्र विदर्भ खानदेश अंचल)– 30 अप्रैल व 01–02 मई 2023
8. कर्मला (महाराष्ट्र विदर्भ खानदेश अंचल)– 06 से 10 मई 2023
9. गुण्डरदेही (छत्तीसगढ़–उड़ीसा अंचल)– 28 मई से 01 जून 2023
10. लोहारा (छत्तीसगढ़–उड़ीसा अंचल)– 08 से 12 जून 2023

स्वाध्याय :

'आध्यात्मिक आरोग्यम्'

आध्यात्मिक आरोग्यम् व्यक्ति को अपनी आध्यात्मिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

जैसे रत्नों में कोहिनूर और नदियों में गंगा श्रेष्ठ है, वैसे ही जीवन परिवर्तन के सूत्रों में आध्यात्मिक आरोग्यम् सर्वश्रेष्ठ है।

आध्यात्मिक यानी आत्मा की और आरोग्यम् अर्थात् निरोगता। आध्यात्मिक आरोग्यम् अर्थात् आत्मा की निरोगता। जब हम निरोग होंगे तभी स्वस्थ, शांत बन पाएँगे।

तो आइए, अब एक–एक करके आध्यात्मिक आरोग्यम् के नौ बिंदुओं के बारे में जानें–

(1) गुणमय दृष्टि का विकास – आध्यात्मिक आरोग्यम् का पहला बिंदु है गुणपरक दृष्टि। एक उदाहरण द्वारा इसे समझते हैं।

एक टेबल पर एक गिलास को आधा पानी से भरकर रखा गया और अनेक व्यक्तियों को (अलग–अलग) सवाल पूछा गया कि गिलास कैसा है? कइयों से जवाब मिला, गिलास आधा खाली है और कुछ लोगों ने जवाब दिया, गिलास आधा भरा हुआ है। कइयों ने उसमें कमी देखी और किसी ने देखी सकारात्मकता। गिलास वही, पानी वही, परंतु प्रतिक्रिया अलग–अलग। जैसी हमारी दृष्टि होगी हम सृष्टि को उसी तरह देखेंगे।

गुणपरक दृष्टि से सकारात्मकता आती है, जिससे दूसरे लोगों के उत्साह में वृद्धि होती है। आप द्वारा किसी के गुणों के बारे में बात करने से उसका आत्मविश्वास बढ़ता है। गुणपरक दृष्टि को पाने,

बढ़ाने एवं सुरक्षित रखने के लिए सबसे जरूरी है गुणियों की संगत। जिन गुणियों की संगत होगी उसी तरह के गुण हममें भी आएँगे। जब भी किसी में देखो तो सिर्फ गुणों को ही देखो और उसका कथन भी जरूर करना चाहिए। इससे सकारात्मकता फैलती है और हमारी इमेज सकारात्मक बनती है। ज्ञानी भगवंतों से कुछ भी छिपा हुआ नहीं है, परंतु वे सिर्फ गुणों का ही कथन करते हैं। किसी के गुण कथन में कभी कंजूसी नहीं करते। जब दृष्टि गुणमय होगी तो सहयोग भावना भी बढ़ेगी, परंतु वह सहयोग गुप्त होना चाहिए। जैसे माँ बीमार बच्चे की सेवा करती है, परंतु किसी से कहती नहीं है। सहयोग भाव के लिए अहोभाव होना भी जरूरी है। इससे संघ संबंधी कार्य बहुत ही सही तरीके से पूरे होंगे।

जो गुण हमें किसी में दिखते हैं उन्हें अपने अंदर उतारना भी चाहिए, बढ़ाना भी चाहिए और साथ में उनका संरक्षण भी करना चाहिए। गुरु सान्निध्य से, अहोभाव से गुणों को बढ़ाते चलें, उनका चिंतन, कीर्तन कर उन्हें संजोते चलें।

हम जिनसे भी मिलें उनके गुणों की तारीफ करते चलें। धीरे-धीरे हमारे में गुणों को देखने की इच्छा बढ़ेगी और साथ ही हम जिसमें कोई अच्छा गुण देखें, उसे अपनाएँ। इससे हमारा जीवन खुशहाल बनेगा।

शक्ति केन्द्रों का उपयोग

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

एक व्यापारी को राजा ने चंदन का बगीचा दे सम्मानित किया। व्यापारी सोचने लगा कि बगीचा हमारे किस काम का? हम तो व्यापारी हैं। मुझे तो इससे धन लाभ प्राप्त करना चाहिए। वह लाभ की धुन में उस चंदन के वृक्षों का कोयला बना-बनाकर विक्रय करने लगा। बहुत सारा चंदन उसने कोयले बनाकर नष्ट कर दिया। कहीं यही दशा आज के मानव की तो नहीं है। उसे पाँचों इन्द्रियाँ प्राप्त हुई हैं, मन-वचन-काया की शक्ति भी प्राप्त हुई हैं, इस शरीर में कैसे-कैसे शक्ति केन्द्र प्राप्त हुए हैं, जिन्हें जागृत कर वह भव-भव के दारिद्र को दूर कर अक्षय धनराशि को प्राप्त कर सकता है किन्तु वह प्राप्त शक्ति केन्द्रों का उपयोग कुछ ना कुछ भौतिक पदार्थों के लिए कर रहा है। यह चंदन के कोयले बनाने तुल्य नहीं तो और क्या कहा जा सकता है? मानव को अपनी शक्ति का अहसास करना चाहिए।

साभार- नीरव का रव

विविध भेंट मार्फत

01 मई से 30 जून 2023

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट प्रदान की जाती है, जिससे विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहें। इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है-

महत्तम महोत्सव (सौजन्य से प्राप्त)

7,00,000/- श्रीमती विमला जी कमल जी सिपानी, बेंगलुरु

5,00,000/- श्री राजकरण जी बरड़िया, अहमदाबाद

11,000/- श्री सुमन जी अरिहंत जी लुणिया, बेंगलुरु

संघ महाप्रभावक (सौजन्य से प्राप्त)

2,20,000/- श्री भीखमचंद जी ओस्तवाल, कलंगपुर

2,20,000/- श्री कँवरलाल जी देशलहरा, गुण्डरदेही

2,20,000/- श्री निर्मल जी खींवसरा, ब्यावर

2,20,000/- श्री विजयकुमार जी टंच, बदनावर

2,19,000/- श्री मनोरमाबाई जी बैद, रायपुर

1,52,000/- श्री अखेराज जी ओस्तवाल, दुर्ग

संघ प्रभावक सदस्यता

1,00,000/- श्री अरिहंतकुमार जी गुलगुलिया, सिलचर

समता भवन प्रवृत्ति (सौजन्य से प्राप्त)

15,000/- श्री प्रवीणचंद जी मूथा, वापी

समता भवन, रायपुर

11,00,000/- श्री राजेंद्र जी सुराना, रायपुर

3,00,000/- श्री विजयकुमार जी मुथा, रायपुर

समता भवन, राजनांदगाँव

5,00,000/- श्री मांगीलाल जी सुनील जी अनिल जी पारख, राजनांदगाँव

3,00,000/- श्री विमल जी सिपानी, बेंगलुरु

समता भवन, संगरिया

5,00,000/- श्री रिद्धकरण जी सिपानी, बेंगलुरु

समता भवन, मंडी (सवाईमाधोपुर)

2,00,000/- श्री पुखराज जी, अमितकुमार जी, पीयूष जी, निश्चय जी बोथरा परिवार अलाय-अहमदाबाद-गुरुग्राम

संघ सहयोग

2,00,000/- श्री बीरेन्द्र जी गेलड़ा, हावड़ा

साधुमार्गी पब्लिकेशन सहयोग

1,50,000/- श्री विजयकुमार जी मुणोत, खैरताबाद

1,00,000/- श्री विनीत जी सोनावत, हैदराबाद

21,000/- श्री अंकित जी सिपानी, मुंबई

20,000/- श्री हेमराज जी हर्षितकुमार जी बनवट, मूंदी

इदं न मम

1,25,000/- श्री अशोककुमार जी डागा, अहमदाबाद

1,01,000/- श्री बिमलकुमार जी सुशीलादेवी नमन जी लोढ़ा, हावड़ा

1,00,000/- श्री कमलकुमार जी सुप्यारदेवी कोठारी, कोलकाता

1,00,000/- श्री मनोज जी सिपानी, बेंगलुरु

1,00,000/- श्री नेमीचंद जी राजेश जी साँखला, खरियार रोड

55,000/- श्री महेन्द्र जी सोनावत, भीनासर

21,000/- श्री सुरेशचंद जी देवेन्द्र जी बम्बकी, के.आर.पेट

21,000/- श्री विनय जी (विनोद जी) मलारा, जलगाँव

21,000/- श्री सुरेशकुमार जी विक्रम जी सिपानी, हसन

21,000/- श्री चौथमल जी कमलेश जी सिपानी, हसन

21,000/– श्री सुरेन्द्रकुमार जी सिपानी, हावड़ा
21,000/– श्री जय जी कांकरिया, हावड़ा
21,000/– श्री मूलचंद जी अमित जी पटवा, हावड़ा
21,000/– श्री संजयकुमार जी बोथरा, हावड़ा
21,000/– श्री राजेन्द्रकुमार जी पटवा, हावड़ा
21,000/– श्री सुरेशकुमार जी दुगड़, हावड़ा
15,000/– श्री तरुणकुमार जी पटवा, कोलकाता
15,000/– श्री अरुणकुमार जी मनीष जी पटवा, हावड़ा
11,000/– श्री माणिकचंद जी राजू जी मिन्नी, हसन
11,000/– गुप्त दान
11,000/– श्री प्रकाशकुमार जी गुलगुलिया, हावड़ा
11,000/– श्री इन्द्रचंद जी पंकज जी सेठिया, हावड़ा
11,000/– श्री केशरीचंद जी झंवरलाल जी बोथरा, हावड़ा
11,000/– श्री सुभाषचंद जी मुणोत, हावड़ा
11,000/– श्री मगनमल जी संचेती, सिलापथार
11,000/– श्री संजयकुमार जी अजयकुमार जी सेठिया, हावड़ा
11,000/– श्री गौतमचंद जी विशालकुमार जी बोथरा, हावड़ा
11,000/– श्री दिलीपकुमार जी चोरड़िया, हावड़ा
11,000/– श्री अमित जी भूरा, हावड़ा
11,000/– श्री भोजराज जी सेठिया, दिनहट्टा
11,000/– श्री सुंदरलाल जी सुदीपकुमार जी बाँठिया, कोलकाता
11,000/– श्री संपतराज जी गौरव जी दक, बेंगलुरु
10,000/– श्री विजयचंद जी बरड़िया, गंगाशहर
8,000/– श्री सुशीलकुमार जी कांकरिया, सिलचर

5,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– हावड़ा से– श्री राजेशकुमार जी सेठिया, श्री महाबीरकुमार जी धारीवाल, श्री महावीरकुमार जी बैद, श्री सुशीलकुमार जी भूरा, श्री राजीवकुमार जी पटवा, श्री प्रदीपकुमार जी डागा, श्री इन्द्रचंद जी बोथरा, श्री प्रवीणकुमार जी बैद, श्री हनुमानदास जी सिपानी, श्री श्यामकुमार जी बैद, श्री करणसिंह जी डागा, श्री मनोजकुमार जी अरिहंतकुमार जी लुणिया, श्री सुंदरलाल जी सेठिया, श्री पुखराज जी बैद, श्री राहुल जी सांड; **नोखा से–** श्रीमती झमकुदेवी करणीदान जी बोथरा, श्री तेजमल जी कांकरिया, श्री प्रकाश जी कांकरिया, श्री अभिषेक जी कांकरिया, श्री आशीष जी कांकरिया, श्री मनोहरीदेवी जी डागा; श्री तिलोकचंद जी पींचा, धमतरी, श्री बिमलकुमार जी बोथरा, शिबपुर

5000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– श्री रामलाल जी अशोककुमार जी कोठारी, होलेनरसिपुर, श्री मदनलाल जी मनोज जी लुणावत, हसन, श्री मंदाक्षकुमार जी गुलगुलिया, सिलचर, श्री लीलादेवी गुलगुलिया, सिलचर, श्री अरिहंतकुमार जी गुलगुलिया, सिलचर, श्री राजेशकुमार जी गुलगुलिया, सिलचर, श्री महेन्द्रकुमार खटोल, हावड़ा, श्री विमल जी दुगड़, हावड़ा, गुप्तदान, श्री शुभकरण जी डागा, नोखा, श्रीमती बीना जी विनायकिया, हावड़ा
3,300/– श्री मेघराज जी गोलछा, नोखा
3,100/– श्री शिखरचंद जी भूरा, हावड़ा
3,100/– श्री संजयकुमार जी बैद, हावड़ा
3,100/– श्री शिखरचन्द जी हितेश जी हीरावत, हावड़ा
2,500/– श्री ललितकुमार जी आंचलिया, हावड़ा
2,299/– श्री हिम्मतमल जी सांड, डिब्रुगढ़

2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– श्री मदनलाल जी नीरजकुमार जी गन्ना, होलेनरसिपुर, श्री नैनेश जी रजनीकांत जी कामदार, अमलनेर, श्री विजयकुमार जी बरड़िया, हावड़ा, श्री सुरेश जी भूरा, हावड़ा, श्री सुभाषकुमार जी लोढ़ा, हावड़ा, श्री सम्पतलाल जी मनोज जी अशोक जी भंसाली, दिनहट्टा, श्रीमती भीखीदेवी दुगड़, दिनहट्टा
1665/– श्रीमती कमलाबाई पुखराज जी चोपड़ा, सेलम्बा
1500/– श्री पूनमचंद जी छाजेड़, कोकराझाड़

1100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– श्री श्रीपाल जी बोथरा, हवली, श्री विजयराज जी अमितकुमार जी

मुणोत, हावड़ा, श्री गौतम जी गोलछा, हावड़ा, श्रीमती चारवी जी कांकरिया, सिलचर, श्रीमती रुचि जी कांकरिया, सिलचर, श्री पूरणमलजी कांकरिया, हावड़ा, श्री गणेशमल जी मिन्नी, नाजिरहाट, श्री शांतिलाल जी बोथरा, दिनहट्टा, श्री सज्जनराज जी कांकरिया, हावड़ा, श्री प्रकाशचंद जी कातेला, कोकराझाड़, श्री सुंदरलाल जी बरडिया, कोकराझाड़

1000/- श्री प्रतीक जी दुगड़, भीनासर

1000/- श्री सुंदरलाल जी लुणावत, दिनहट्टा

1000/- श्री गुलाबचंद जी लुणावत, दिनहट्टा

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री इन्द्रचंद जी बैद, दिनहट्टा, श्री अभयकुमार जी बैद, दिनहट्टा, श्री मनोजकुमार जी बैद, दिनहट्टा, श्री शांतिलाल जी पुगलिया, दिनहट्टा, श्री जतनलाल जी नवलखा, कोकराझाड़

समता प्रचार संघ

50,000/- श्री शांतिलाल जी सांड, बेंगलुरु

जीवदया

31,000/- श्रीमती किरणबाई बाफना, मानपुर (स्व. श्री मंगलचंद जी बाफना की तृतीय पुण्यतिथि पर)

21,000/- श्री अंकित जी सिपानी, मुंबई

11,000/- श्री सुमितकुमार जी तरुणकुमार जी रक्षितकुमार जी बम्ब, तंजावुर (टोंकवाले) (स्व. श्रीमती कांताकुमारी बम्ब की स्मृति में)

11,000/- श्री केशरीचंद जी डागा परिवार, मुंबई-बीकानेर (स्व. श्रीमती पुष्पादेवी डागा की पावन स्मृति में)

10,000/- श्रीमती विजयलक्ष्मी जी झँवरलाल जी सेठिया, आबू रोड (विवाह के 50 साल पूरे होने के उपलक्ष में)

7,000/- श्री उमेश जी बोथरा, जोधपुर

5,000/- श्री सुधीरकुमार जी देवांश जी लुणावत, नरसिंहपुर

5,000/- गुप्त दान, अहमदाबाद

4,102/- श्री प्रदीपकुमार जी सेठिया, कोलकाता

2,100/- श्री उत्तमचंद जी धनराज जी जैन, आलनपुर (स्व. श्रीमती प्रेम जैन की पुण्य स्मृति में)

1,200/- श्री शांतिलाल जी विक्रम जी गोलछा, बीकानेर

1,200/- श्री कैलाशचंद जी जैन, सवाईमाधोपुर

1,111/- श्री पुनमचंद जी जैन, गुड़ली (स्व. श्री भैरूलाल जी खटवड़ की 25वीं पुण्यतिथि के अवसर पर)

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री राजकुमार जी बच्छावत, गंगाशहर, श्रीमती श्वेताजी हस्तीमलजी बरड़िया, सूरत (स्व. श्री पुनमचंद जी सोनावत की 13वीं पुण्यतिथि पर), श्रीमती श्वेताजी हस्तीमलजी बरड़िया, सूरत (स्व. श्री सुशीलादेवी सोनावत की चौथी पुण्यतिथि पर), श्रीमती श्वेताजी हस्तीमलजी बरड़िया, सूरत (स्व. श्रीमती सुमनकुमारी जी सोनावत की चौथी पुण्यतिथि पर), श्री मनोजकुमार जी मरोठी, सूरत (पुत्र कनक मरोठी सी.ए. के शुभविवाह के उपलक्ष में), श्री दिलीपकुमार जी शैलेन्द्रकुमार जी जैन, कुंडेरावाले, कोटा, श्री दिनेश जी सौरभ जी जैन, जयपुर

1,000/- अजीत जी जैन, नगरी/मंदसौर (पिताजी श्री सुंदरलाल जी झेलावत के 90 वर्ष में प्रवेश करने के उपलक्ष में)

500/- श्री कमलचंद जी शिमला जी बाफना, अजमेर (स्व. रतनलाल जी बाफना की 28वीं पुण्य स्मृति में)

500/- श्री ललित जी संखलेचा, आलोट (माताजी श्रीमती पानकँवर बाई संकलेचा की तृतीय पुण्यतिथि के उपलक्ष में)

श्रमणोपासक भेंट

11,000/- बैद परिवार, रायपुर (श्री इन्द्राबाई जी पूनमचंद जी बैद, रायपुर के स्वर्ण सीढ़ी आरोहण के उपलक्ष में)

5,100/- स्व. श्री मिश्रीमल जी कांकरिया परिवार, नोखा (सुपौत्र रत्न प्राप्ति के सुअवसर पर)

5,100/- डॉ. राहुल जी सहलोत, उदयपुर (अवनी सहलोत के जन्मदिन के उपलक्ष में)

5,100/- श्री त्रिलोकचंद जी रमेशचंद जी महावीरचंद जी गणेशचंद पींचा, नोखा-धमतरी (स्व. श्रीमती सोनीदेवी पींचा की पुण्य स्मृति में)

5,100/- श्री अश्विन जी संजय जी अभय जी कटारिया, हुबली (बेबीबाई जी कटारिया की दीक्षा के उपलक्ष में)

3,000/- श्री कन्हैयालाल जी लक्ष्मीलाल जी महावीर कुमार जी बोरदिया, रायपुर (चित्तौड़गढ़) (हिमांशु संग चारुल के शुभ विवाह के उपलक्ष में)

2,100/- श्री विशनलाल जी गौतमचंद जी कमलेश जी कोटड़िया, धमतरी

2,100/- श्रीमती श्रीयादेवी आसकरण जी सिपानी, मुंबई/उदयरामसर

1,100/- श्री नरेन्द्रकुमार जी जैन, बजरिया (अक्षय के विवाह के उपलक्ष में)

1,000/- श्री अभयकुमार जी बोथरा, हवली

1,000/- श्री कैलाशचंद जी जैन, सवाईमाधोपुर

500/- श्री राजेन्द्र जी जैन, छावनी (कोटा) (सौ.का. मीनाक्षी सुपुत्री स्व. श्री बहादुरमल जी जैन संग चि. शोबित जैन के शुभ विवाह के उपलक्ष में)

साहित्य स्टॉल अनुदान

11,000/- श्री ऋषभकुमार जी भागचंद जी मुगदिया, औरंगाबाद

11,000/- श्री कन्हैयालाल जी बाफना, लखनपुरी

8,100/- श्री अशोककुमार जी, जसकरण जी, राजेन्द्रकुमार जी, कमलचंद जी सुराना, बेंगलुरु

5,100/- श्री भागचंद जी सिंगी, जोधपुर

3,000/- श्री अतुलकुमार जी बाफना, रतलाम

1,000/- श्री विनोद जी देशलहरा, दुर्ग

1,000/- श्री कन्हैयालाल जी दीपककुमार जी कोटड़िया, मुंगेली

समता संस्कार पाठशाला

10,000/- श्रीमती विजयलक्ष्मी जी झंवरलाल जी सेठिया, आबू रोड (विवाह के 50 साल पूरे होने के उपलक्ष में)

501/- श्रीमती मोनालिसा जी जैन, रायपुर

समता जन कल्याण प्रन्यास

10,000/- श्रीमती विजयलक्ष्मी जी झंवरलाल जी सेठिया, आबू रोड (विवाह के 50 साल पूरे होने के उपलक्ष में)

समता सरिता सेवा/विहार सेवा

7,000/- श्री उमेश जी बोथरा, जोधपुर

5,000/- श्री प्रवीणकुमार जी मुर्डिया एवं श्रीमती हेमलता जी कंठालिया (पर्व मुर्डिया के जन्मदिन के उपलक्ष में)

2,500/- श्रीमती अंजलि जी केवलचंद जी बाबेल, ब्यावर

समता मिति योजना

5,100/- श्री अशोककुमार जी डागा, अहमदाबाद (स्व. श्री उदयचंद जी डागा की पुण्यतिथि के उपलक्ष में)

5,100/- डॉ. राहुल जी सहलोत, उदयपुर (अवनी सहलोत के जन्मदिन के उपलक्ष में)

दानपेटी योजना

5,100/- श्रीमती ललितादेवी रामपुरिया, दिल्ली

2,100/- श्रीमती कमलादेवी सामसुखा, छापर

1,100/- श्री संपतलाल जी भंसाली, चौधरीहाट

620/- श्री कमलचंद जी संचेती, सिलापथार

श्री साधुमार्गी जैन संघ, बेंगलुरु

33,000/- श्री माणकचंद जी धूड़मल जी डागा

32,000/- श्री कुमुददेवी श्रद्धा जी सिपानी

7,400/- श्री सिपानी भवन

5,100/- श्री उत्तमकुमार जी सौरभ जी गौरव जी चोरड़िया

1,100/- श्री सुंदरलाल जी नरेशकुमार जी सिपानी

श्री साधुमार्गी जैन संघ, बिलासीपाड़ा

11,000/- श्री मालचंद जी लालानी

5,100/- श्री लक्ष्मी स्टोर

5,100/- श्री नेमचंद जी भंवरलाल जी

5,100/- श्री पंकजकुमार जी मरोठी

3,100/- श्री अजयसिंह जी सुरेन्द्रकुमार जी

2,500/- श्री करनीदान जी

2,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री मनोजकुमार जी चोरड़िया, श्री पवन जी लुणावत, श्री रमेश जी अग्रवाल, श्री धर्मचंद जी अमरचंद जी

2,000/- श्रीमती बसंतीदेवी लुणावत

1,500/- श्री निर्मलकुमार जी चोरड़िया

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– श्री सुरेशकुमार जी चोरड़िया, श्री हनुमानमल जी लुणावत, श्री किशोर जी धारीवाल, श्री विजयकुमार जी मुनोत, श्री राजमल जी मिलापचंद जी, श्री मुकेश जी चोरड़िया, श्री रतनलाल जी सिपानी, श्री बिमलकुमार जी लुणावत, श्री टोलाराम जी धर्मचंद जी, श्री श्यामसुंदर जी चोरड़िया, श्री हुलासमल जी, श्री सिद्धकरण जी, श्री राजू जी भूरा, श्री प्रकाशचंद जी, श्री चम्पालाल जी चोरड़िया

500/– श्री जितेन्द्रकुमार जी लुणावत

500/– श्री पुरुषोत्तम जी पारीक

श्री साधुमार्गी जैन संघ, हवली

3,000/– श्री सुमेरमल जी कमलकुमार जी प्रजापत

2,100/– श्री अभयकुमार जी बोथरा

2,100/– श्री गंगाराम जी दिनेशकुमार जी लुणावत

1,500/– श्री मेघराज जी धर्मचंद जी बैद

1,500/– श्री सुरेशकुमार जी अशोककुमार जी बुरड़

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– श्री श्रीपाल जी बोथरा, श्री विनोद्रकुमार जी बांठिया, श्री वीजेन्द्रकुमार जी बांठिया, श्री मेघराज जी पुखराज जी गोलछा

श्री साधुमार्गी जैन संघ, चेन्नई

2,100/– श्री लालचंद जी कैलाश जी रांका, चेन्नई

2,100/– श्री मांगीलाल जी जितेन्द्र जी छल्लानी, चेन्नई

श्री साधुमार्गी जैन संघ, दिनहट्टा

2,100/– श्री भोजराज जी सेठिया

1,100/– श्री संपतलाल जी मनोजकुमार जी अशोककुमार जी भंसाली

1,100/– श्री शांतिलाल जी बोथरा

1,100/– श्रीमती भीखीदेवी दुगड़

1,000/– श्री शांतिलाल जी राजकुमार जी पुगलिया

1,000/– श्री जेठमल जी लुणावत

1,000/– श्री भंवरलाल जी लुणावत

700/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– श्री इन्द्रचंद जी बैद, श्री अनूपचंद जी बैद परिवार, श्री जयचंदलाल जी बैद, श्री शिखरचंद जी बैद परिवार, श्री पारसमल जी बैद, श्री केवलचंद जी मिन्नी, श्री तोलाराम जी बैद, श्री हुलासमल जी लुणावत

500/– श्री प्रदीपकुमार जी मिन्नी

श्री साधुमार्गी जैन संघ, नोखा

2,100/– श्री अमरचंद जी गोलछा

1,650/– श्री शुभकरण जी डागा

500/– श्री सोहनलाल जी गोलछा, नोखामंडी

श्री साधुमार्गी जैन संघ, सवाईमाधोपुर

1,300/– श्री कैलाशचंद जी जैन

651/– श्री कमलेशकुमार जी जैन

श्री साधुमार्गी जैन संघ, गाजियाबाद

1,100/– श्री अजीतकुमार जी सिपानी, गाजियाबाद

श्री साधुमार्गी जैन संघ, नाजिरहाट

1,000/– श्री गणेशमल जी मिन्नी

500/– श्री पुखराज जी मिन्नी

श्रमणोपासक आजीवन सदस्यता सहयोग

2,100/– श्री सुखवीरचंद जी जितेशकुमार जी कोठारी, बेंगलुरु

2,100/– श्री पारसमल जी मधुकुमार जी ओस्तवाल, राजनांदगाँव

1,000/– श्री विशनलाल जी गौतमचंद जी कमलेश जी कोटड़िया, धमतरी

साहित्य आजीवन सदस्यता सहयोग

2,000/– श्री पारसचंद जी बांठिया, जयपुर

छात्रवृत्ति योजना (महिला समिति)

1,50,000/– समता महिला मण्डल, मुम्बई

10,000/– श्रीमती विजयलक्ष्मी जी झँवरलाल जी सेठिया, आबू रोड (विवाह के 50 साल पूरे होने के उपलक्ष में)

7,000/– श्री उमेश जी बोथरा, जोधपुर

सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति)

50,000/– समता महिला मण्डल, मुम्बई

21,000/– श्री अंकित जी सिपानी, मुंबई

10,000/- श्रीमती विजयलक्ष्मी जी झँवरलाल जी सेठिया, आबू रोड (विवाह के 50 साल पूरे होने के उपलक्ष में)

4,000/- श्री हस्तीमल जी ललित जी कांकरिया, सेलम

2,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- ब्यावर से-

श्रीमती रंजना जी कर्नावट, श्रीमती निर्मलादेवी कोठारी, श्रीमती ललिता जी ढेडिया, श्रीमती रेखा जी ढेडिया, श्रीमती शकुंतला जी लोढ़ा, श्री अनिल जी लोढ़ा, श्री पंकज जी लोढ़ा, श्रीमती चारु जी लोढ़ा, श्री स्वप्निल जी लोढ़ा, श्रीमती जूली जी ओस्तवाल, श्रीमती ज्ञानकँवर जी ओस्तवाल, श्रीमती मोनिका जी हेमंत जी ओस्तवाल, श्रीमती मोनिका जी जय जी ओस्तवाल, श्रीमती रूपल जी ओस्तवाल, श्रीमती मंजू जी पंच

1,500/- श्रीमती अरुणा जी बुरड़, ब्यावर

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- ब्यावर से-

श्रीमती पिस्ताकँवर जी खेतपालिया, श्रीमती इन्द्रकँवर जी खेतपालिया, श्री पारसमल जी खेतपालिया, श्रीमती रिद्धि जी खेतपालिया, श्रीमती सुमन जी कर्णावट, श्रीमती सुशीला जी मुणोत, श्रीमती बीना जी कोठारी, श्रीमती प्रेमकँवर जी ललवानी

1,000/- श्री विकास जी बुरड़, ब्यावर

700/- श्रीमती चंदूदेवी बोहरा, ब्यावर

700/- श्रीमती शांताबाई मूथा, ब्यावर

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- ब्यावर से-

श्री उत्तमचंद जी चौधरी, श्रीमती प्रेमबाई जी चौधरी, श्री मनीष जी चौधरी, श्री सोनू जी चौधरी, श्रीमती ललिता जी चोरड़िया, श्रीमती संतोषदेवी नाहर, श्रीमती सुमनदेवी नाहर, श्रीमती शिखा जी नाहर, श्रीमती मधु जी रांका, श्रीमती स्नेहलता जी श्रीश्रीमाल, श्रीमती मंजू जी बाबेल, श्रीमती इंदिरा जी लुणिया, जेठाणा, श्रीमती कौशल्यादेवी नाहर, जेठाणा

विशेष :

साहित्य आजीवन सदस्यता-11, संघ आजीवन सदस्यता-1, संघ साधारण सदस्यता-5, महिला समिति सदस्यता-13, श्रमणोपासक सदस्यता-16

01 अप्रैल 2023 से 30 जून 2023 तक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में अधोलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन कार्यालय को जमाकर्त्ता के नाम एवं किस मद हेतु राशि जमा की गई इसकी सूचना प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केन्द्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नम्बर 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	*राशि*	*अन्य विवरण*
एस.बी.आई. बैंक		
12.04.23	501/-	UPI विपुल जैन
12.04.23	10,100/-	UPI नेहा जैन
20.04.23	5,000/-	UPI अशोक कुमार बृज
22.04.23	1,101/-	UPI सिंपल जैन
08.05.23	3,500/-	UPI राहुल
12.05.23	501/-	UPI विपुल जैन
22.05.23	1,000/-	UPI विनोद बम्ब
31.05.23	1,100/-	UPI निखिल
02.06.23	5,000/-	UPI आशिता जैन
12.06.23	501/-	UPI विपुल जैन
25.06.23	11,000/-	UPI अविनाश ललवानी
ए.यू. बैंक		
07.06.23	1,000/-	UPI के. सुहानी

उपरोक्त भेंटदाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है। आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें। -जय जिनेन्द्र!

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

सुश्राविका चांदादेवी बोथरा

(धर्मसहायिका स्व. श्री भंवरलाल जी बोथरा)

धर्मनिष्ठ सुश्राविका चांदादेवी बोथरा धर्मसहायिका स्व. श्री भंवरलाल जी बोथरा निवासी गंगाशहर (राज.) प्रवासी गुरुग्राम (गुड़गाँव) का 95 वर्ष की आयु में 27 जून 2023 को देवलोकगमन हो गया।

आपका जीवन अत्यन्त ही सरलता, सादगी एवं आत्मीयता से परिपूर्ण था। आपकी बचपन से ही धर्म के प्रति विशेष श्रद्धा थी। आपने चार आचार्यों के दर्शन, वंदन का लाभ प्राप्त कर अपना जीवन धन्य बनाया। आपके बचपन से ही जमीकंद त्याग, 60 वर्षों से चौविहार एवं 40 वर्षों से सचित्त त्याग के प्रत्याख्यान थे।

आप दशवैकालिकसूत्र, नंदीसूत्र, सुखविपाकसूत्र, नमिपव्वज्जा, वीर स्तुति (पुच्छिंसु णं) का स्वाध्याय करती थी तथा खण्डयोजन का थोकड़ा, गुणस्थान, नक्षत्रों का थोकड़ा, 20 थोकड़े, भक्तामर, कल्याण मंदिर, दस रानियाँ का तप एवं 24 तीर्थंकरों का लेखा आदि का ज्ञान था।

तपस्या के क्षेत्र में अग्रणी रहते हुए आपने 1 से 8 तक की लड़ी, 15 एवं मासखमण की तपस्या, 24 तीर्थंकरों की ओली, गणधरों की ओली, एकान्तर तप, 2 वर्षीतप, उपवास का छोटा पखवाड़ा, 15 आयम्बिल ओली, 3 मासखमण आयम्बिल से, 45 आयम्बिल का 16-17 विरहमान की ओली, 400 आयम्बिल, 250 पच्चक्खाण, सोलिया एकासन का कर्मचूर, 3 खंद, सामायिक का मासखमण, एक वर्ष में 2000 से 2500 सामायिक कर कीर्तिमान स्थापित किया। आप प्रतिदिन एक हजार गाथा का स्वाध्याय करती थीं।

आपको जीवन के अन्तिम छह माह में गुड़गाँव क्षेत्र में विचरण करने वाले लगभग सभी चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन का लाभ मिला। स्थानीय संघ ने अपार स्नेह व आदर प्रदान किया।

हम सम्पूर्ण परिजन आपके चिरस्थायी गुणों की अक्षुण्ण स्मृति को संजोते हुए तीर्थंकर देव से प्रार्थना करते हैं आपको शीघ्र ही सिद्ध-बुद्ध-मुक्त कर चरम लक्ष्य प्रदान करे।

:: श्रद्धावनत् ::

अभयकुमार-स्व. इन्द्रादेवी, स्व. सुरेन्द्रकुमार-विमलादेवी (पुत्र-पुत्रवधू), **पुष्पादेवी-स्व. शुभकरण चोपड़ा, चन्द्रकलादेवी-स्व. गुलाबचन्द सेठिया, उर्मिला-अशोककुमार जी सेठिया, असलेखा-धर्मचंद सोनावत** (पुत्री-दामाद), **मोहित-ममता, गौतम-पल्लवी** (पौत्र-पौत्रवधू), **प्रवीणा-आशीष दुगड़** (पौत्री-दामाद), **नैतिक, अश्रिष्ट** (पड़पौत्र), **तेजस्वी** (पड़पौत्री)

विनम्र श्रद्धांजलि

निम्बाहेड़ा। सुश्रावक नीलेश जी सुपुत्र हस्तीमल जी छाजेड़ का 35 वर्ष की आयु में 18 मई को निधन हो गया। आप संघ समर्पित युवा कार्यकर्ता, स्वाध्यायी एवं धर्मनिष्ठ व्यक्तित्व के धनी थे। ज्ञान-ध्यान सीखने में आपकी विशेष रुचि थी। चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

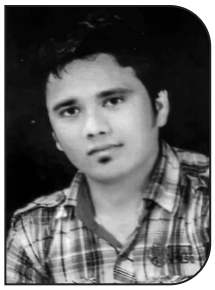

जयपुर। देहदानी सुश्रावक नोरतमलजी चौरड़िया सुपुत्र स्व. श्री पारसमलजी चौरड़िया, ब्यावर निवासी का 8 जून को 86 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आचार्य श्री नानालालजी म.सा. की आप पर विशेष कृपा थी। प्रतिदिन 6 सामायिक, चौदस को उपवास एवं पौषध का लक्ष्य रखते थे। दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन एवं अनेक थोकड़े व स्तुतियाँ आपको कंठस्थ थे। जिनवाणी पर श्रद्धा एवं समर्पणा से परिपूर्ण आपका जीवन सरल व समतामय था। आपने एस.बी.आई. एवं बैंक ऑफ राजस्थान में एम.डी. पद पर सेवाएँ दीं। देश-विदेश की यात्रा करते हुए भी अहिंसा धर्म में अडिग रहे। गत 24 वर्षों से असाध्य बीमारी से ग्रस्त होते हुए भी समभाव में थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

निम्बाहेड़ा। नेत्रदानी सुश्रावक पवनकुमार जी जैन सुपुत्र समुन्दरसिंह जी सिंघवी का 48 वर्ष की आयु में 11 जून को आकस्मिक निधन हो गया। देव, गुरु, धर्म के प्रति आपकी दृढ़ श्रद्धा थी। आप मृदुभाषी, शांत, उदारमना, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। आपकी संसारपक्षीय बुआ जी साध्वी श्री निरंजना श्री जी म.सा. और संसारपक्षीय साली जी साध्वी श्री सुषमा श्री जी म.सा. (कानोड़ वाले) शासन एवं संघ की सेवा कर रही हैं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

रतलाम। नेत्रदानी सुश्राविका सुभद्रादेवी धर्मपत्नी धर्मचंद जी सिसोदिया का 14 जून को 79 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपकी देव, गुरु, धर्म के प्रति विशेष समर्पणा थी। आपने आचार्य श्री नानेश, आचार्य श्री रामेश एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी का दर्शन लाभ लिया। चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं। धर्म, ध्यान, त्याग, तपस्या का भाव रखते हुए आपने कई तपस्याएँ पूर्ण की। आप साध्वी श्री गुलाबकँवर जी म.सा. की संसारपक्षीय भाँजी एवं साध्वी श्री सम्पतकँवर जी म.सा. की संसारपक्षीय भाभीजी थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

गोगेलाव। सुश्राविका कांतादेवी धर्मपत्नी किरणचंद जी कांकरिया गोगेलाव निवासी, इंदौर प्रवासी का 73 वर्ष की आयु में 24 जून को देहावसान हो गया। आप आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति दृढ़ आस्था रखती थीं। आप धर्म-ध्यान, तप-त्याग के भावों से ओत-प्रोत थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

मंदसौर। सुश्राविका सुशीलाबाई धर्मपत्नी श्री पुखराजमल जी बाबेल का 26 जून को 73 वर्ष की आयु में निधन हो गया। देव, गुरु, धर्म के प्रति आपकी प्रगाढ़ आस्था थी। आप प्रतिदिन सामायिक, सत्साहित्य अध्ययन, वंदन आदि धर्म-ध्यान, तप-त्याग करती थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

अलाय। नेत्रदानी सुश्राविका निर्मलादेवी धर्मपत्नी गोलचन्द जी सुराणा का 63 वर्ष की आयु में 26 जून को देहावसान हो गया। हँसमुख, मृदुभाषी, मिलनसार प्रकृति से परिपूर्ण आप नित्य नवकारसी, मौनव्रत, सामायिक, चौविहार, पच्चक्खान, 21 लोगस्स, णमोत्थु णं का ध्यान आदि किया करती थीं। देव, गुरु, धर्म के प्रति अटूट आस्था रखते हुए चारित्रात्माओं एवं सर्वधर्मी सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

सरदारशहर। सुश्रावक विजयसिंह जी सुपुत्र स्व. श्री सूरजमल जी श्यामसुखा का 27 जून को 72 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपका जीवन सादगी एवं धार्मिकता से परिपूर्ण था। आप संघ सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आपने तेला, 7, 8, 9 आदि अनेक तपस्या की। आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति दृढ़ श्रद्धावान थे। आप साध्वी श्री ईहिता श्री जी म.सा. के संसारपक्षीय फूफा जी थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

बीकानेर। सुश्रावक शांतिलाल जी सुपुत्र स्व. श्री भंवरलाल जी सेठिया (बी. सेठिया) का 2 जुलाई को देहावसान हो गया। आप मृदुभाषी, मिलनसारिता एवं आत्मीयता से परिपूर्ण थे। प्रतिदिन माला, सामायिक व स्वाध्याय आदि में आपकी विशेष रुचि थी। प्रतिवर्ष गुरुदर्शन का भाव रखते हुए चारित्रात्माओं की सेवा एवं दर्शन लाभ में सदैव ही अग्रणी रहते थे। आप संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सहित अन्य अनेक संस्थाओं में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

उदयपुर। संथारा साधक सुश्रावक मोतीलाल जी वया का 13 जुलाई को 13 दिवसीय संथारे सहित महाप्रयाण हो गया। आप लम्बे समय से अस्वस्थ थे। आपको 01 जुलाई को तिविहार संथारे का पच्चक्खाण करवाया गया तथा 3 जुलाई को साध्वी श्री गुणसुन्दरी श्री जी म.सा. ने चौविहार संथारे के प्रत्याख्यान करवाये। जय गुरु नाना पार लगाना, जय गुरु राम पार लगाना के अन्तर भावों के साथ आप संथारा साधना में लीन रहे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं। श्रमणोपासक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

चिंतन की कड़ियाँ

मनुष्य जीवन में कभी किसी से वैर हो जाता है। व्यक्ति किसी का विरोध कर देता है। कभी अज्ञान के कारण तो कभी अहंकार की वजह से ये स्थितियाँ पैदा हो जाती हैं। इनसे हमारा मन छिन्न-भिन्न हो जाता है। समाज और परिवार बिगड़ते हुए नजर आते हैं। वैर और विरोध से हानि बहुत है, जबकि लाभ कुछ नहीं। इससे केवल हमारा अहंकार तुष्ट हो सकता है, हमारे अज्ञान को मुस्कुराने का मौका मिल सकता है।

(झीलों पर सूर्योदय)

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

केसरिया कार्यशाला

केसरिया कार्यशाला

स्त्रियों की 64 कलाएँ

महिला समिति की ये छत्रछाया।
कलाओं की मिलकर कर रहे कार्यशाला।।
हर क्षेत्र, हर मंडल में हो रहा कार्य आला।
धर्म, ध्यान, ज्ञान के रंग को केसरिया कर डाला।।

हर माह संपन्न हो रही केसरिया कार्यशाला में श्री आदिनाथ भगवान द्वारा सिखाई गई स्त्रियों के लिए 64 कलाओं की शिक्षा का हम सब लाभ उठा रहे हैं। हर माह 8 कलाओं को संक्षिप्त में समझकर कुछ कलाओं पर मनमोहक गतिविधियाँ करवाई जाती हैं। निम्नोक्त कलाएं गत 3 माह में हृदयंगम की गई।

33. तत्काल बुद्धि-प्रत्युत्पन्नमति, 34. वास्तु सिद्धि, 35. वैधक क्रिया, 36. सरिश्रम, 37. अंजन योग, 38. चूर्ण योग, 39. कुंभ भ्रम, 40. काम विक्रिया, 41. हस्त लाघव , 42. शाली खंडन, 43. भोज्य विधि कला, 44. रंधन कला, 45. मुखमण्डन कला, 46. केश ग्रंथन कला, 47. पुष्प ग्रंथन कला, 48. वाणिज्य विधि कला।

33. **तत्काल बुद्धि-प्रत्युत्पन्नमति :** भगवान ने स्त्रियों को सिंहनी समान बनाने के लिए सभी प्रकार की परिस्थितियों से जूझना सिखाया है। Sharp mind and witty - हर परिस्थिति में पूर्णतया तैयार रहना सिखाया है। Presence of mind is must.
गतिविधि – जैन सिद्धांत बत्तीसी पर आधारित प्रश्नों का Rapid fire सेशन करवाया गया।

34. **वास्तु सिद्धि :** भूमि, दिशाओं और ऊर्जा के सिद्धान्तों पर आधारित वास्तुशास्त्र का ज्ञान किसी भी निर्माण या शिल्प में होने वाले शुभ-अशुभ का ज्ञान है। पंचतत्त्वों (पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, आकाश) को संतुलित रखकर घर में सकारात्मकता रहे, ऊर्जा का संचार रहे, घर में सुख-समृद्धि रहे, इसलिए यह शिक्षा प्रदान की गई।

35. **वैधक क्रिया :** भगवान ने छोटी-छोटी तकलीफों और मानसिक पीड़ाओ को घर में ही दुरुस्त करने के नुस्खे सिखलाए हैं। माँ का वात्सल्य एवं मृदु स्पर्श तो संतान के लिए सर्वांगसुख है ही, माँ की रसोई भी अनेक बीमारियों का इलाज कर देती है। सर्दी, खांसी में हल्दी, अदरक, काली मिर्च, पेट दर्द में अजवाइन आदि का उपयोग ऐसे ही कुछ नुस्खे हैं। यह तो झलक मात्र है, दादी-नानी के नुस्खों का तो पूरा खजाना है।

36. **सरिश्रम :** साधारण बोलचाल की भाषा में हम श्रम का अर्थ किसी भी कार्य के लिए किए गए प्रयत्नों से लगाते हैं। अर्थशास्त्र में श्रम का मतलब शारीरिक एवं मानसिक मानवीय प्रयत्नों से हैं। स्त्रियाँ आज गृहकार्य एवं जीविकोपार्जन दोनों में अपना श्रम लगा रही हैं।

37. **अंजन योग :** भगवान ने स्त्रियों को काजल बनाने की कला भी सिखाई ताकि वे नेत्रों को स्वस्थ-सुन्दर रख सकें। अंजन का एक अर्थ स्याही बनाना भी होता है। भगवान ने लेखन कला के साथ ही स्याही बनाना भी सिखलाया है।

    गतिविधि – स्याही-अंजन (गृहकार्य) अवश्य बनाएँ और इस स्याही से एक पत्र स्वयं को लिखें।

38. **चूर्ण योग :** योग का अर्थ मिलाना और चूर्ण का अर्थ है- ठोस पदार्थों के सूक्ष्म कण। चूर्ण अनेक पदार्थों का हो सकता है। जैसे- हल्दी, नमक आदि। अनेक पदार्थों का मिश्रण भी होता। अनेक प्रकार के मसाले, जड़ी-बूटियाँ, पेड़ों की छाल आदि का चूर्ण औषधि के रूप में प्रयोग होता है। पृथ्वीकाय के चूर्ण से घर रंगने, लीपने आदि के पदार्थ प्राप्त होते हैं।

39. **कुंभ भ्रम :** कुंभ यानी घड़ा, भ्रम यानी संदेह। इस विषय पर ज्यादा जानकारी प्राप्त नहीं हुई। लगता है बहुमूल्य सामग्री को छिपाने के लिए घड़ों आदि में रखकर भ्रम उत्पन्न किया जाता होगा या अपनी सुरक्षा के लिए यह भी संभव है कि स्त्रियों को स्वयं कुंभ का आकार लेना सिखलाया हो।

40. **काम विक्रिया :** 15वें कुलकर नाभि राजा के पुत्र राजकुमार ऋषभ अवधिज्ञानी थे। अपने सांसारिक जीवन में शादी विवाह की संरचना को सुंदर पीढ़ी विस्तार के लिए सिखाया और फिर दीक्षित हो गये।

41. **हस्त लाघव :** सिलाई बुनाई हो या चित्रकला, शिल्पकला और पाककला आदि, भगवान ने महिलाओं को इन सभी हस्तकलाओं में निपुण बनाया। हाथों की चपलता से स्त्रियों को हर वह कला सिखलाई जिससे वे अपने सांसारिक सभी कर्त्तव्यों को बखूबी निभा सकें।

    गतिविधि – आँखों से देखी, कानों से सुनी, हृदय में बुद्धि से धारण की, अब उसे हाथ की चतुराई से महत्तम महोत्सव के 9 प्रकल्पों को समझाना था।

42. **शाली खंडन :** शाली का अर्थ हेमन्त ऋतु में उगने वाला एक प्रकार का धान है। उसे साफ कर उसमें से ग्रहण योग्य अन्न प्राप्त करना एवं वनस्पति खंडों से पुन: नवीन वनस्पति का निर्माण यानी खेती करना सिखाया।

43. **भोज्य विधि कला :** प्राप्त वनस्पतियों आदि से विभिन्न प्रकार की भोज्य सामग्री का निर्माण करना एवं मौसम के अनुरूप ग्रहण करने की विधि बतलाई। गर्मी में चिरायता, छाछ आदि व सर्दी में गुड़, घी आदि का प्रयोग। ऋतु के अनुसार खान-पान का महत्त्व सिखाया।

44. **रंधन कला :** कल्पवृक्षों के लुप्त होने पर भगवान ने अन्न उत्पादन यानी कृषि सिखाई। भोली

जनता उस अन्न को ऐसे ही ग्रहण करने लगी, उससे पेट दर्द आदि अस्वस्थताएँ बढ़ने लगी। तब भगवान ने अग्नि प्रज्वलित करना और अनाज को पकाकर खाना सिखाया। अन्न को रांधने की कला। जैसे- बाजरे का दलिया, गेहूँ का खीचड़ा, राबड़ी आदि।

45. **मुखमण्डन कला :** भाँति-भाँति के शृंगार सिखाने का उद्देश्य स्त्रियों को आत्मनिर्भरता एवं आत्मसम्मान के साथ जीवनयापन सिखाना रहा होगा। लेकिन आज इस क्षणभंगुर सौंदर्य के पीछे प्राकृतिक संसाधनों को छोड़कर सौंदर्य प्रसाधनों के नाम पर जीवों की हिंसा के प्रसंग भी बन रहे हैं।
46. **केश ग्रंथन कला :** केश काले, घने, सुकोमल, चमकीले बने रहें इसके लिए अनेक प्रकार के तेलों का प्रयोग एवं लंबे बालों को विभिन्न प्रकार से बाँधने यानी चोटी, जुड़ा आदि का ज्ञान कराया।
47. **पुष्प ग्रंथन कला :** फूलों से विभिन्न प्रकार की मालाएँ, गजरे, मुकुट, आभूषण आदि बनाने की कला सिखाई, जो कालांतर में जीविकोपार्जन का एक माध्यम बनी।
48. **वाणिज्य विधि कला :** स्त्री जितनी सुकोमल है उतनी ही प्रज्ञावान भी है। भगवान ने स्त्रियों को गृहस्थी संवारने की कला तो सिखाई ही साथ ही व्यापार, वाणिज्य आदि में भी दक्ष बनाया, जिससे मुश्किल समय में वे अपने परिवार के भरण-पोषण में भी सक्षम रहें।

गतिविधि – उपरोक्त 8 कलाओं की Puzzle के माध्यम से रोचक गतिविधियाँ करवाई गई।

भगवान की दूरदर्शिता का हम बारम्बार धन्यवाद ज्ञापन करें तो भी कम है। उस काल में ब्राह्मी जी व सुंदरी जी को कला, विज्ञान और वाणिज्य का प्रखर पंडित बनाया। तभी तो उनके माध्यम से आज हम तक यह विशाल ज्ञान का एक अंश मात्र पहुँच पाया है।

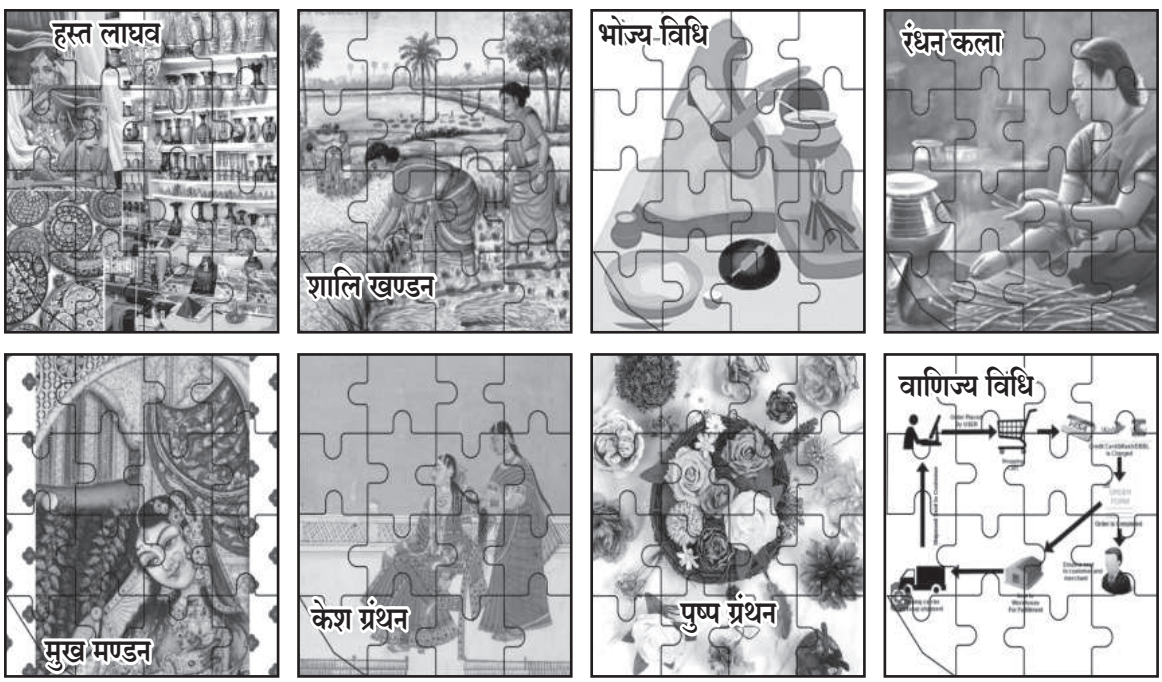

मोटिवेशनल फोरम

नौ तत्त्वों का ज्ञान

जीवन में जो लेकर आते हैं आध्यात्मिक बसंत।
ऐसे होते हैं हमारे संत भगवन्त।।
इनके पावन चरणों में, करें दूर आत्म-अज्ञान।
आओ मिलकर जानें, जैन धर्म का विज्ञान।
पाकर नौ तत्त्वों का ज्ञान।।

जैन सिद्धांत बत्तीसी के 32वें बोल सद्भाव पदार्थ नौ के अनुसार प्रथम चार तत्त्व- जीव, अजीव, पुण्य व पाप पर आधारित गतिविधि संपूर्ण देश में सफलतापूर्वक करवाई गई। इस हेतु सभी स्थानीय व अंचल संयोजिकाओं को धन्यवाद।

अपील – भ्रूणहत्या त्याग संकल्प-पत्र भरने के अभियान में फॉर्म भरकर अपना सक्रिय सहयोग दें।

आगामी गतिविधि – अगस्त माह में शेष 5 तत्त्व- आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध व मोक्ष पर गतिविधि होनी संभावित है।

युवती शक्ति

मैं ही युवती, मैं ही शक्ति,
हर हाल में जीत जाऊँगी।
एक इशारा कर दो गुरुवर,
हर हाल मैं पूरा कर जाऊँगी।
विजयी नहीं आत्मविजयी बनूँगी,
संघ का अभिमान बन जाऊँगी।।

गुरुवर हैं साथ मेरे तो क्यों रुक जाऊँगी,
रास्तों पर दौड़ ना पाई तो चलकर जाऊँगी।
रास्ते ना हुए तो खुद की राह बनाऊँगी,
रामराज के शासन में, मैं तिर जाऊँगी।।

राम गुरुवर के रूप में तीर्थंकरों के दर्श कर जाऊँगी
राम गुरु ही तो है रिषभ-महावीर से
(राम = रा- रिषभ, म- महावीर)
मैं ही युवती, मैं ही शक्ति,
हर हाल में जीत जाऊँगी।।

रिपोर्टिंग सिस्टम

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति के अंतर्गत रिपोर्टिंग सिस्टम अपने कार्यों का अवलोकन में सभी प्रवृत्ति की संयोजिकाओं की फरवरी-मार्च-अप्रैल-मई 2023 की रिपोर्ट जून 2023 में प्राप्त हुई। इस रिपोर्ट में सभी प्रवृत्तियों की कुल 164 स्थानीय संयोजिकाओं, 28 अंचल संयोजिकाओं, 5 राष्ट्रीय संयोजिकाओं ने अपने 4 माह के कार्यों की रिपोर्ट भेजी।

मार्च-अप्रैल-मई-जून माह

क्र.सं.	संयोजिका	प्रवृत्तियाँ					
		केसरिया कार्यशाला	संगठन	परिवारांजलि	युवती शक्ति	साधुमार्गी मोटिवेशनल फोरम	कुल
1	राष्ट्रीय संयोजिका	1	1	1	1	1	5
2	अंचल संयोजिका	6	3	5	8	6	28
3	स्थानीय संयोजिका	25	2	25	55	57	164
योग							197

सामाजिक कार्य

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति का ध्येय रहा है कि धार्मिक क्रियाओं से आत्मिक उत्थान और सामाजिक क्रियाओं से सामाजिक उत्थान करा पाए।

जुलाई–अगस्त–सितम्बर : सावन की झड़ी, अहिंसा, दया, तप–त्याग की लड़ी! आइए, जीवदया में लग जाएँ। अनेकानेक विविध तरीकों जैसे– कत्लखानों से पशुओं को मुक्त करवाना, गौशाला में गायों को चारा, रोटी आदि खिलाना, पक्षियों को दाना–पानी देना आदि जीवदया के कार्य किए जा सकते हैं। हाँ! आइए, जुड़ जाइए '**जीवदयाणं**' से!

सभी स्थानीय मंडलों से निवेदन है कि जो भी सामाजिक कार्य किए जा रहे हैं, उनकी रिपोर्ट अवश्य भेजें।

प्रवास : पूर्वोत्तर अंचल

गुरुदेव की असीम अनुकंपा से दिनांक 15 जून से 21 जून 2023 को पूर्वोत्तर अंचल का प्रवास सम्पन्न हुआ जो कि श्री संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारीगण, महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा, महामंत्री एवं कोषाध्यक्षा के सान्निध्य में अंचल के उपाध्यक्षा–मंत्री के नेतृत्व में किया गया।

गुवाहाटी : दिनांक 15 जून शाम को गुवाहाटी में महिला मंडल के साथ परिचय एवं चर्चा के साथ प्रवास की मंगलमय शुरुआत की गई।

उदारबन : दिनांक 16 जून को बराक घाटी के उदारबन क्षेत्र गए। श्रीमती कुंती जी भूरा ने आजीवन धोवन पानी के प्रत्याख्यान शासन दीपक श्री संजय मुनि जी म.सा. से लिए थे जिसे वे आज तक निर्बाध रूप से पालन कर रहे हैं। कम घर, साथ में चारित्रात्माओं का सान्निध्य भी नहीं, लेकिन ग्रहण किये गये व्रतों के प्रति निष्ठा ऐसी गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा वहाँ मिली।

परिवारांजलि के स्टीकर्स, महिला समिति के सभी प्रवृत्तियों एवं महत्तम महोत्सव के बारे में जानकारी दी गई।

सिलचर : उदारबन से कछार कैंसर हॉस्पिटल गए, वहाँ पद्म श्री अवार्ड से सम्मानित डॉ. रवि कनन के भावों को सुना। सिलचर संघ एवं महिला मंडल द्वारा हेल्प डेस्क लगाया हुआ है। प्रत्येक सप्ताह 2 यूनिट ब्लड कैंसर हॉस्पिटल में सिलचर संघ द्वारा दिया जाता है।

शाम को 7:30 बजे जैन भवन में मीटिंग रखी गई। महिलाओं के द्वारा मंगलाचरण स्वागत किया गया। युवतियों द्वारा तिलक करके श्री संघ व महिला समिति की सारी प्रवृत्तियों एवं महत्तम महोत्सव की जानकारी दी गई।

लालाबाजार : 17 जून को पूज्य आचार्य भगवन् की कर्म भूमि लालाबाजार में प्रवेश करते ही मन राममय हो गया। भवन में मीटिंग रखी गई जहाँ 100 की उपस्थित रही। सभी प्रवृत्तियों की संयोजिकाएँ बनाई गईं। बच्चों की पाठशाला चालू करवाई एवं महत्तम महोत्सव की जानकारी दी।

पथारकांदी : वीर परिवार (स्व. श्री पुनमचंद जी उत्तमचंद जी बोथरा परिवार), जिनके परिवार से 6 दीक्षाएँ हो गई हैं, से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

करीमगंज : शाम को 6:30 बजे मीटिंग हुई जिसमे धर्मनगर संघ भी उपस्थित था। दोनों क्षेत्रों में सारी प्रवृत्तियाँ सुचारू रूप से चल रही हैं।

युवा संघ के अंचल उपाध्यक्ष विकास जी भूरा ने मंच का संचालन किया। वहाँ नन्ही–नन्ही बेटियों ने बहुत ही सुंदर मंगलाचरण किया जिसे सुनकर सभी भाव विभोर हो गए। दोनों संघ पूरी श्रद्धा से सारे आयाम व प्रवृत्तियों को सुचारू रूप से चलाते हैं। मीटिंग के बाद 23वाँ वर्षीतप साधिका श्रीमती ज्ञानीबाई भूरा से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ एवं उनके तप की अनुमोदना करके मंगलपाठ सुना।

बदरपुर : रात 10:45 बजे हम सब बदरपुर

दफ्तरी निवास में पहुँचे, वहाँ के रिप्रेजेंटिव पूजा जी दफ्तरी से सारी जानकारी ली और परिवारांजलि व अन्य सभी प्रवृत्तियों की करवाने की प्रभावना की।

गुवाहाटी : 18 जून पूर्वोत्तर अंचल के स्तम्भ गुवाहाटी शहर में क्षेत्रीय सम्मेलन रखा गया। सुबह 11:00 बजे मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। सभा में तेजपुर, विश्वनाथचाराली, ढेकीयजुली, नोगाँव, टंगला, मोरिगाँव, सिलचर, करीमगंज, सिलापथार, धुबड़ी सभी क्षेत्रों की उपस्थिति रही। पाठशाला टीचर्स के द्वारा बहुत सुंदर झाँकियाँ बनाई गई। पाठशाला बच्चों के द्वारा बहुत ही सुंदर स्वागत गीतिका गायी गई। सभा में असम के राज्यपाल श्री गुलाबचंद जी कटारिया की गौरवमयी उपस्थिति रही। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में जैन धर्म की एकता के बारे बताया और अपने नाम के साथ जैन शब्द लगाने की प्रेरणा दी जिससे हमारी एकता मजबूत होगी।

द्वितीय चरण में महिलाओं के साथ मीटिंग रखी गई जिसमें बहुओं के साथ अच्छी उपस्थिति थी। सभी प्रवृत्तियों के बारे में बताया तथा युवा पीढ़ी हमारा उज्ज्वल भविष्य है इसलिए नई बहुओं को जोड़ने का अथक प्रयास किया गया। महिला समिति के अध्यक्षा ने प्रति रविवार मंडल लगाकर बहुओं को भी जोड़ने की प्रभावना की। सभी प्रवृत्तियाँ सुचारू रूप से चल रही हैं।

सायं 5:00 बजे राज्यपाल भवन पहुँचें। राज्यपाल महोदय के साथ समसामयिक विषयों पर चर्चा हुई। श्रीमती उर्मिलादेवी सिपानी ने महिला मंडल को 1,00,000/- रुपये, श्रीमती सरला जी बोथरा ने 31,000/- रुपये की राशि प्रदान करने की घोषणा की गई।

हवली-बरपेटा : 19 जून को श्री संघ एवं महिला मंडल के अध्यक्ष-मंत्री का चयन किया गया। पाठशाला पुन: चालू करवाई गई। केसरिया कार्यशाला संयोजिका बनायी गई एवं सभी प्रवृत्तियों को सुचारू रूप से चलाने की प्रेरणा दी गई। श्रीमती मोहनीदेवी लालानी ने महिला मंडल को 11,000/- रुपये सर्वधर्मी, 21,000/- रुपये छात्रवृत्ति की राशि प्रदान की।

बिलासीपाड़ा : धुबड़ी, गोलकगंज मंगलाचरण, स्वागत के पश्चात् महत्तम महोत्सव व महिला समिति की सारी प्रवृत्तियों के बारे में बताया गया व नए अध्यक्ष-मंत्री का चयन किया गया।

कोकराझाड़ : इस क्षेत्र के सबसे बड़े संयुक्त परिवार (श्री धर्मचंद जी जेठमल जी बाँठिया परिवार) से मिलने का अवसर मिला। सारी प्रवृत्तियों को बताते हुए पाठशाला, समता शाखा चालू करवाई एवं नई बहू का स्वागत किया गया।

बंगाईगाँव : 20 जून 2023 को बंगाईगाँव में सामूहिक मीटिंग रखी गई। महत्तम महोत्सव के बारे बताया गया। श्रीमती अरुणा जी श्यामसुखा ने 11,000/- रुपये छात्रवृत्ति के लिए देने की घोषणा की।

ग्वालपाड़ा : नया क्षेत्र, 32वाँ वर्षीतप साधिका श्रीमती सायरदेवी भूरा से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ। नए मंडल का गठन हुआ। सारी प्रवृत्तियों एवं महत्तम महोत्सव की जानकारी दी गई।

सिलापथार : 21 जून को शासन दीपक श्री संजय मुनि जी म.सा., सरल स्वाभावी श्री हृषिकेश मुनि जी म.सा. की कर्म भूमि सिलापथार में वीर परिवार से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ। समता भवन का निमार्ण कार्य प्रगति पर है। अनिता जी संचेती का छठा वर्षीतप गतिशील है।

पूर्वोत्तर अंचल में कार्य का विवरण : 33 क्षेत्रों में संगठन का कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है। 23 महिला मंडल, 11 रिप्रजेंटेटिव क्षेत्र हैं। 5 क्षेत्र और हैं जिनको जोड़ना है।

शासन दीपक श्री संजय मुनि जी म.सा. एवं शासन दीपिका श्री आदर्शप्रभा श्री जी म.सा., श्री सरिष्मा श्री जी म.सा. के चातुर्मास विचरण से जो जन जागृति लेकर आये उसको पूरे प्रवास के दौरान महसूस किया गया, अभी तक लोग सभी नियमों का निर्बाध रूप से पालन कर रहे हैं।

सभी अंचलवासियों के मन मे देव, गुरु, धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा बढ़ी है। ऐसे ही चारित्रात्माओं का सान्निध्य हमें मिलता रहे तो पूर्वोत्तर अंचल आगे बढ़ता रहेगा। श्रमणोपासक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

उत्क्रांति विवाह और कार्यक्रम

हुक्मसंघ के नवम् नक्षत्र, सिरीवाल प्रतिबोधक परम् पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों, फिजूलखर्ची, दिखावे और बढ़ती आर्थिक विषमता के उन्मूलन हेतु उद्घोषित उत्क्रान्ति की आभा सर्वत्र फैल रही है। अनेक परिवार, संघ और ग्राम आचार्य भगवन् के इंगित इशारों को शिरोधार्य करते हुए उत्क्रांति नियमों से अपने जीवन को सजा रहे हैं। समाज जन पूर्ण मनोयोग से इन नियमों को ग्रहण कर इनकी पालना कर रहे हैं। ऐसे अनेक परिवार हैं जिन्होंने अपने यहाँ हो रहे मांगलिक कार्यक्रम उत्क्रान्ति नियमों से सुसम्पन्न कर स्वयं व संघ का गौरव बढ़ाया है। ये परिवार निश्चय ही साधुवाद के पात्र हैं। माह जून 2023 में सम्पन्न कार्यक्रमों का विवरण इस प्रकार है–

1. हैदराबाद निवासी अशोक जी अरिहंतकुमार जी बैद की सुपुत्री खुशबू का मंगल परिणयोत्सव शैलेन्द्रकुमार जी श्रौफ के सुपुत्र सागर से 5 जून को सम्पन्न हुआ।
2. नोखा निवासी विजयकुमार जी हीरावत का नूतन गृह–प्रवेश कार्यक्रम 21 जून को सम्पन्न हुआ।
3. राजनांदगाँव निवासी प्रकाशचंद जी भंसाली के सुपुत्र प्रांजल (सौरभ) का मंगल परिणयोत्सव नरेशचंद जी चौपड़ा की सुपुत्री आकांक्षा से 23 जून को सम्पन्न हुआ।
4. देशनोक निवासी चम्पालाल जी आंचलिया की सुपुत्री रेखा का मंगल परिणयोत्सव शांतिलाल जी बुच्चा के सुपुत्र मुकेश से 23 जून को सम्पन्न हुआ।
5. नोखा निवासी मूलचंद जी गोलछा का नूतन गृह–प्रवेश कार्यक्रम 27 जून को सम्पन्न हुआ।

आपके क्षेत्र में भी यदि कोई आयोजन उत्क्रांति के अनुसार सम्पन्न होता है तो उसकी जानकारी हमें अवश्य भेजें। यह जानकारी साधुमार्गी संघ की सभी पत्रिकाओं में प्रकाशित की जाएगी। उत्क्रांति से संबंधित किसी भी प्रकार की शंका यदि आपके मन में हो तो नि:संकोच आप अपने सवाल हमें भेज सकते हैं। हम आपके सवालों का जल्द ही समाधान करने के प्रयास करेंगे।

–राष्ट्रीय संयोजक, उत्क्रांति – श्री अ.भा.सा जैन समता युवा संघ

हावड़ा। अमृतम् जल प्रकल्प के अंतर्गत 15 जुलाई 2023 को समता युवा संघ द्वारा पांसकुड़ा, मेदिनीपुर में स्थित श्याम सुंदर पटना हाई स्कूल में परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. की जयघोष के साथ वाटर कूलर का उद्घाटन किया गया।

–पवन डागा

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

रविवारीय समता आराधना – आंचलिक रिपोर्ट (जून माह)

क्रमांक	अंचल का नाम	आंचलिक गतिविधि	04–06	11–06	18–06	25–06
1	मेवाड़	आंचलिक उपस्थिति	1971	1352	1279	1479
		आंचलिक क्षेत्र	93	96	93	94
2	बीकानेर–मारवाड़	आंचलिक उपस्थिति	730	757	610	679
		आंचलिक क्षेत्र	44	44	44	45
3	जयपुर–ब्यावर	आंचलिक उपस्थिति	277	309	325	566
		आंचलिक क्षेत्र	22	23	24	22
4	मालवा	आंचलिक उपस्थिति	1016	974	1051	1250
		आंचलिक क्षेत्र	71	72	74	78
5	छत्तीसगढ़–उड़ीसा	आंचलिक उपस्थिति	1878	1914	1861	1648
		आंचलिक क्षेत्र	164	159	157	157
6	कर्नाटक–तेलंगाना–आंध्रप्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	365	387	503	479
		आंचलिक क्षेत्र	28	28	30	29
7	तमिलनाडु	आंचलिक उपस्थिति	233	251	259	244
		आंचलिक क्षेत्र	14	14	14	14
8	मुंबई–गुजरात–यू.ए.ई	आंचलिक उपस्थिति	410	433	521	602
		आंचलिक क्षेत्र	27	27	24	29
9	महाराष्ट्र–विदर्भ–खानदेश	आंचलिक उपस्थिति	427	426	518	417
		आंचलिक क्षेत्र	48	47	50	49
10	बंगाल–बिहार–नेपाल–भूटान–झारखण्ड–आंशिक उड़ीसा	आंचलिक उपस्थिति	283	225	321	221
		आंचलिक क्षेत्र	31	30	32	29
11	पूर्वोत्तर	आंचलिक उपस्थिति	205	189	149	193
		आंचलिक क्षेत्र	21	21	21	20
12	दिल्ली–पंजाब–हरियाणा–यू.पी.	आंचलिक उपस्थिति	82	69	63	66
		आंचलिक क्षेत्र	7	7	7	7
13	अंतरराष्ट्रीय शाखा	आंचलिक उपस्थिति	14	15	11	12
		आंचलिक क्षेत्र	7	6	5	6
	संयुक्त रिपोर्ट					
	कुल उपस्थिति		7891	7301	7471	7856
	कुल क्षेत्र		577	574	575	579

समता शाखा में सर्वाधिक उपस्थिति दर्ज करवाने वाले संघों की सूची (मासिक)

क्रमांक	संघ का नाम	उपस्थिति	क्रमांक	संघ का नाम	उपस्थिति
1.	बड़ीसादड़ी (उत्क्रांति ग्राम)	1147	6.	जगदलपुर	470
2.	रायपुर	685	7.	नोखामण्डी	470
3.	रतलाम	685	8.	बेंगलुरु	458
4.	सूरत	683	9.	उदयपुर	443
5.	दुर्ग	476	10.	जावरा (उत्क्रांति ग्राम)	443

।।जय गुरु नाना।।
DEVOTE FOR SANGH
।।जय महावीर।।
राम चमकते भानु समाना
।।जय गुरु राम।।
राष्ट्र संघ कार्य स्वरूप
सत्र 22-24
पर्युषण के रंग-ज्ञान ध्यान के संग
पर्वाधिराज पर्युषण के आठ दिवस धर्म आराधना करते हुए अपने ज्ञान को उत्कृष्ट बनाएं।
दिनांक
14 अगस्त से 21अगस्त 2023
समयावधि
20 मिनट
प्रथम सात दिन अलग-अलग विषय पर परीक्षा होगी। प्रवचन के तुरंत बाद परीक्षा आयोजित की जाएगी।
40 मिनट
अंतिम दिन की परीक्षा प्रथम सात दिनों के विषयों पर आधारित होगी। प्रवचन के तुरंत बाद परीक्षा आयोजित की जाएगी।
विस्तृत जानकारी जल्द शेयर की जाएगी।
महत्तम महोत्सव - मेरा महोत्सव
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ
(अन्तर्गत - श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)

|| Jai Guru Nana ||

|| Jai Mahaveer ||

|| Jai Guru Ram ||

राम चमकते भानु समाना

SADHUMARGI PROFESSIONAL FORUM

(Antargat Shri Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh)

Invites

all its **Professional Members** for

E^2

ENRICHMENT*ENLIGHTENMENT

a two day

Residential Program on

Personality Development

@NEEMUCH

on

August 5 2023 & August 6 2023

FOR MORE DETAILS

CONTACT - 9422314905 & 7823070748

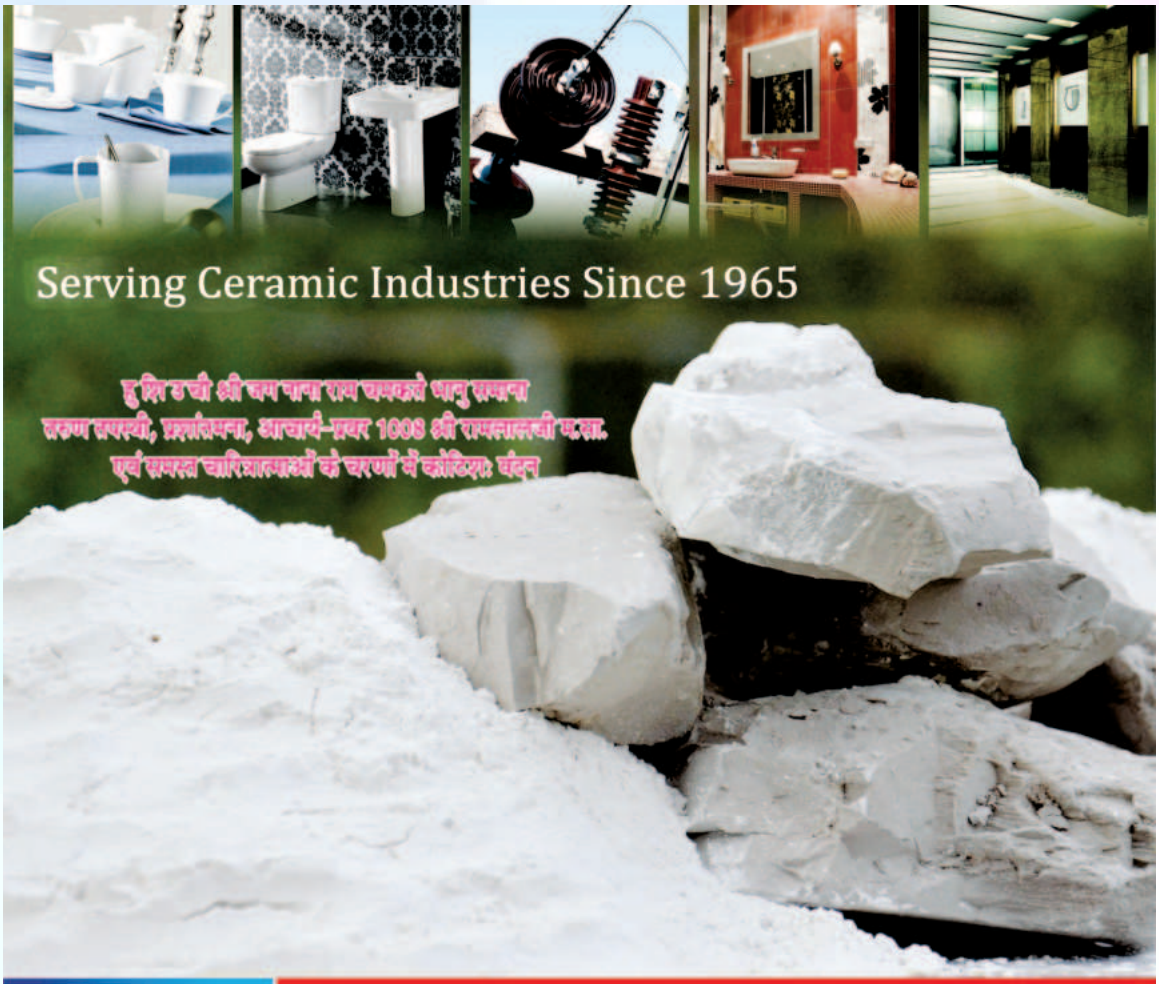

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

सामाजिक जिम्मेदारी 'सिपानी' की पहचान

बेंगलोर जैसी महानगरी में वरिष्ठ नागरिकों एवं लाचार व्यक्तियों को सिपानी सदन में नि:शुल्क भोजन, वस्त्र एवं चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवायी जा रही है। यह सौभाग्य है कि 10 वर्ष पूर्व शुरू की गई इस सेवा योजना का लाभ 100 व्यक्तियों से प्रारम्भ होकर आज 10 वर्षों की पूर्णता तक यह संख्या बढ़कर 400 हो गई है।

इस सेवा कार्य में इन नागरिकों को पूर्णत: सज्जित एम्बुलेंस, डॉक्टर एवं नर्सिंग देखभाल की सुविधा चौबीसों घण्टे उपलब्ध करवायी जा रही है।

सेवा के नये आयाम प्रस्तुत करते हुए सिपानी फाउंडेशन ने वहाँ पर 60 कर्मचारियों की नियुक्ति भी की है जो इन सब सुविधाओं के आधार स्तम्भ हैं।

आर के सिपानी फाउंडेशन

439 18वाँ मेइन, 6वाँ ब्लॉक, कोरमंगला, बेंगलूर – 560 095

संपर्क सूत्र : संतोष 9964105057, 9243667700, सिपानी कार्यालय । ई–मेल : sipanigrand@gmail.com

।। जय गुरु नाना ।।

।। जय महावीर ।।

राम चमकते भानु समाना

।। जय गुरु राम ।।

राष्ट्र संघ कार्य स्वरूप

सत्र 22-24

Samta Youth National Camp

@ Neemuch

Empower U

Journey Towards Holistic Growth

Save The Date

09-10 September 2023

Age Group : 18-45 Years

संयोजक : समता युवा संघ, नीमच

Get ready for an incredible journey towards self-discovery and personal growth. Join us for two days of life-enriching sessions to expand your horizons and advance your overall development.

आयोजक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

(अंतर्गत - श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)

www.facebook.com/HOSadhumargi @absjainsangh

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25100

प्रेषक :श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261